ललनविनोदकी भूमिका ॥

सर्व सभ्यसज्जन महाशयोंकी सेवामें सविनय सूचित किया जाताहै कि यह यक ललनसागरका दशवां चश्मा जोकि अपनी तरंगौंकी लहिर बहिरसे प्रवाह धाराकी शोभायक शोभाकी उपमासे उपमेय बनकर क्षीर घृत मधुरस मिश्रित सुधासागरका प्रभाव लज्जित करताहै इसका ललनविनोद नामहै अर्थ इसका प्यारा आनन्द इसपुस्तकमें काव्यरूपी चश्मेकी सींचसे अमित सुर तरुवत् छन्दों में प्रख्यातिक दुहाई देनेवाला दोहा कल्पतरुका वृन्द विराजमानहै जिसमें कि शब्दरूपी छोटे छटावत् और बड़े विशाल पल्लव, संधिरूपी शाखा, अलंकाररूपी पुष्प, इष्ट उपासनारूपी सौरभसे सुगंधित और अर्थरूपी फबनीय फल प्रफुल्लित हैं ऐसे रमणीय चश्मेके मधुर शीतल सुगंधनीय स्वादिक स्पष्ट निर्मल जलसे सेयेहुये कल्पवृक्षके फलोंका प्राप्तहोना भी महा दुर्लभ होताहै सो इन फलोंके रँगीले रसीले स्वादको ज्ञानरूपी दृष्टी से निरख और बुद्धिरूपी रसनासे चाखकर तृप्त हूजियेगा इस प्रबोधनीय ललनविनोदकी कैसी अलबेली प्रणालीहै कि इसमें ब्राह्मण वंशसे लेकर चारों वर्णोंकी जाति भांतयवली सटीक अन्वय प्रसंगयुत वर्णित हैं यह अपूर्व प्रकरणकी अनोखी कविता मुंशी नवलकिशोर साहब (सी, आई, ई) के परमप्रिय पुत्र धर्म्म पारायण कुल तारायण मुंशी प्रयागनारायण साहब प्रतिष्ठित रईस लखनऊ मालिक मतबे अवध अखबारके निवेदन करदियाहै उन्हींकी सहायता संयुक्त नवलकिशोर प्रेस में छपकर प्रकाश कियाजाताहै कदापि इस पुस्तक में कोई छापे में छपजाने से या किसीतरहकी कोई अशुद्धता होगई होय तो मुझे अल्पज्ञ ललन जानकर आप कृपाकर सुधार लीजियेगा ॥ यथा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० नहिं कविकुल जायो सुकवि, नहिं कछु कविता ज्ञान।
नवल काव्य कछु ललनमति, नहिं कोविद बुधिवान॥
लंपट ललन लवारिया, पति प्रपंच अघमूल।
तौ अचरज कह जानिये, भूल रचहुँ कछु भूल॥
ज्ञात अज्ञता कर न डर, अज्ञ अज्ञतहि शंक।
ज्ञाता गुणबत शठन गुण, त्यहिपै ललन अबंक॥

(अर्थ सीधा)

बंक शशिहुते राहुभय, कोउ न सीध अदरात।
निर्गुणियन की कौनदर, कह बुधि ललन बिसात॥
पै निज ललन निहार मुहिं, लखि मम विनय अनूठ।
कृपाकरिय जन चूकपै, कवि कोविद रिपु झूंठ॥

छन्दगीत॥

सुन घोर भिनती मोरि खोरि न ओरि निरख बिचारिये।
पितु सुवन सुचलन काज होत सहाय तुमहुँ सुधारिये॥
पुनि खोंट खरो खराब भल जैसोहूं तैसो दैहिये।
सुठि समुझ सेवक सदाको लखि ललन नेह निबाहिये॥
अथ सुजन संथा क्षेम दृढ़सम प्रेम प्रीति जहानपै।
कवि कोविदादिक सभ्य सज्जन प्रथा दया समानपै॥
गुणवान चातुर चिकित्सा यहि चीन्हबो चित चातुरी।
अवलोकि गुण निर्गुणिहुपै स्यहबासदेत बहादुरी॥
जग जौन साक्षर धन्य वे धनि कोख जननी कुल पिता।
तिन्ह जन्म जग धनि धन्य बुधि यशु जोहि भवजन हर्षिता॥

आपका पं० ललनपिया शर्म्मा सारस्वत
अष्टवंश भारद्धाजी फर्रुखाबादी.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

समर्पण ॥

प्रियवर

कविता कुशलाधिपति ॥

चौपाई ॥

श्री धर्म्मध्वज दयानिधाना । गुणि गुण ग्राहक पर्म्म सुजाना ॥
प्रियवर मुंशी प्रागनरायण । सुयश मूर्त्ति प्रभु प्रेमपरायण ॥
लखनापुरी पुनीत अनूपा । चहुँदिशि ख्यात देशपुर भूपा ॥
तासु प्रतिष्ठित धनी धुरंधर । लंदन तलक विदित यश भूपर ॥
जेठि भेंट पति भेंट अनोखी । प्रभु यशपुरित सरस अति चोखी ॥
जानि अनन्य भक्त हरिकेरो । शील स्वभाव सविधि शुभ हेरो ॥
हरि यश हरिभक्तहि भल देना । सुजन चतुर त्यहि रुचि फल लेना ॥
यह कविता कृति रचित द्विजललन । सहित विनोद करत तुव अर्पन ॥
प्रेमप्रीतिवत युत सतकारा । करिये यहि को अंगीकारा ॥

दो० भृगुमुनि जायक वंशवर भार्गव कुल अवतंश ।
प्रागनरायण प्रियललन युग युग जिय तुव वंश ॥
सरस नवेली नजर यह प्रभुपद रतिदा जोइ ।
क्षेम कुशल कल्याण यश ललनप्रदा नित होइ ॥
द्विज अशीशवत दक्षिणा दातव दाता हाथ ।
चतुर चितैबो कह ललन चतुरइ चतुरै साथ ॥

वही आपका

पं० ललनपिया फ़र्रुखाबादी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ललनविनोदका नेमनिरूपण ॥

इस पुस्तककी कविता कीहुई दोहोंका यह नेम रक्खागयाहै कि प्रथम तो दोहा लिखाहै फिर उसी दोहेका पदच्छेद (यानी अन्वय) मुद्रितकर जिस आशयपर दोहा बांधा गयाहै उस प्रसंगको दिखलाय उसके बाद तब उसका टीका (अर्थ) इसभांति सरल सुगम रीतिसे कियागयाहै कि प्रति दोहेके अन्वय और प्रति दोहेके अर्थोंपर अंक चिह्नितकरदियेहैं कि जिसमें सर्वसाधारण भी पढ़कर अर्थकाभाव समझकर अपने कमलरूपी हृदयको रुचिकमानी मनमाना आनन्द पहुँचायकर प्रसन्नहोसक्ते हैं इसीहेतु इसपुस्तकको सटीक छापागयाहै क्योंकि बिना टीकाकिये छपनेसे इसकी कविताका रस हरएक महाशयको नहीं प्राप्तहोसक्ताथा आशाहै कि इस अपूर्व अलबेली रीतिवाली कविताको समस्त ज्ञाता सुजन महाशय निश्चयकर मानदेकर माननीय करैंगे और चतुरोंका अवलोकन करनाही इस कविताकी सुघराईको प्रकाशवान्‌कर प्रकाश करैगा ॥ यथा ॥

दो० चतुरनहींसे मिलतहै चारु चातुरी चित्त ।
गुणविद्या यश ललनचहि करुसतसंगति नित्त ॥ १ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ॐ नमः श्रीश्यामा श्यामायनमः ॐ ॥

ललनविनोदका मंगलाचरण ॥

श्रीगणेश वन्दना ॥

दृष्टिकूट ॥

दो० ॥ १ ॥ प्रणमहिं सनद कुमार शिव, ललन मोद दातार ।
सनक सनन्दन मोह जग, वृद्धै बुधि सुखसार ॥

अन्वय ॥ १ ॥

११ १ ६ ५ २ ३ ४
प्रणमहिं सनद कुमार शिव, ललन मोद दातार ।
१६ १५ १२ १३ १४ १० ९ ८ ७
सन कस नन्दन मोह जग, वृद्धै बुधि सुख सार ॥

प्रसंग ॥ १ ॥

वेदाङ्गि जग बरताव ॥

समस्त देवताओं में अग्रणीय सिद्धिसदन गजवदन उमा महेश दुलारे सुखद अपारे जिनको कि अजर अमर मुनी माहात्मा व पूजनीय संसार में सर्व्व साधारण लोगभी प्रति मंगल कार्य्य के आदि में पूजतेहैं उन गणेशजीकी प्रभुता वर्णन करते हैं ॥ यथा ॥

टीका ॥ १ ॥ यह वाक्य सत्य है[१] (कि जौन जीव) सन्तान[२] व[३] सुःख[४] देनेवाले[५] महादेवजीके[६] पुत्र (गणेशजी महाराज जिनके आराधन से) उत्तम[७] आनंद[८] व ज्ञानकी[९] वृद्धी[१०] उत्पन्न होती है (तिनको) नमस्कार[११] व पूजन करते हैं सो पुत्रादि[१२] ममतारूपी[१३] संसारमें[१४] कैसे[१५] फँससक्ते[१६] हैं ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रथम प्रथा प्रस्थापन ॥

अथ जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १॥ नाइन ॥ २ ॥ बारी॥३॥ जाजक॥ ४ ॥ भांड़ ॥ ५॥माली॥

दो० ॥ २ ॥ नाइन बारी जचु ललन, जाजक मनि हैं नाहिं।
भांड़नु भट्ठु जनि मुख लगहु, हैं को मालन माहिं॥

अन्वय ॥ २ ॥

४ २ ३ ५ १ ६ ७ ८ ९
ना इन बारी जचु ललन, जा जक मनि हैं नाहिं।
१० ११ १३ १२ १४ १५ १६ १७
भांड़नु भट्ठु जनि मुख लगहु, हैं को मालन माहिं॥

प्रसंग ॥ २ ॥

एक समय श्रीकृष्ण महाराज किसी एक चतुर दूतीके संग में विहरतेहुये यमुना किनारे जायरहेथे कि मार्ग में दश पांच सखियों का एक वृन्द खड़ाहुआ देख कुछ उनसे ठठोली करबैठे तो व्रजनागरी भी महाराज की मसखरीका उत्तर देकर हँसी करने लगीं उनके वचनों को सुनकर श्याम सँगातिन जौन सखीथी सो गोपाललालजी से यह वचन बोलतीभई कि ॥

हरिप्रति सखि वचनम् ॥

टीका ॥ २ ॥ (हे) प्यारे[1] इन[2] (सखियोंको) भोलीभाली[3] मत[4] जानना[5] यह[6] हार[7] माननेवाली[8] नहीं हैं[9] (यानी यह तुमसे हारनेकीनहीं आप इनसे एक कहोगे तो यह एककी सौ सुनावेंगी कादेसे कि यह) भाँड़ोंकी[10] स्त्री हैं[11] (आप इनके) मुंह[12] मती[13] लगैं[14] (आपके सामने यह) कौन[15] मालों[16] में हैं[17] ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जात्यनुमान संख्या ॥ ६ ॥

॥ १ ॥ तँबोली ॥ २ ॥ बिसांतन व बिसांती ॥ ३ ॥ सुनार ॥ ४ ॥ लोहार ॥ ५ ॥ काछी ॥ ६ ॥ किसान ॥

दो० ॥ ३ ॥ यह तँबोल कसतैं ललनि, लिये बिसातनु बोल।
बुधि सुनारि लोहार गइ, काछि किसानवडोल ॥

अन्वय ॥ ३ ॥

२ ४ ३ १ ६ ५ ७ ८
यह तँबोल कस तैं ललनि, लिये बिसा तनु बोल।
१३ ९ १० ११ १४ १५ १२ १६ १७ १८ १९
बुधि सु नारि लो हार गइ, का छि किसा नव डोल॥

प्रसंग ॥ ३ ॥

एक समय श्री राधिका जी महारानी ने एक अपनी चतुर चातुरी से किसी बाड़ी से पान मोल मँगाये सो वह सखी कहीं कुछ जल्दी करके खराब पान उठायलाई तौ प्रिया जी महारानी उसकी मूर्खता को देख यह पूंछती भईं कि ॥

सखि प्रति प्रिया वचनम् ॥

१ २ ३ ४ ५ ६
टीका ॥ ३ ॥ (अरी) नादान यह पान तू कैसे मोल लैआई
७ ८ ९ १० ११ १२ १३
जरा बतलाउतो ॥ (हे) सुन्दर बाला अरी क्या (तेरी) मती
१४ १५ १६
हिराय गई है (यानी क्या तेरी अकिल जातीरही है) राम राम
१७ १८ १९
(यह तेरी बुद्धीका) कैसा नया चलन होरहा है ॥ इति ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ भाट ॥ २ ॥ सिकलीगर ॥ ३ ॥ रंगरेज ॥ ४ ॥ पसारी ॥

दो० ॥ ४ ॥ भाटनु ते भल ललनि रँग, रेज ऊदते चंग।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भा पसारि सिकलीगरा, धौं त्रिय मंजन रंग ॥

अन्वय ॥ ४ ॥

२ ३ ४ १ ६ ७ ५ ८ ९
भाटनु ते भल ललनि रँग, रेज ऊद ते चंग।
११ १२ १० १३ १४ १५
भा पसारि सिकलीगरा, धौं त्रियमंजन रंग ॥

प्रसंग ॥ ४ ॥

किसी समय श्री राधिका जी महारानी ने अपने होंठोंपर मिस्सी लगाई उसकी शोभा देखकर एक सखी आश्चर्यित है महारानी जी से यह शंका करती भई कि ॥

प्रिया प्रति सखि वचनम् ॥

१ २ ३
टीका ॥ ४ ॥ (हे) प्यारी (तेरे जो होंठोंपर) बैंगनों से सु-
४ ५ ६ ७ ८ ९
न्दर व ऊदे रंगकी जाति से उत्तम ॥ (शोभा है याकि किसी)
१० ११ १२ १३ १४
साननिकालनेवाले ने सिकिल करदई है अथवा (यह) मिस्सी
१५
की छटा (घटा सी छा रही है) ॥ इति ॥

जात्यनु मान संख्या ॥ ६ ॥

॥ १ ॥ कुरमी ॥ २ ॥ कंचनी (वेश्या) ॥ ३ ॥ कहार ॥ ४ ॥ कलवार ॥ ५ ॥ बनिया ॥ ६ ॥ क्षत्री (ठाकुर) ॥

दो० ॥ ५ ॥ कुरमी कंचनि नँदललन, कहांरहे कलवार।
बनिय क्षत्रपति ठाकुरी, क्यों बुरियत बेकार ॥

अन्वय ॥ ५ ॥

६ ८ ७ १ ४ ५ २ ३
कुरमी कंचनि नँदललन, कहां रहे कल वार।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

९ १० ११ १३ १४ १२
वनिय क्षत्रपति ठाकुरी, क्यों बुरियत बेकार॥

प्रसंग॥ ५॥

एकसमय श्रीकृष्ण भगवान् प्रातःसमय कहींसे चले आवतेथे कि एककोई कुलटा मसखरिनबाला देखकर गोपालजीसे यह वचन बोलतीभई कि॥

हरिप्रति सखिवचनम्॥

१ २ ३
टीका॥ ५॥ (हे) नन्दनन्दन कल्लकी बिरियांसे (अबलौं)
४ ५ ६ ७ ८
किसजगह निवासकिया (और) कौनसी रंगीन स्त्रीसे बिलास किया (प्यारे यह रीतितो तुम्हारी कुल मर्यादासे बाहरहै काहेसे
९ १० ११ १२ १३
कि अपनी) बनीहुई राजाईकी प्रतिष्ठाको वृथाकेवास्ते काहेको
१४
बिगारे डालतेहौ॥ इति॥

जात्यनुमान संख्या॥ ५॥

१॥ कुम्हार॥ २॥ रैदास (चमार)॥ ३॥ माली॥ ४ भुरजी॥ ५॥ तेली॥

दो०॥ ६॥ तनकुम्हार गृहआ ललन, करैदासि अरदास।
बनमाली दुख भूरजी, तेली जै हर त्रास॥

अन्वय॥ ६॥

५ ६ ७ ८ १ ४ २ ३
तनकु म्हार गृह आ ललन, करै दासि अरदास।
९ १२ ११ १० १३ १५ १४
बनमाली दुख भूर जी, ते लीजैहर त्रास॥

प्रसंग॥ ६॥

कोई एक वियोगिनि नारि जोकि श्रीकृष्ण भगवान्से मिलने

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

की अत्यन्त अभिलाषा रखतीथी सो एकदिन वह महाराजसे यह प्रार्थना करतीभई कि ॥

हरिप्रति सखि वचनम् ॥

टीका ॥ ६ ॥ (हे) प्यारे[१] (तुम्हारी) सेवकिनी[२] (यह) प्रार्थना[३] करतीहै[४] (कि) जरा[५] मेरे[६] घरभी[७] पधारिये[८] (यानी आइये और हे) कृष्णचन्द[९] (मेरेजो) हृदयके[१०] महान्[११] क्लेशहैं[१२] तिनकी[१३] पीड़ा[१४] दूरकर[१५] दीजिये ॥ (क्योंकि किसीको बहुत तरसाउना अच्छीबात नहीं है) ॥ इति ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ मलेक्ष ॥ २ ॥ बढ़ई ॥ ३ ॥ छीपी ॥ ४ ॥ पासी ॥ ५ अहीर ॥

दो० ॥ ७ ॥ मरमलक्ष विधिलय थकी, बड़हि छिपी गतितोर ।
भइचुपासि नहिलक्षहुअ, हीर ललन छलछोर ॥

अन्वय ॥ ७ ॥

मर्म[७] लक्ष[५] विधि[६] लय[८] थकी[९], बड़हि[३] छिपी[४] गति[२] तोर[१] ।
भइचुपासि नहिं लक्षहुअ, हीर ललन[१०] छलछोर ॥

प्रसंग ॥ ७ ॥

किसीसमय एकसखी श्रीकृष्ण महाराजसे यह वचन निवेदन करतीभई कि हे मायाधारी भगवान् ॥

हरिप्रति सखिवचनम् ॥

टीका ॥ ७ ॥ आपकी[१] माया[२] बहुतही[३] गुप्तहै[४] (मैं) लाखों[५] यत्नोंसे[६]

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

७ ८ ९ १० ११ १२
खोज लगाय हारी॥ (परन्तुहे) प्यारे (तुम्हारे) कपटोंका सार पारा-
१३ १४ १५ १६ १७
वार न पाउनेसे चुपाय रही हूं (यानी तअज्जुबमें होरहीहूं) इति॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ धानुकाः (धानुक) ॥ २ ॥ कबड़िया ॥ ३ ॥ गाडुरी
४ ॥ सूंपक ॥

दो० ८॥ छल प्रधानु काबाड़िया यशु, गाडुर बाहन बीर।
बदनामी सूंपकरहे, तहुं न ललन कछु पीर॥

अन्वय ॥ ८ ॥

३ ४ ५ ६ ७ १ २
छल प्रधानु का बड़िया यशु, गाडुर बाहन बीर।
८ ९ १० १२ १५ ११ १३ १४
बदनामी सूं पकरहे, तहुं न ललन कछु पीर॥

प्रसंग ॥ ८ ॥

हरि दर्शनाभिलाषिनि सखियां जिनको कि महाराज मिलने का वचन देकर और फिर नहीं मिलेथे एक दिन अचानक प्रभुसे भेंट होनेपर वह सुन्दरी गोपालजी महाराज से इसप्रकार उरहना देतीभई कि॥

हरिप्रति सखिवचनम्॥

१ २ ३
टीका ॥ ८ ॥ (हे) गडुरपर सवार होनवाले बली (तुमजो) क-
४ ५ ६ ७
पटों के मुखिया (बनेफिरतेहो इसमें) कौनसी बड़ीभारी कीर्त्तिहै॥
८ ९ १० ११ १२
(हम तो यह देखैं हैं कि) अपकीर्त्ति से भररहेहो (हे) प्यारे तिसपर
१३ १४ १५
भी (तुम्हें) ज़रा लिहाज नहीं (मालूमहोताहै) इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ न्हान जाति (शूद्र) ॥ २ ॥ धोवन ॥ ३ ॥ बिरिया ॥ ४ ॥ मनिहार ॥ ५ ॥ चिकवा ॥

दो०॥ ६ ॥ न्हान धुवन यह बिरिय करु, मनहारै न शृँगार ।
चिक चिक बावरि करिय जनि, मिलउँ ललन यहिबार ॥

अन्वय ॥ ६ ॥

१० ११ ८ ९ ५ ७ ६ १२
न्हान धुवन यह बिरिय करु, मन हारै न शृँगार ।
२ १ ४ ३ १६ १३ १४ १५
चिकचिक बावरि करिय जनि, मिलउँ ललन यहि बार ॥

प्रसंग ॥ ६ ॥

कोई एक सखी जोकि नारायण के बियोग माती अत्यंत अकुलाती मरीजाती दिखलाती थी उसकी अधीरता को देख मन में बीरता धारण कर उसकी मित्र सहेली उसकी हिम्मत बँधाय कर यह कहती भई कि हे बीर तू इतनी काहे को घबड़ाती और रुदन मचाती है ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

१ २ ३ ४
टीका ॥ ६ ॥ (अरी) पागल (तू कुछ) हल्लागुल्ल न मचाउ
५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
(और) हिम्मत को मत हारदेय इस समय न्हायधोय कर शृंगार
१३ १४ १५ १६
कर (मैं तेरे) प्यारेको (अभी) इसी घड़ी मिलाये देतीहूं ॥ इति॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

१ ॥ पटवा ॥ २ ॥ भील ॥ ३ ॥ ढपाली ॥ ४ ॥ डोम ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० ॥ १०॥ पटबावरि जनि खोल थिरु,ललनौ भीलहे घातु।
है ढपालि लाडो मुकँद, लखि न तजै बिनु नातु॥

अन्वय ॥ १० ॥

पट[२] बावरि[१] जनि[४] खोल[३] थिरु,[५] ललनौ[६] भी लहे[८] घातु[७]।
है[११] ढपालि[९] लाडो[१०] मुकँद,[१२] लखि[१५] न[१६] तजै[१३] बिनु[१४] नातु॥

प्रसंग ॥ १० ॥

एकदूती किसी एक सुरूपवती सलोनी सुकुमारि अबला जिससे कि श्रीकृष्ण महाराज का प्रेम प्रीति करने को दांउ घात लगरही थी उसे चितावा देतीभई कि॥

सखिप्रति सखिवचनम्॥

टीका॥ १० ॥ (अरी) बेहोश[१] (तू) दरवाजा[२] अथवा किवाड़ उघाड़[३] कर[४] न[५] बैठाकर (क्योंकि) नन्दकुंवर[६] भी (तेरे मिलने को) दांउ[७] लगाय[८] रहा है (और) लाड़िली[९] (वह) गोपाललाल[१०] बहुतै[११] ढोंग रचनेवाला है (कहीं वह तुझे) देखलेगा[१२] (तौ) बिना[१३] प्रीति[१४] कियेहुये नहीं[१५] मानैगा[१६] (छोड़ैगा)॥ इति॥

जात्यनुमान संख्या॥ ४॥

१॥ मोची॥ २॥ भिस्ती॥ ३ पथरचटा (संगतराश) ४ लकढिहारे॥

दो०॥ ११॥ मोची कंचुकि भीस्तनी, पथरचटा जगदीठ।
ललन प्रिया राजी रहल, कढिहारै न अढीठ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्वय ॥ ११ ॥

मोची[५] कंचुकि[४] भिइस्तनी[३], पथरचटा[८] जग[६] दीठ[७] ।
ललन[२] प्रिया[१] राजी रहल, कढिहारै न अदीठ[९] ॥

प्रसंग ॥ ११ ॥

एकसखी जोकि मदनमें भरी हुई उन्नत उरोजवती महा स-लोनी सुरूपवती सुकुमारी कंचुकी बिहीन व्रज कुंजनमें बिहरती हुई यमुना किनारे जलभरने के वास्ते पनघट पर चली जाती थी कि उसकी मिलापिनि किसी दूसरी सखी उसे देखकर उससे यह बचन बोलती भई कि ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

टीका ॥ ११ ॥ (अरी) प्यारी[१] नादान[२] (तूने अपनी) कुचों[३] से अंगिया[४] भी[५] उतारडाली (तू नहीं जानती है कि) संसारी[६] लोगों की[७] नजर पत्थरको[८] फोर डालती है (हे) भोरी[९] (इसकारण मैं तुझे शिक्षा देती हूं कि तू सदा) खुशी रहु होशियार होकर के मत चूकाकर (खुलासा यानी अंगिया पहिरे रहाकर नहीं तो किसी रसिया रूप लोभी की दृष्टि पड़ने से तुझे नजर होजायगी तौ अच्छा न होगा) ॥ इति ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

१ ॥ जोयशी ॥ २ ॥ सथिये ॥ ३ ॥ स्याने ॥ ४ ॥ जोहरी ॥

दो० ॥ १२ ॥ जोयशीन सथिये न तिन्ह,स्याने सँग सन्मानु ।
धन्य ललन वै जोहरी, पदरतिमाते जानु ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्वय ॥ १२ ॥

१ २ ३ ६ ५ ४ ७ ८ ९
जो यशी न सथिये न तिन्ह, स्याने सँग सन्मानु।
१० १२ ११ १४ १५ १६ १७ १८ १३
धन्य ललन वै जो हरी,पदरति माते जानु॥

प्रसंग ॥ १२ ॥

किसी एक सखी को कोई एक सुशीला नारि यह उपदेश देती भई कि अरी बीर इस संसार में सुकर्म्म करनाही बड़ाई और भलाई का मूलहै इससे हे प्रिया जो इस अनित्य शरीर से कुछ सुयश कमाईकी चाहना करती हो तौ ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

१ २ ३
टीका ॥ १२ ॥ जौन जीव कीर्त्तिमान् नहीं हैं यानी खोटे व कु-
४ ५ ६ ७ ८
कर्मीहैं तिनका नहीं संगकरनाचाहिये (और)चतुरोंकी संगतिको
९
आदर देनाचाहिये (यानीगुणवानोंका सतसंग करना चाहिये
१० ११ १२ १३ १४ १५
काहेसे कि)॥ स्याबश उन प्यारौंको समझनाचाहिये जोकि कृष्ण
१६ १७ १८
भगवान्की चरण भक्ति में अलमस्त हो रहे हैं ॥ इति ॥

जात्यनुमानसंख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ ठठेरे ॥ २ गंधी ॥ ३ ॥ बढ़ई ॥ ४ ॥ कसेरे ॥ ५ ॥ कोरी ॥

दो० ॥ १३ ॥ तन ठठेर बिरहा कियो, गइ गंधी सुखकेर।
बढ़इ बिथा चक सेरही कोरी बिधि निरवेर ॥

अन्वय ॥ १३ ॥

२ ३ १ ४ ८ ७ ५ ६
तन ठठेर बिरहा कियो, गइ गंधी सुखकेर।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

१० ९ ११ १२ १४ १३ १५ १६
बढ़इ बिथा चक सेरही को री बिधि निरवेर॥

प्रसंग॥ १३॥

कोई एक सुन्दरी जोकि श्रीकृष्ण भगवान्‌के बिरह बियोग में महा व्याकुल खानापीना त्यागेहुये मनमलीन अपने घर में पड़ी रहतीथी एक दिन कहीं एकदूती आईतो उसका हाल बेहाल देखकर तरस खायकर उससे यह कहतीभई कि अरी बीर यह तेरी कौन दशाहोरही है तब वह अपनी व्यवस्था उसको सुनावती भई कि मैं क्याकहूं मेरा तो॥

टीका॥ १३॥ (श्रीकृष्ण महाराजके) [१]वियोग ने [२]शरीर (सुखायकर) [३]सैंठा [४]करदिया है (और) [५]आनन्द [६]की [७]बासना [८]जातीरही है॥ (हरएक तरहके) [९]क्लेशकी [१०]बृद्धिहोरही है (सोमैं) [११]भौचकित हुई (उनक्लेशोंको) [१२]भोगरहीहूं [१३]अरीसखि (इसदुखसेमेरा) [१४]कौन [१५]तरह से [१६]निस्तार व छुटकारा होयगा॥ इति॥

जात्यनुमानसंख्या॥ ४॥

॥ १ ॥ धोबिन ॥२॥ दरजी॥ ३॥ पनसारी॥ ४॥ परचूंनी॥

दो॰ ॥१४॥ धोबिन नँदके ललन सुख, बैठी दरजी खोय॥
तिहुं पनसारी दाह दुख, परचूंनीकन होय॥

अन्वय॥ १४॥

२ १ ३ ७ ५ ४ ६
धोबिन नँदके ललन सुख, बैठी दर जी खोय।
८ ९ १२ ११ १० १३ १४ १५ १६ १७
तिहुं पन सारी दाह दुख, पर चूं नीक न होय॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रसंग ॥ १४ ॥

एक सुन्दरी जौन रसिक शिरोमणि व्रज बनितन के जीवन धन श्रीकृष्णचन्द्र महाराजहैं तिनके विरह वियोग माती अपनी परम सनेहिनि सखीसे अपने दुखकी व्यवस्था सुनावती है कि हे सखि मैं तो ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

टीका ॥ १४ ॥ श्यामसुन्दरके[1] बिदून[2] आनन्द[3] (रूपी) मन की[4] पद्धति[5] को मिटाये[6] व बहायेहुये[7] बैठरहीहूं (और) तीनों[8] अवस्था[9] (बाल युवा वृद्धा मुझे) क्लेशरूपी[10] व्यथा[11] भोगते[12] होचुकी हैं परन्तु[13] (क्याकहूं) कुछ[14] मुहँ से कहना अच्छा[15] नहीं[16] समझती[17] हूं (कभी तो ईश्वर सुखकी घड़ी दिखलावैगा) ॥ इति ॥

जात्यनुमानसंख्या ४ ॥

॥ १ ॥ जड़िये ॥ २ ॥ जिलाकारिये ॥ ३ ॥ नकासीगर ॥ ४ ॥ मीनाकारिये ॥

दो० ॥ १५ ॥ जड़िये मम नँद ललन सों, जिलाकारिया मीत।
जिय नकासु इमु बिनय हो, मीनाकारि प्रतीत ॥

अन्वय ॥ १५ ॥

जड़िये[5] मम[3] नँदललन[4] सों, जिलाकारिया[2] मीत[1]।
जिय नकासु इमु बिनय हो, मीनाकारि प्रतीत ॥

प्रसंग ॥ १५ ॥

किसी एक अलबेली रूपनवेली बनिता की बहिनेली सहेली जोकि श्रीकृष्णभगवान्‌की सेवामें तत्पर रहतीथी और अत्यंत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रवीनभी थी सो उसको शीलवान् समुझकर गोपालसे मिलने की अभिलाषको प्रकटकर उससे सविनय यह प्रार्थना करतीभई कि॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

टीका॥ १५॥ (अरी) मिलापिन¹ हरबातकी चमत्कारी² करनेवाली मेरीभी³ श्यामसुन्दरसे⁴ सिपारिशकरदे⁵॥ (परंतु मेरीतरफ से उनके) जी⁶ में ऐसी⁷ मिनती⁸ चिह्नितकर⁹ (कि जिसमें यह) मालूम पड़े (मानों) मीनाकारी करदी है (यानी उनको मेरी लगन झूठी न मालूम होय)॥ इति॥

जात्यनुमान संख्या॥ ६॥

१॥ कलार॥ २॥ रफूगर॥ ३॥ बिड़िया॥ ४॥ मांझी॥ ५॥ मल्लाह॥ ६॥ जुलाहे॥

दो०॥१६॥ ठहि कलार भलि रफुगरा, दइ बिड़िया हित मांझि।
जोलाहा मन मलहते, पुरइ ललन रचि झांझि॥

संधिप्रकरण॥

कल+आर=कलार (अर्थ) कलके दिन तकरार॥ १॥

अन्वय॥ १६॥

ठहि⁵ कल² आर³ भलि⁴ रफुगरा¹, दइ⁹ बिड़िया⁸ हित⁶ मांझि⁷।
जो¹¹ लाहा¹² मन¹⁰ मलहते¹³, पुरइ¹⁷ ललन¹⁶ रचि¹⁵ झांझि¹⁴॥

प्रसंग॥ १६॥

किसी एक समय श्रीकृष्ण कुमार कहीं प्रियाजी महारानी से कुछ तकरार करिआये इतने में कोई एक दूती श्रीराधिकाजी के यहां आई तो श्रीकृष्ण कन्हाईकी निठुराई कीहुई लड़ाईकी व्यथा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

से मन मलीनताई देख और उस वक्त श्रीगोपाललालजी के पास जाना न उचित समझकर प्रियाजीको धीरज बँधाय समझाउतीभई फिर दूसरे दिन श्रीकृष्णचन्द्र महाराज के पास जायकर सविनय यह कहतीभई कि ॥

हरिप्रति सखिवचनम् ॥

टीका ॥ १६ ॥ (हे) मुंहचुपरीबातैं करनेवाले कल्ह तकरार (तो तुमने प्रियाजीसे) खूबै करली प्रीतिमें भी बेड़ी डाल दीन्ही (यानी सुखप्यार भी आपने तरककरदिया तौ इससे तो यह मालूमहुआ कि तुम अपने) जीमें जौन मंशा मनायाकरतेथे (सो) क्लेश ठानकरके (हे) प्यारे (वह मंशा अपनी) पूरीकरलीन्ही ॥ (तब माने कल्ह मैं प्रियाजी के भवनको गईथी उसको महामलीन देखकर मेरेभी नेत्रों में जल भरि आया हे प्यारे बिन बात पर क्लेश करना प्रियाजीसे यह आपको कब उचितहै इस रार धमारपर धूल झोंकनी चाहिये) ॥ इति ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ धुना ॥ २ ॥ कंजर ॥ ३ ॥ थवई ॥ ४ ॥ कसगर ॥ ५ ॥ छीपी ॥

दो०॥१७॥ धुना शीश मम अग्र प्रिय, हृदय कंजरह भूरि ।
थवई कसगर त्यहि व्यथा, ललन छिपी गति भूरि ॥

अन्वय ॥ १७ ॥

धुना शीश मम अग्र प्रिय, हृदय कंज रह भूरि ।
थवई कस गर त्यहि व्यथा, ललन छिपी गति भूरि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रसंग ॥ १७ ॥

ऊपर पहिले दोहे में विदित करिआयेहैं कि गोपाललालजीको प्रियाजीकी तरफसे एक दूतीसमझानेगई जब महाराज नहीं माने तब दूसरी दूती फेर श्रीकृष्ण महाराजकी शरणागत में जायकर राधिकाजी महारानी की क्लेशरूपी दशाको सुनाय यह प्रार्थना कर कहती भई कि हे प्यारे तुमतो बड़े निठुर होगयेहो क्या कुछ नया रंग रचनेवालेहो आज ॥

हरिप्रति सखिवचनम् ॥

टीका ॥ १७ ॥ मेरे[१] आगे[२] प्यारी[३] मूंड़[४] पीटने[५] लगी (उसका) कमलरूपी[६] हृदय[७] कुम्हलाय[८] रहाथा[९] (कृपासिंधु यह तुमने) उसके[१०] गले[११] कैसी[१२] बिपत्ति[१३] (व आफत) लगादी है[१४] (हे) प्यारे[१५] (आपकी) माया[१६] बड़ीही[१७] अपार[१८] (व गुप्त) है (आपसे कोईभी कैसे जीत सक्ताहै इससे हे भगवन् अब आप कृपाकर अपनी परमप्रियाको अपनाय उसका दुःख दूर करिये) ॥ इति ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ चितेरे ॥ २ ॥ रंगसाज ॥ ३ ॥ बसफोर ॥ ४ ॥ नट ॥ ५ ॥ बहेलिया ॥

दो० ॥ १८ ॥ छलन चितेरे नँद ललन, रंगसाजौ नित केरि।
माने घट बसफोर नट, बहेलिया ढँग फेरि ॥

अन्वय ॥ १८ ॥

छलन[१] चितेरे[२] नँदललन[३], रँग[६] साजौ[७] नित[४] केरि[५]।
माने[१२] घट[१०] बस[८] फोर[११] नट[९], बहे[१४] लिया[१६] ढँग[१५] फेरि[१३] ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रसंग ॥ १८ ॥

किसी समय श्रीकृष्ण महाराजने कोई सखी की हँसी हँसी में दही की मटुकिया फोड़डाली तब तो वह झुंझलायकर और अपना नुकसान देखकर उदासहो गोपालजी से यह वचन कहती भई कि ॥

हरिप्रति सखिवचनम् ॥

१ २ ३ ४
टीका १८॥ फ़रेबों के रचनेवाले कान्ह (तुम अपने) नितप्रति व
५ ६ ७ ८ ९
रोज़मर्राही के ढंग सचारा करतेहौ। चलो बस्स नटनागर (मेरा
१० ११ १२
गोरसका) घड़ा तोड़डाला (तब) राज़ीहुये (चाहें जितना कोई
१३ १४ १५ १६
तुम्हें समझावैं परन्तु) फिरभी वही चालचलन गृहण करतेहौ ॥
(ऐसा कहि हाथमलकर रहिजाती भई) ॥ इति ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ३ ॥

॥ १ ॥ बालाई ॥ २ ॥ पथरचटा ॥ ३ ॥ पटवा ॥

दो० ॥ १९ ॥ बालाई त्रिय धन तकत, पथरचटा तुव दिष्ट।
छल पटवासे तन ललन, कर छोंरतउच्छिष्ट ॥

अन्वय ॥ १९ ॥

१ २ ३ ४ ७ ८ ५ ६
बालाई त्रिय धन तकत, पथर चटा तुव दिष्ट।
१० १२ १३ ११ ९ १५ १६ १४
छल पट वासे तन ललन, कर छोंरत उच्छिष्ट ॥

प्रसंग ॥ १९ ॥

एक सुन्दरी पनघटतट कालिन्दी किनारेपर घूंघटमारे पानीभरने को जारही थी गोपाललाल कुछ उससे ठठोली करनेलगे तो वह सखी कृष्णमहाराजसे मुसकिरायकर यहबात कहतीभई कि तुमतो॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हरिप्रति सखिवचनम् ॥

टीका ॥ १९ ॥ मुक्ती[1] स्त्रीरूपी[2] दौलतको[3] ताका[4] करतेहौ[5] तुम्हारी
नजर[6] पत्थर[7] (के भीतर भी) प्रवेश[8] कर जानेवाली है ॥ (यानी
चाहे कोई स्त्री तुमसे मुंहभी छिपाये जातीहोय परन्तु तुम उसे
पट अन्तरसे भी देखलेतेहौ और फिर हे) प्यारे[9] कपटके[10] तो (तुम)
शरीर[11] में कपड़ेही[12] पहिरे[13] रहतेहौ (अगर किसीका रूपरूपी धन
हाथ न लगा तौ दृष्टिही अपनी से उस पदार्थको) जूठा[14] करके[15] तब
मानतेहौ[16] ॥ (आपकी बलिहारी है) ॥ इति ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ चिरीमार ॥ २ ॥ चुरिहारे व मनिहार ॥ ३ ॥ चिकवा
॥ ४ ॥ भील ॥ ५ ॥ लुहाना ॥

दो० ॥२०॥ चिरमारा मनमथ विरह, चुरिहारे भइ पीत ।
चिक चिकवाकी नँदललन, भील लुहाना प्रीत ॥

अन्वय ॥ २० ॥

चिर[2] मारा[3] मनमथ[1] विरह[4], चुरि[5] हा[7] रे[6] भइ[9] पीत[8] ।
चिकचिक[16] वाकी[15] नँदललन[14], भी[12] ललु[11] हाना[13] प्रीत[10] ॥

प्रसंग ॥ २० ॥

एक दूती किसी विरहिनी बालका हाल बेहाल देखकर उसकी
तरफसे गोपाललालके पास जायकर यह प्रार्थना करती भई कि
महाराज आप से सुखप्यार करके जो कुछ कि उसने फलपाये हैं
सो वोही इस तुम्हारी प्रीतिकी रसाई की भलाई बुराईका हाल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जानती है आप उसे मिलतेतक नहींहो उसकी तो यह दशाहै कि॥

हरिप्रति सखिवचनम्॥

टीका॥ २०॥ (एक तो) कामदेवने[१] (उसे) अत्यन्त[२] सताय[३] रक्खाहै (और दूसरे आपकी) वियोग[४] व्यथा में घुलकर[५] अरे[६] हाय[७] (वह) पीली[८] पड़गई[९] है॥ (और तुमसे प्रीति करने से जो कुछ कि मिलने झुलने का लाभथा सो वह भी) स्नेहरूपी[१०] (दरशपरश का) लाभ[११] तक[१२] जातारहा[१३] (और तीसरे हे) नन्दनन्दन[१४] उसकी[१५] बदनामी[१६] (होरही सो न्यारीहै इससे हे प्यारे अब आप उससे मिलकर उसके रंजको दूर करिये)॥ इति॥

जात्यनुमान संख्या॥ ४॥

॥१॥ पंडा॥२॥सिकिलीगर॥ ३॥आराकस॥ ४॥ लकढेरे॥

दो०॥२१॥ यौवन पनडाहू ललन, सिकिलिगरा छलकेर।
आराकस लकढिरे जिय, असि तुम हितको फेर॥

अन्वय॥ २१॥

यौवन[२] पन[३] डाहू[४] ललन[१], सिकिलिगरा[७] छल[५] केर[६]।
आरा[१२] कस[१३] ल[१५] कदिरे[१६] जिय[१४], असि[११] तुम हित[८]को[९] फेर[१०]॥

प्रसंग॥ २१॥

एक समय कोई एक हँसोड़ी परम सलोनी सुन्दरी जोकि श्रीमदनमुरारी से कुछ खिंची रहाकरती थी सो गोपाललालजी से कुछ मसखरी करके और अपने अमीले अंबुजी नेत्रोंकी चितचोरनी चितवन से देखकर यह वचन बोलतीभई कि॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हरिप्रति सखिवचनम् ॥

टीका॥२१॥ प्यारे (तुमतो रसभरी) रूपकी अवस्था से कुढ़ने-वालेहौ (यानी जिस सखीको सुरूपवती देखपावतेहौ उससे विना प्रीति करलिये नहीं मानते और) कपटों के (शस्त्रोंपर) धार धरने वाले (तथा छलछन्दों में महानिपुणहौ फिर) तुम्हारी प्रीति का चक्कर व फन्दा ऐसाहै आरा के समान (पैना कि जो) जी को लेकरही बाहिर निकलताहै ॥ (आरा एक शस्त्रहै जिससे कि काष्ठादिक चीराजाताहै) ॥ इति ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ३ ॥

॥ १ ॥ लोध ॥ २ ॥ भाट ॥ ३ ॥ कथिक ॥

दो०॥२२॥ कालोधन कमरी चुरै, भाटहि भुखिहौं जाय।
कथिकहललनअसत्यकहुं, निचकृतियशु जगछाय॥

अन्वय ॥ २२ ॥

२ ३ १ ४ ५ ६
कालो धन कमरी चुरै, भाटहि भुखिहौं जाय।
१० ८ ७ ९ ११ १२ १३ १५ १४ १६
कथि कह ललन असत्य कहुं, निच कृति यशु जग छाय॥

प्रसंग ॥ २२ ॥

एक सखी जोकि बड़ी चंचल और चलाक थी कृष्णमहाराज से हमेशः हँसीकर सींग दिखाय चल देतीथी एकदिन उसे दांव पर धरकर गोपाललाल व्रजबनितों के बीचमें उसको कमली की चोरी लगाउते भये तब वह कृष्णचन्द्र से कहने लगी कि आप यह कैसी बातें करतेहौ जैसे कि आप दधिचोर हौ वैसेही औरों को भी जानतेहौ भला मैं इस॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हरिप्रति सखिवचनम् ॥

१ २ ३ ४
टीका ॥ २२॥ कमलीरूपी स्याह दौलत व धन को चुरायकर
५ ६ ७ ८ ९ १०
(क्या) भाड़में डालूंगी ॥ (और हे) प्यारे कुछ मैं झूंठकहितीहूं
११ १२ १३ १४ १५ १६
कहीं खोंटे व नीच कर्म्म से संसार में कीर्ती व नामवरी होती है ॥
(ऐसी बेढंगी हँसीकर किसीकी पतिलेना यह आपको उचित नहीं है धन्यवाद देकर प्रभुशरणागत होती भई) ॥ इति ॥

जात्यनुमानसंख्या ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ मलिन व म्लेक्ष ॥ २ ॥ कसाई ॥ ३ ॥ गड़रिया ॥ ४ ॥ पासी ॥

दोहा ॥ २३ ॥ मलिन कसाई यमुनते, गड़रिय जात गँभीर।
लगी प्रेम पाशीलगत, नंदललन की बीर ॥

संधिप्रकरण ॥

कस+आई=कसाई (अर्थ) कैसीआई ॥ १ ॥

अन्वय ॥ २३ ॥

४ ५ ६ २ ३ ८ ९ ७
मलिन कस आई यमुन ते, गड़रिय जात गँभीर।
१४ १२ १३ १० ११ १
लगी प्रेम पाशी लगत, नन्दललन की बीर ॥

प्रसंग ॥ २३ ॥

एक सुन्दरी कहीं यमुना नहाने को गई तौ वहां श्रीकृष्ण महाराजकी मोहनी मूरति सोहनी सूरतिको देखकर मोहितहो बेहोश होजातीभई बहुतसी सावधानी करके घबड़ाई हुई अपने घर पर आई तौ उसकी भौजाईने उसे व्याकुल देखकर यह पूंछतीभई कि॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सखि प्रति सखि वचनम् ॥

टीका ॥ २३ ॥ (अरी) प्यारी (आज इस समय तू) यमुना जी से उदास मन कैसी आई है (और) अत्यंत ऐंठीगुइँठीसी जा-वैहै । मालूमहोताहै कि श्रीकृष्ण नन्दकुमार के सनेहकी फँसरी (आज तेरे हृदयमें) लगगई है ॥ इति ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ३ ॥

॥ १ ॥ सूपक ॥ २ ॥ अहीर ॥ ३ ॥ धानुख ॥

दो० ॥२४॥ दुखसूं पक हियरा रह्यो, अहिर निशा सुख नाहि।
क्रोध धानु खटकै ललनि, खरच दिखाऊं काहि ॥

अन्वय ॥ २४ ॥

दुख सूं पक हियरा रह्यो, अहिरनिशा सुख नाहि।
क्रोध धानु खटकै ललनि, खरच दिखाऊं काहि ॥

प्रसंग ॥ २४ ॥

एक सखी श्रीनन्दललन की लँगराई से दुखित होकर अपनी मित्र सहेली से यह वार्त्ता कहतीभई कि अरी बीर मैं तो गोपाल जीके कुचलनों से बड़ी हैरानहूं क्या कहूं ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

टीका ॥ २४ ॥ (हे) प्यारी (मेरातो) क्लेशों से कलेजा भर रहाहै दिनरात चैन नहीं है ॥ (और) रिसरूपी धन (मेरे मनमें) खटक व हड़रहाहै (सो इसधनको मैं) किसपर लुटायकर प्रकट

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करूं (यानी मेरे मनमें जो गुस्सा भररहा सो इस कोचको मैं किसपर उतारूं क्योंकि मैं तो एक निबल नारिहूं और वह मनमोहन ब्रजमें प्रधानहै सब तरहसे गम खातेही बनिआवता है) इति ॥

जातिनामानुमान संख्या ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ अगरवाले बनिये ॥ २ ॥ लोधे व लोधी ॥ ३ ॥ मेमार ॥ ४ ॥ लोहाना ॥

दो०॥२५॥ अग्रवाल फल सोंचलो, धीमें मारग सुःख।
करुहि लोहा नाईं ललनि, भिटै कृष्ण जा दुःख ॥

अन्वय ॥ २५ ॥

२ ३ ४ ६ ५
अग्रवाल फल सोंचलो, धीमें मारग सुःख।
१० ९ ७ ८ १
करु हि लोहा नाईं ललनि, भिटै कृष्ण जा दुःख ॥

प्रसंग ॥ २५ ॥

किसी एक सलोनी सुन्दरीने अपनी मित्र चतुर सहेलीसे श्री कृष्णमहाराज से मिलनेकी अभिलाषा प्रकट की तो वह उसको उपदेश देकर कहतीभई कि अच्छा बीर परन्तु जल्दी मतकर जल्दीका काम भला नहीं होता क्योंकि ऐसा कहाहै कि उताउला सो बाउला और धीरा सो गँभीरा इससे ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

१ २ ३
टीका ॥ २५ ॥ (सुन) प्यारी (पहिले इसका) परिणाम समुझ लो (यानी आगे का नतीजा सोंचले तब किसी काम को करना
४ ५ ६
चाहिये क्योंकि) धीर्य्यही में आनन्द की डगर (प्राप्त होती है)
७ ८ ९ १०
(और फिर जब) लोहे के समान (कड़ा) हृदय करलेय (तब)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कृष्णमहाराज मिलैं (तब यह तेरा समस्त) क्लेश दूरहोय ॥ इति ॥

अथ द्वादशवंश कायस्थ जातिनामानुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ कुलश्रेष्ठ ॥ २ ॥ सूरजध्वज ॥ ३ ॥ श्रीवास्तव ॥ ४ ॥ माथुर ॥ ५ ॥ भटनागर ॥

दो०॥२६॥ कुलश्रेष्ठ सूरज ध्वजा, श्रीवास्तव मुख गोरि ।
लखि ब्रज भट नागर मुहै, माथुरि ललनि न थोर ॥

अन्वय ॥ २६ ॥

२ १ ३ ६ ५ ६ ७ ८ ४
कुल श्रेष्ठ सूरज ध्वजा, श्री वास् तव मुख गोरि ॥
१२ १३ १४ १५ १७ १० ११ १६
लखि ब्रज भट नागर मुहै, माथुरि ललनि न थोर ॥

प्रसंग ॥ २६ ॥

एक सखी अपनी मित्र सहेली की मनमोहिनी शुभसोहिनी सलोनी अद्भुत शोभा देखकर अत्यंत प्रसन्नहोकर उसकी प्रशंसा कर यह कहती भई कि ॥

सखिप्रतिसखिवचनम् ॥

टीका ॥ २६ ॥ (हे) उत्तम[१] वंशके[२] शूरमाकी[३] जाई हुई सुन्दरी[४] (आज इससमयतो) शोभाकी[५] पताका[६] तेरे[७] मुखार्विन्द[८] पर फहरायरही[९] है (हे) मथुरा[१०] परिजनकी लाड़िली[११] (इस छटा को तो) देखकर[१२] ब्रजपुरी[१३] के बलीश[१४] कृष्णचन्द्र[१५] भी अत्यन्त[१६] मोहित होजायँगे[१७] ॥ इति ॥

अथ द्वादशवंश कायस्थ जातिनामानुमानसंख्या ॥ ७ ॥

॥ १ ॥ बाल्मीक ॥ २ ॥ करन ॥ ३ ॥ ऐठाना ॥ ४ ॥ सकसेने ॥ ५ ॥ गौड़ ॥ ६ ॥ निगम ॥ ७ ॥ अमिष्ट ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोहा ॥ २७ ॥ ललन बालमीकरा कह, ऐठाना हिय क्लिष्ट।
सकसेनेकहु गौरि अघ, क्षमु सौं निगम अमिष्ट॥

अन्वय ॥ २७ ॥

२ १ ३ ५ ४ ८ ७ ६
ललन बाल मी करा कह, ऐठाना हिय क्लिष्ट॥
९ १० १२ ११ १६ १५ १३ १४
सकसे नेकहु गौरि अघ, क्षमु सौं निगम अमिष्ट॥

प्रसंग ॥ २७ ॥

एक समय प्रियाजी महारानी गोपालजी से अत्यन्त क्रोधित है किसी तुच्छ सी बातपर मन उदास कर नेत्रों में जल भरलाईं तौ कृष्ण भगवान् अपने मनकी सफाई दिखराने के वास्ते यह कहते भये कि॥

प्रियाप्रतिप्रभुवचनम्॥

टीका ॥ २७ ॥ (हे) प्यारी[1] नादान[2] मैंने[3] क्या[4] किया[5] (कि-जो मुझसे तेरा) अत्यन्त[6] मन[7] क्रोधित[8] होरहाहै॥[9] भूलके[10] कुछभी २ (तुझने मेरा) अपराध[11] जानाहोय[12] (तौ तुझे) वेदके[13] धर्म्मवाक्य की कड़ी[14] व कठिन[15] कसमैंहैं[16] माफकरु॥ इति॥

अथ अन्यकायस्थ जातिनामानुमान संख्या ॥ २ ॥

॥ १ ॥ कचनारे ॥ २ ॥ सुघर वा कायथ॥

दोहा ॥२८॥ कचनारै मितये ललन, सुघरहु हो कि मुरार।
कायथिराव कलंक दृढ़, हो मसि गृहतनकार॥

अन्वय ॥ २८ ॥

५ ६ ८ १ ४ ७ ३ २
कच नारै मितये ललन, सुघरहु हो कि मुरार॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

६ १२ १० ११ १७ १३ १४ १५ १६
काय थिराव कलंक दृढ़, हो मसि गृह तन कार ॥

प्रसंग ॥ २८ ॥

एक समय कोई चतुरसखा रसिक शिरोमणि कृष्णचन्द्र भगवान् से यह वचन कहताभया कि ॥

हरिप्रति सखावचनम् ॥

१ २ ३ ४
टीका ॥ २८ ॥ (हे) प्यारे गोपाललाल चाहें सुन्दरसे सुन्दर
५ ६ ७ ८ ९ १०
भी नादान स्त्री होवै (उससे) प्रीतिकरनेसे ॥ शरीर को दोष व बद-
११ १२ १३ १४ १५ १६
नामी जरूरही लग जाती है (जैसेकि) काजर के घरमें बदन काला
१७
होहीजाताहै ॥ इति ॥

अथ वैश्यजात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ ऊमर व उमरे ॥ २ ॥ उनाये ॥ ३ ॥ माड़वारी ॥ ४ ॥ सकसेनी ॥

दो०॥२६॥ ऊमरि ऊनायउ शिरै, मारिवारि सकसैन ।
नन्दललन प्रिय दृढ़इ रुचि, बध हित बिरहि अचैन ॥

अन्वय ॥ २६ ॥

१२ १३ १४ १६ १५ १० ११ ८ ९
ऊ मरि ऊ नायउ शिरै, मारि वारि सक सैन ।
१ २ ७ ६ ५ ४ ३
नन्दललन प्रिय दृढ़इ रुचि, बधहित बिरहि अचैन ॥

प्रसंग ॥ २६ ॥

एक दूती किसी बिरहिनीबाला की ओर से श्री रसिक शिरोमणि भक्तवत्सल कृष्णचन्द्र महाराजसे हाथजोरकर सँदेशिक प्रार्थना कहतीभई कि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हरिप्रति सखिवचनम् ॥

टीका ॥ २९ ॥ (हे) [१]नन्दकुंवर (तुम्हारे बिना) [२]प्यारी [३]बेचैन [४]वियोगिनि बालाने तो [५]शरीर त्याग देनेका [६]इरादा [७]ठान लियाहै ॥ [८]इसमें कुछ भी [९]झूठनहीं [१०]कामदेवने [११]तुजायडालाहै [१२]वह [१३]मरीजाती है [१४]उसने [१५]शीश [१६]निवाया (और कहाहै कि जो महाराज मेरे प्राण की कुशल चाहैं तौ जल्दीही आनमिलैं) ॥ इति ॥

वैश्यजात्यनुमान संख्या ॥ २ ॥

॥ १ ॥ सरावगी ॥ २ ॥ महाउरे ॥

दो० ॥३०॥ सराउगी छल नेह में, महाउरै यहि सोच।
हित कुदशा जग भइ ललन, प्रीतत हरिके सँकोच ॥

अन्वय ॥ ३० ॥

[४]सरा [५]उगी [३]छल [२]नेह में, [८]महा [६]उरै [७]यहि [९]सोच।
[११]हित [१२]कुदशा [१०]जग [१३]भइ [१]ललन, [१५]प्रीतत [१४]हरिके [१६]सँकोच ॥

प्रसंग ॥ ३० ॥

एक रसिक सलोनी सुन्दरी श्रीकृष्णमहाराज से बिषयी, निज गरजी व छिन्न मतिवालों की सच्ची दशा वर्णन करतीभई कि ॥

हरिप्रति सखिवचनम् ॥

टीका ॥ ३० ॥ (हे) [१]प्यारे (अब तो संसार में कुछ ऐसी) [२]प्रीति में [३]कपट की [४]चाल व प्रणाली [५]उत्पत्तिहोगई है (मेरे) [६]हृदय में [७]इसी बातका [८]बड़ा [९]रंज (रहताहै कि) [१०]जगत् में [११]स्नेह की [१२]कुदर [१३]होजानेसे [१४]हरएक से [१५]सनेह [१६]करते डर लगताहै ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

॥१॥ दूवर बनिये ॥२॥ हलवाई ॥३॥ महाजन ॥४॥ कायथ॥

दो०॥३१॥ कायथुगीली सी दुबरि, हलवाई सुकपोलि।
महाजनौ छबि निधि ललन, ऐस भिटावति ठोलि॥

अन्वय ॥ ३१ ॥

काय थुरीली सी दुबरि, हलवा ई सु कपोलि॥ (४ ५ ६ ८ ९ ७ १०)
महा जनौ छबि निधि ललन, ऐस भिटावति ठोलि॥ (१२ ११ १३ १४ १ २ १५ ३)

प्रसंग ॥ ३१ ॥

किसी एक रसिक शौक़ीना सहखर्च नायक की प्रीति में निपुणाई व प्रधानता देखकर एक चतुर दूती उससे यह कहती भई कि आज॥

टीका ॥ ३१ ॥ (हे) प्यारे (एक) ऐसी सुन्दरी (जोकि) कद में ठिंगनी (शरीरमें) दुबली पतली सुन्दर हलुवा सरीखे कोमल गालौंवाली साक्षात् अत्यंत शोभाकी सागरी (तुम्हें) मिलवाउतीहूं (कि तुम्हारा भी जी राजी होजायगा)॥ इति॥ (१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५)

जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ ब्राह्मण ॥ २ ॥ बहोरे बनिये ॥ ३ ॥ गहोई बनिये ॥ ४ ॥ दूसर बनिये ॥ ५ ॥ रस्तोगी बनिये ॥

दोहा ॥ ३२ ॥ विप्रति भांति विचार करु, ललन बहोरै प्यार।
जो गहोइ दूसर चलन, रसतोगिर हो छार॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्वय॥ ३२॥

१ २ ३ ४ ८ ५ ६ ७
विप्रति भांति विचार करु, ललन बहोरै प्यार॥
९ १२ १० ११ १४ १३ १५ १६ १७
जो गहोइ दूसर चलन, रस तो गिर हो छार॥

प्रसंग॥ ३२॥

एक दूती श्री प्रियाजी महारानी की ओर गोपाललाल जी का अन्तरी हित जानकर उनसे यह वचन बोलतीभई कि आप जो प्रियाजीसे प्रीति किया चाहते हो तो॥

टीका॥ ३२॥ विशेषकरके हरएक तरह समुझकर (हे) प्यारे तबफिर प्रीति करो॥ (काहे से तुमने) अगर कोई और बरताउ ग्रहणकिया तबतो प्रीति कम होकर छूटजायगी॥ इति॥

इति श्रीत्रैवरणवर्गीक्षत्रीवैश्यशूद्रजातिनामानुमानमालिकादोहावलिसटीकपंडितललनपियाविरचितललनविनोदस्यपूर्व्वार्द्धविभागसम्पूर्णम्शुभम्॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ ललनविनोदस्य उत्तरार्द्ध विभागप्रारंभः ॥

दो० ॥ सुमिरि सुखद शिव शिवासुत श्री नँदललन मनाय ।
शारद गुरु गायत्रिअज बंदौं मुनि समुदाय ॥ १ ॥

अथ ब्राह्मणषोड़श १६ गोत्रवर्णन ॥

गोत्रानुमानसंख्या ॥ ७ ॥

॥ १ ॥ कश्यपिगोत्र ॥ २ ॥ गौतमगोत्र ॥ ३ ॥ गर्गगोत्र ॥
॥ ४ ॥ वत्सगोत्र ॥ ५ ॥ भारद्वाजगोत्र ॥ ६ धनंयगोत्र ॥ ७ ॥
वशिष्ठगोत्र ॥

१ ६ ५ २ ३ ४
दोहा ॥ १ ॥ कश्यपि अघि गौतम ललन, गर्गराहटै वत्स ।
७ ८ ९ १० १३ ११ १२
भार द्वाजिये धनं जय, नशौ वशिष्ठ कलत्स ॥

अन्वय ॥ १ ॥

कश्यपि अघि गौतम ललन, गरगराहटै वत्स ।
भारद्वाजिये धनंजय, नशौ वशिष्ठ कलत्स ॥

गोवधफलवर्णन ॥

१ २ ३ ४
टीका ॥ १ ॥ कैसाभी तथाकोई भी मूर्ख अभिमानके वशीभूत
५ ६ ७
गोवध (यानी गऊमारडालनेका) पापीहोय॥ (वहचाहे) अत्यंत
८ ९ १० ११
आशीर्वादी संपति से फलाफूलाहोय (तौभी) सहितसंसार (व)
१२ १३
सहित परिवार के नाशको प्राप्तहोजाताहै ॥ इति ॥

ब्राह्मण षोड़श १६ गोत्रवर्णन ॥

गोत्रानुमानसंख्या ५ ॥

॥ १ ॥ शान्डिल्यगोत्र ॥ २ ॥ कौन्डिन्यगोत्र ॥ ३ ॥ पराशरगोत्र
॥ ४ काश्यपि गोत्र ॥ ५ उपमन्य गोत्र ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

२ ४ ३ ५ ६ ७ ८ १
दो० ॥ २ ॥ न शान्डिल्यहु कौडि ना, अपराशरहु निदान ॥
८ ९ १२ १० ११ १४ १३ १६ १५
काश्यप धर्म्म न ललन सुख, उप मन मरत गुमान ॥

संधि प्रकर्ण ॥

अपर+अशरहु=अपराशरहु (अर्थ) इसके उपरान्त शस्त्रों करके रहित शस्त्र बिहीना ॥

अन्वय ॥ २ ॥

न शान्डिल्यहु कौडिना, अपर अशरहु निदान ।
काश्यपि धर्म्म न ललन सुख, उपमन मरत गुमान ॥

अभिमान निषेदिता वर्णन ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

टीका ॥ २ ॥ यानी नतो[1] शरीर[2] में[3] (जिनके) शोभा[4] (पासकानी) कौड़ी[5] नहीं[6] इसके उपरान्त[7] बाण (व) शस्त्रों करके रहित । तिणका[8] भर भी (न) दान[9] (व) सुकर्म्म (कोई) पुत्रका[10] आनन्द[11] नहीं[12] (यानी पुत्रवान् व कुलवान् भी नहीं और तिसपर) मनसे[13] ऊपर[14] यानी बित्तबाहर अभिमान[15] व घमण्ड के मारे ऐंठेजाते हैं (ऐसे मूर्खोंको भी कोटिशः धिक्कारहै) ॥ इति ॥

ब्राह्मण षोड़श १६ गोत्र वर्णन ॥

गोत्रानुमान संख्या ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ भरद्वाज गोत्र ॥ २ ॥ कौशिक गोत्र ॥ ३ ॥ कवस्थिगोत्र ॥ ४ ॥ कात्यायनगोत्र ॥

१ ३ २ ४ ५ ६
दो० ॥ ३ ॥ मन भरद्वाजत कौशिकै, हिय कव स्थिराहोत ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खल[७] कात्यायन[८] चिर[९] जिओ[१०], ललन[११] सहित[१२] सुख[१३] द्योत[१४] ॥

संधिप्रकर्ण ॥

कात्य+अयन=कात्यायन (अर्थ) नाशभौन ॥ १ ॥

अन्वय ॥ ३ ॥

मनभर द्वाजत कौशिकै, हिय कव स्थिरा होत ।
खल कात्य अयन चिर जिओ, ललन सहित सुख द्योत ॥

अथ श्रीपरशुराम प्रशंसावर्णन ॥

टीका ॥ ३ ॥ (हम सब लोग) अघाय[१] अघायकर परशुरामजी[२] महाराजको आशीर्बाद[३] देते हैं (क्योंकि यह बातसच्चहै कि ऐसे बीर के वास्ते बिना आशीर्बाद दियेहुये) मन[४] कौन[५] तरहसे रुक[६] सक्ता है ॥ दुष्टों[७] के विनाशका[८] घर (ऐसे जो परशुरामजी हैं सो) बहुतकाल[९] जीते[१०] रहैं[११] पुत्रों के सहित[१२] यानी पुत्रवान् (होंयँ और) आनन्दों[१३] का प्रकाशरहे[१४] ॥ इति ॥

अथ षट् ६ कुल गोत्रान वर्णन ॥

गोत्रानुमानसंख्या ४ ॥

॥ १ ॥ कस्यपी गोत्र ॥ २ ॥ कात्यायन गोत्र ॥ ३ ॥ शाण्डिल्य गोत्र ॥ ४ ॥ कस्यप गोत्र ॥

दो० ॥ ४ ॥ कस्यपि[२] कात्यायन[८] यशी[१], ललन[३] न[६] शान्[५] डिल[४] ब्राज[७] ।
कस्यपनाय[१०] न[११] तसां[९] कृती, उप[१४] मन[१५] भार[१२] द्वाज[१३] ॥

संधि प्रकर्ण ॥

कात्य+अयन=कात्यायन (अर्थ) विनाश का घर ॥ १ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्वय ॥ ४ ॥

कस्यपि कात्यअयन यशी ललन न शान्डिल ब्राज ।
कसअपनाय न तस अंगकृति, उपमन भारद्वाज ॥

यशीसुयश प्रताप वर्णन ॥

टीका ॥ ४ ॥ धर्म्मवान्[1] कैसा[2] भी मूर्ख[3] (होय) शरीरमें[4] शोभा[5] नहीं[6] सुहायमान[7]होय (यानी कुरूप भी होय चाहे) विनाशका[8] घर (होय परन्तु उसके धर्म्म के प्रभाव का फल) तिसके[9] अंगकी करतूती क्योंकर[10] अथवा कैसे पद्धतिदिखावे नहीं[11] (और) अति-[12]शय आशीर्वाद[13] से उत्पन्न (जो) उपमा[14] हैं (सो क्योंकरप्राप्त) न[15] होय ॥ इति ॥

अथ द्विजजाति वर्णन ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ६ ॥

॥ १ ॥ तैलंगी ॥ २ ॥ सरवरिया ॥ ३ ॥ गुरजर ॥ ४ ॥ महाराष्ट्री ॥ ५ ॥ करनाटकि ॥ ६ ॥ द्राविण ॥

दोहा ॥ ५ ॥ तैलँगि[6] सर[5] वरिया[4] ललनि[1], गुरजरि[3] महाराष्ट्रीय[2] ॥ कर[8]
नाटकिय[7] अनूप[9] छवि[10], भद्रा[12] विणनक[13] हीय[11] ॥

प्रसंग ॥ ५ ॥

किसी एक सुरूपवती की शोभा देखकर किसीनायक से एक दूतीप्रशंसा करती है कि प्यारे रसिक शिरोमणि ज़रा देखो तो वह कैसी सुन्दरी सलोनी सुरूपवान् है कि जिसकी ॥

टीका ॥ ५ ॥ छोटी[1] उमर महाराष्ट्र[2] देशकी ग्वालिन[3] सुन्दर[4]

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सीस[५] में तैल[६]लगाये ॥ चटकीले[७] मटकील हाथ[८] (जिसकी कि)
अद्भुत[९] शोभा[१०] हृदय[११] के दुःखको[१२] दूरकरनेवाली[१३] है ॥ इति ॥

बिप्र जाति वर्णन ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ संभाहमोचक द्विज ॥ २ ॥ साकाह महिदेव ॥ ३ ॥
मागधब्राह्मण ॥ ४ ॥ पौक्ष महीसुर ॥ ५ ॥ मालव विप्र ॥

दोहा ॥ ६ ॥ सम्[१] भह[२] मोचक[३] असा[४] कह,[५] अघ[६] गण[७] परमागाध[८] ॥
शुक्ल[९]पौक्ष मालउ[१०] ललन, तन[११] सुख[१२] कारक[१३] व्याध[१५] ॥[१४]

अथ पापफल वर्णन ॥

प्रश्नोन्तरिक (प्रश्न)

टीका ॥ ६ ॥ समतुल्य[१] (यकसां) चमत्कार[२] के नाशकरने[३]
वाला[४] ऐसा कौन पदार्थ है (उत्तर) पापों[६] का समूह[७] (जिसके
दुःख[८]) अत्यंत पारावार करके रहित हैं ॥ (कैसे हैं कि) ऐश्वर्य्य[९]
वान्[१०] संपति (व) पुत्र[११] (व) शरीर[१२] के आनन्दों[१३] को नुक़सान[१४]
करनेवाले[१५] हैं अथवा क्लेश पहुँचानेवाले हैं ॥ इति ॥

विप्रजाति वर्णन ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ गूजर गौड़ ॥ २ ॥ आदि गौड़ ॥ ३ ॥ श्रीगौड़ ॥ ४ ॥
पौखरना द्विज ॥ ५ ॥ गिरनारा द्विज ॥

दो०॥७॥ गूजरि रतिकोआदि दिन, श्रीनँदललन रिझाव ।
पौखरि नागिरि नारितों, जीत बाजि पछताव ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्वय॥ ७॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
गूजरि रति को आदि दिन श्रीनँदललन रिझाव।
१० ९ ११ १२ ८ १३ १४ १५ १६
पौ खरि ना गिरि नारितौ जीत बाजि पछताव॥

प्रसंग॥ ७॥

एक सखी जो कि श्रीकृष्णचन्द के बियोग में बहुतही दुःखित होरही थी और वह एक दूती से हमेशः श्रीगोपाल जी के मिलने को कहा करती थी तौ एक दिन उसने श्रीकृष्ण महाराज को लाय मिलाया जब वह केलि रसमें मोहित होनेलगी तब उस दूती ने उससे यह वचन कहि सुनाया कि देखु॥

टीका॥ ७॥ [१] अरीबीर (आज) [२] संयोग [३] का [४] पहिला [५] रोज है [६] श्रीनन्दकुंवर को (खूब अच्छी तरह से) [७] राजी करना॥ (और हे) [८] सखि (जो कहीं) [९] सुन्दर [१०] पौरूपीपांसा [११] नहीं [१२] पड़ा [१३] तौ फिर [१४] जीती हुई [१५] बाजी व दाँव को (हारकर) [१६] पछितायगी (यानी जो आज तुझ से महाराज खुश न हुये तौ फिर यह कभी तेरे हाथ न आवेंगे)॥ इति॥

विप्रजाति वर्णन॥

जात्यनुमान संख्या॥ ५॥

॥ १॥ श्रीमालीद्विज॥ २॥ डिगम्बर द्विज॥ ३॥ सहचोरा द्विज॥ ४॥ सिखवार द्विज॥ ५॥ कश्मीरी द्विज॥

दोहा॥ ८॥ श्रीमालीन डिगम्बरौ, सहचोरा दधिकेर।
का सिखवारन ललन सिख, कसमीरीथिरिजेर॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्वय ॥ ८ ॥

[१] श्री [२] मा [८] लीन [३] डिगम्बरौ, [४] सह [७] चोरा [५] दधि [६] केर।
[१२] का [९] सिखवारन [१०] ललन [११] सिख, [१३] कस [१४] मीड़ी [१६] थिरि [१५] जेर ॥

प्रसंग ॥ ८ ॥

किसी सुन्दरीका पति किसी एकनागरी की प्रीति रीति के वशीभूत होरहाथा उस पतिवियोग रूपी व्यथा में मन मलीन किये हुये बैठी अकुलाय रहीथी कि इतने में एक चतुर दूती आई उसे उदास देखकर हाल पूंछनेलगी उसको क्लेशित जानकर यह कहतीभई कि अरीबीर यह सुन्दरतारूपी दौलतपर किसका मन मधुकर होकर नहीं ललचाय उठताहै देखु ॥

टीका ॥ ८ ॥ [१] इस्त्री [२] में तो [३] महादेवजी (और) [४] सहित [५] गोरस [६] के [७] हरलेनेवाले (व चुरावनेवाले श्रीकृष्ण सरीखे भी) [८] मोहित (होते हैं तौ फिर) उपदेशपावने योग्य [१०] नासमुझको [११] समझावना ही [१२] क्याहै (तू) [१३] कैसी [१४] मली दलीसी [१५] मनमारेहुये [१६] बैठी है (रंजकोदूर कर हमेशः खुशरहाकर इनबातों में क्यारक्खाहै) ॥ इति ॥

विप्रजाति वर्णन ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ९ ॥

॥ १ ॥ उदम्बर द्विज ॥ २ ॥ छन्याती द्विज ॥ ३ ॥ पल्लीवार द्विज ॥ ४ ॥ बालाद्विज ॥ ५ ॥ सनोड़िया ब्राह्मण ॥ ६ ॥ बीकानेरिया ब्राह्मण ॥

दो० ॥ ९ ॥ उदम्बरा छन्नाति नहिं, पल्लीवार न थाहु।
वाला वसनोड़िय ललनि, बीकानेरि रँगाहु ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

॥ संधिप्रकरण ॥

उद+अम्बरा=उदम्बरा (अर्थ) श्रेष्ठवसन ॥ १ ॥ वसन+उड़िया = वसनोड़िया (अर्थ) उड़ियादेशका कपड़ा ॥ २ ॥

अन्वय ॥ ६ ॥

२ ३ १ ४ ५ ६
उदम्बरा छन्ना ति नहिं, पल्लीवार नथाहु ।
८ ९ ७ १० ११
बाला वसनोड़िय ललनि, बीकानेरि रँगाहु ॥

प्रसंग ॥ ६ ॥

किसी सखी को कोई एकसहेली ने किसी देशकी सौगातलाकर कुछ कपड़ा तोफामें उसको दिया और उससे यह कहा कि देखु ॥

टीका ॥ ६ ॥ (अरी) [1] बीर (यह) [2] बहुतअच्छा कपड़ा है [3] हथपुंछना व छन्नी बनावने योग्य [4] नहीं है (और) [5] नबिछौना बनावनेलायक [6] समझना ॥ (हे) [7] प्यारी (यह) [8] सुन्दर [9] उड़िया देशका कपड़ा है (इसपर) [10] बीकानेरदेशकारंग [11] रँगवावना (तब इसकीबहार देखना ज्यादा क्याकहूं) ॥ इति ॥

विप्रजाति वर्णन ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ बाईसाब्राह्मण ॥ २ ॥ तैलंगीब्राह्मण ॥ ३ ॥ जेसरमेलियाब्राह्मण ॥ ४ ॥ गुग्गुली ब्राह्मण ॥ ५ ॥ भटनागर ब्राह्मण ॥

दो० ॥ १० ॥ बाईसा तैलंगिपट, जेसरमेलिय होय ।
रँगा गुग्गुली रँग ललनि, ब्रजभटनागरजोय ॥

संधिप्रकरण ॥

तैल+अंगि = तैलंगि (अर्थ) तेलियावसन ॥ १ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्वय ॥ १० ॥

४ ५ ७ ८ ६ ९
बाई सा तैलंगि पट, जेसरमेलिय होय।
११ १० १ २ ३
रँगा गुग्गुलीरँग ललनि, ब्रजभटनागर जोय ॥

प्रसंग ॥ १० ॥

किसी ब्रजनागरी को महाउत्तम पोशाक पहिरेहुये किसी दूतीने देखकर वह अपनी हितू सलोनी से यह कहनेलगी कि ॥

टीका ॥ १० ॥ (अरी) प्यारी कृष्णचन्द्रकी (मिलापिन) नारि (उस) ब्रजकारिका सरीखा जेसरमेलदेशका तेलिया रंगतका कपड़ा लेकर ॥ गूगुलकी रंगतसारंग रँगवाउ (उसे पहिर कर देख तेरे मुँहपर वह कैसा खुलताहै) ॥ इति ॥

विप्रजाति वर्णन ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ चौबीसा ब्राह्मण ॥ २ ॥ अवधीचि ब्राह्मण ॥ ३ ॥ नागर ब्राह्मण ॥ ४ ॥ सांटोदरा ब्राह्मण ॥ ५ ॥ तिरहुतिया ब्राह्मण ॥

दो० ॥ ११ ॥ रचौबीसहा गुण ललन, छल अवधीचितधार।
नागरि सांटोदराकर, तिरहुतिया किनु प्यार ॥

अन्वय ॥ ११ ॥

८ ६ ७ १ २ ३ ४ ५
रचौ बीसहा गुण ललन, छल अवधी चित धार।
६ १२ १० ११ १५ १३ १६ १४
नागरि साटो दरा कर, तिरहु तिया किन प्यार ॥

प्रसंग ॥ ११ ॥

एकसमय किसी एकसखी व कृष्ण महाराजसे संभाषणहोनेपर वह सखी श्रीश्याम सलोनेकी चतुराईकी बड़ाईकर यहकहनेलगी कि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

टीका ॥ ११ ॥ (हे) प्यारे कपटकी हद्दियत को मनमें धारण करके (तुम) बीसों उपाय करके (एकदफा तो हरेक) स्त्रीकी इज्जत व पद्धतिकरके अपने कबजे में तथा वशीभूत करलेतेहो (फिर चाहे उस) अबलासे प्रीति निभै चाहे नहीं (निभै) ॥ इति ॥

विप्रजाति वर्णन ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ७ ॥

॥ १ ॥ नावड़ ब्राह्मण ॥ २ ॥ भट्टाचार्य्य ब्राह्मण ॥ ३ ॥ भट्ट ब्राह्मण ॥ ४ ॥ वीषल ब्राह्मण ॥ ५ ॥ नगरा ब्राह्मण ॥ ६ ॥ व्यास ब्राह्मण ॥ ७ ॥ उपाध्या ब्राह्मण ॥

दो० ॥ १२ ॥ नावड़ भट्टाचार्य्य भट, नहिं वीषल नगरेश ।
व्यासासनोपाध्यापक,ललनै बिनु रति वेश ॥

संधि प्रकरण ॥

भट्ट+आचार्य्य=भट्टाचार्य्य (अर्थ) योधाओं में शिरोमणि॥१॥
नगरा+ईश=नगरेश (अर्थ) देशका स्वामी मालिकेमुल्क ॥ २ ॥
व्यास+आसन उप + अध्यापक=व्यासासनोपाध्यापक (अर्थ) व्यासगद्दीपर बैठनेवाला (पण्डित) ॥ ३ ॥

अन्वय ॥ १२ ॥

ना वड़ भट्टाचार्य्य भट, नहिं वीषल नगरेश ।
व्यासासनोपाध्यापक, ललनै बिनु रति वेश ॥

प्रसंग ॥ १२ ॥

वेद मुनी व देवतों का वाक्य जोकि कवि कोविदों के मुखारविन्द से वर्णन कियागयाहै सो कहते हैं कि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्वय ॥ १० ॥

४ ५ ७ ८ ६ ९
बाई सा तैलंगि पट, जेसरमेलिय होय।
११ १० १ २ ३
रँगा गुग्गुलीरँग ललनि, ब्रजभटनागर जोय ॥

प्रसंग ॥ १० ॥

किसी ब्रजनागरी को महाउत्तम पोशाक पहिरेहुये किसी दूतीने देखकर वह अपनी हितू सलोनी से यह कहनेलगी कि ॥

१ २ ३
टीका ॥ १० ॥ (अरी) प्यारी कृष्णचन्द्रकी (मिलापिन) नारि
४ ५ ६ ७
(उस) ब्रजकारिका सरीखा जेसरमेलदेशका तेलिया रंगतका
८ ९ १० ११
कपड़ा लेकर ॥ गूगुलकी रंगतसारंग रँगवाउ (उसे पहिर कर देख तेरे मुँहपर वह कैसा खुलताहै) ॥ इति ॥

विप्रजाति वर्णन ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ चौबीसा ब्राह्मण ॥ २ ॥ अवधीचि ब्राह्मण ॥ ३ ॥ नागर ब्राह्मण ॥ ४ ॥ सांटोदरा ब्राह्मण ॥ ५ ॥ तिरहुतिया ब्राह्मण ॥

दो० ॥ ११ ॥ रचौबीसहा गुण ललन, छल अवधीचितधार।
नागरि सांटोदराकर, तिरहुतिया किनु प्यार ॥

अन्वय ॥ ११ ॥

८ ६ ७ १ २ ३ ४ ५
रचौ बीसहा गुण ललन, छल अवधी चित धार।
९ १२ १० ११ १५ १३ १६ १४
नागरि साटो दरा कर, तिरहु तिया किन प्यार ॥

प्रसंग ॥ ११ ॥

एकसमय किसी एकसखी व कृष्ण महाराजसे संभाषणहोनेपर वह सखी श्रीश्याम सलोनेकी चतुराईकी बड़ाईकर यहकहनेलगी कि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

टीका ॥ ११ ॥ (हे) प्यारे कपटकी हद्दियत को मनमें धारण करके (तुम) बीसों उपाय करके (एकदफा तो हरेक) स्त्रीकी इज्जत व पद्धातिकरके अपने कबजे में तथा वशीभूत करलेतेहौ (फिर चाहे उस) अबलासे प्रीति निभै चाहे नहीं (निभै) ॥ इति ॥

विप्रजाति वर्णन ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ७ ॥

॥ १ ॥ नावड़ ब्राह्मण ॥ २ ॥ भट्टाचार्य्य ब्राह्मण ॥ ३ ॥ भट्ट ब्राह्मण ॥ ४ ॥ वीषल ब्राह्मण ॥ ५ ॥ नगरा ब्राह्मण ॥ ६ ॥ व्यास ब्राह्मण ॥ ७ ॥ उपाध्या ब्राह्मण ॥

दो० ॥ १२ ॥ नावड़ भट्टाचार्य्य भट, नहिं वीषल नगरेश ।
व्यासासनोपाध्यापक,ललनै बिनु रति वेश ॥

संधि प्रकरण ॥

भट्ट+आचार्य्य=भट्टाचार्य्य (अर्थ) योधाओं में शिरोमणि॥१॥
नगरा+ईश=नगरेश (अर्थ) देशका स्वामी मालिकेमुल्क ॥ २ ॥
व्यास+आसन उप + अध्यापक=व्यासासनोपाध्यापक (अर्थ) व्यासगद्दीपर बैठनेवाला (पण्डित) ॥ ३ ॥

अन्वय ॥ १२ ॥

ना वड़ भट्टाचार्य्य भट, नहिं वीषल नगेरश ।
व्यासासनोपाध्यापक, ललनै बिनु रति वेश ॥

प्रसंग ॥ १२ ॥

वेद मुनी व देवतों का वाक्य जोकि कवि कोविदों के मुखारविन्द से वर्णन कियागयाहै सो कहते हैं कि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

टीका ॥ १२ ॥ नतो श्रेष्ठ व बड़ा (वो है जौन) योधाओं में शिरोमणि योधा है न क्रोधी (गुस्सैल न) देशका स्वामी ॥ (न) व्यासगद्दी परका बैठनेवाला पंडित विद्वान (नारायण की) भक्ति सुरूपके (सबही) मूर्ख (मानेगये हैं) ॥ इति ॥

विप्रजाति वर्णन ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ विष्णोरा ब्राह्मण ॥ २ ॥ ओझा ब्राह्मण ॥ ३ ॥ पन्डाब्राह्मण ॥ ४ ॥ माधव ब्राह्मण ॥

दोहा ॥ १३ ॥ विष्णोरा ओझाकहीं, कोउ पन्डाहे पाहिं ।
माधवपुरि आनँदछकैं, तिन्ह कुल ललनहद्दाहिं ॥

अन्वय ॥ १३ ॥

विष्णोरा ओ झाकहीं, कोउ पन डाहे पाहिं ।
माधवपुरि आनँद छकैं, तिन्ह कुल ललन हद्दाहिं ॥

प्रसंग ॥ १३ ॥

जौन जीव मनुष्यजन्म पायकर हरिसे हित करनेवाले हैं उनके परिणाम के फलका प्रभाव वर्णन करते हैं जौन जन ॥

टीका ॥ १३ ॥ भगवान्की तरफ (सनेहलगाउते हैं) सो जीव (बाल, युवा, वृद्धा, इन तीनोंपनों में से) किसी अवस्था में मरजाने पर ॥ वैकुंठपुरी में बसकर सुखको भोगाकरते हैं (और) उनके वंश संततीसे सम्पान्वित रहते हैं (पानी निपूते व निर्वंशी कभी नहीं रहते हैं) ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विप्रजाति वर्णन ॥

जात्यनुमानसंख्या ॥ ६ ॥

॥ १ ॥ उत्कल ब्राह्मण ॥ २ ॥ उड़िया ब्राह्मण ॥ ३ ॥ घुघुआ ब्राह्मण ॥ ४ ॥ आलम ब्राह्मण ॥ ५ ॥ झालम ब्राह्मण ॥ ६ ॥ कामरुदेशीय ब्राह्मण ॥

दो० ॥ १४ ॥ उतखल उड़ियाने घुघुअ, आलमझालम वेशि ।
नन्द ललन सवन, कावलि कामरुदेशि ॥

अन्वय ॥ १४ ॥

उत[१] खल[३] उड़ियाने[८] घुघुअ[२], आलम झालम वेशि[७] ।
नन्द[१०]ललन[११] जीते[९] सवन[४], का[६] वलि[५] कामरुदेशि ॥

प्रसंग ॥ १४ ॥

जिस समय कि नारायणने रुक्मिणीजी का हरण किया उस समय शिशुपाली योधा जौन जौन श्रीकृष्णभगवान्से लड़े तिन को अपनी आजानुबाहुके बलप्रताप से जीता सो शोभा वर्णन करते हैं कि ॥

टीका ॥ १४ ॥ उधरतो[१] घुग्घू[२] व उल्लू (सरीखे डरौं हैं) दुष्टजन[३] क्यातो[४] कामरुदेशके[५] बलवान्[६] (व) आलम झालमादिदेशी भेषबनायेहुये[७] जमाहुयेथे[८] तिनसबोंको[९] नन्दकुंवर[१०] कन्हाई ने परास्त[११] किया (और रुक्मिणीजी को विवाहकर सुयशपाया) ॥ इति ॥

विप्रजाति वर्णन ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ नागोरी ब्राह्मण ॥ २ ॥ अड़ालजा ब्राह्मण ॥ ३ ॥ अरोड़ा ब्राह्मण ॥ ४ ॥ कटोरे ब्राह्मण ॥ ५ ॥ बालम ब्राह्मण ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० ॥ १५ ॥ नागौरियत अड़ालजा, बली अरोड़ा जौन ।
कृष्ण कटारा क्लिष्टगति, श्रीबालम बलभौन ॥

अन्वय ॥ १५ ॥

१३ १४ १२ ३ २ १
ना गौरियत अड़ालजा, बली अरोड़ा जौन ॥
८ ९ १० ११ ४ ५ ६ ७
कृष्ण कटारा क्लिष्ट गति, श्री बालम बल भौन ॥

प्रसंग ॥ १५ ॥

जब कि श्रीकृष्णभगवान् समरभूमि में युद्ध करने को आरूढ़ व उद्यत हुये उस समय की तरवार प्रहार व मदनमोहन मुरारी के बल प्रतापकी शोभा वर्णन करते हैं कि ॥

टीका ॥ १५ ॥ जोकि[1] बखाने[2]हुये (नामजद) बलवान[3]हैं (सोभी) लक्ष्मीजी[4] के पति[5] शक्ति[6] के गृह[7] भगवान्[8] की तरवारि[9]के कठिन[10] वार[11] के (सामने) अड़नेवाला[12] नहीं[13] ध्यानमें[14] आउताथा (इस प्रकार मुरारि नंदकुमारने तरवार प्रहारकी थी) ॥ इति ॥

विप्रजाति वर्णन ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ३ ॥

॥ १ ॥ माथुर चौबे ब्राह्मण ॥ २ ॥ गड़ोड़ा ब्राह्मण ॥ ३ ॥ पहाड़ी ब्राह्मण ॥

दो० ॥ १६ ॥ दम माथुर चौबेन महिं, गड़ोड़ाहिं भटभूर ।
शक्ति पहाड़ी तिनु ललन, प्रभुपद रतिमहँ चूर ॥

संधिप्रकरण ॥

गड़+उड़ाहिं=गड़ोड़ाहिं (अर्थ) चिपटकर पछाड़ना ॥ १ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्वय ॥ १६ ॥

२ ३ ४ १ ५ ८ ६ ६ ७

दम मा थुर चौबे न महि, गड़ोड़ाहिं भट भूर ।

११ १२ १० १३ १४ १५ १६ १७ १८

शक्ति पहाड़ी तिनु ललन, प्रभु पद रति मह चूर ॥

प्रसंग ॥ १६ ॥

जिस समय मल्लयुद्ध में उद्यत ह्वैकर श्रीकृष्णभगवान् की जैजैकार करते हुये चौबेलोग अखाड़े में सुहायमानहोते हैं उस समय के उनके बलकी प्रशंसा करते हैं ॥

१ २ ३ ४ ५

टीका ॥ १६ ॥ (कोई भी) चौबेलोग दमखम में थोड़े नहीं

६ ७ ८ ९ १०

होते बड़ेबड़े योधान को पृथ्वी में चिपिककर पछाड़डालते हैं ॥

११ १२ १३ १४

जिनकी ताकत पर्व्वत समतुल्य पुष्ट (होती है क्योंकि वह) बालरूप

१५ १६ १७ १८ १९

भगवान् के चरणकी भक्ती में अल्मस्त (रहते हैं) ॥ इति ॥

विप्रजाति वर्णन ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ३ ॥

॥ १ ॥ गंगोली ब्राह्मण ॥ २ ॥ तीर्थतिवारी ब्राह्मण ॥ ३ ॥ चात्रवेदी ब्राह्मण ॥

दो० ॥ १७ ॥ जो गंगौलीन्हाय कलु, तीर्थतिवारिनु मात ।

चात्रवेद वच मुक्ति वपु, त्यहि नँदललन सिहात ॥

अन्वय ॥ १७ ॥

४ ३ ६ ५ १ २

जो गंगौ लीन्हाय कलु, तीर्थतिवारिन मात ।

७ ८ ९ १० ११ १२ १३

चात्रवेद वच मुक्ति वपु, त्यहि नँदललन सिहात ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रसंग ॥ १७ ॥

जौन मनुष्यजन इस कलियुग के समय में श्रीगंगास्नान नेम प्रेमसे प्रतिदिवस किया करते हैं तिनके पुण्य प्रताप की बड़ाई वेद, देव, मुनि, कवि, कोविद इसप्रकार वर्णन करते हैं कि जोकि समस्त॥

टीका ॥ १७ ॥ तीर्थों में [१] पूज्य व माननीय [२] मैया [३] श्रीगंगाजी का [४] जौनजीव [५] कलिकाल में [६] स्नान किया करताहै ॥ चारों [७] वेदोंका [८] वचन है (कि वह मनुष्य) [९] मोक्षका [१०] सुरूपही है (और) [११] उसको [१२] भगवान् (भी देखकर) [१३] प्रसन्न होते हैं ॥ इति ॥

विप्रजाति वर्णन ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ वंगाली ब्राह्मण ॥ २ ॥ वाड़ज्जय द्विज ॥ ३ ॥ भोजिक ब्राह्मण ॥ ४ ॥ चटज्जय ब्राह्मण ॥ ५ ॥ मोढ ब्राह्मण ॥

दो० ॥ १८ ॥ लवंगालि वाड़ज्जय कि, लिखु भोजिक दलमंत्र।
ललनि गांसु गल चटज्जयक, नँद मोढा हित तंत्र॥

संधिप्रकरण ॥

लवंग+अलि=लवंगालि (अर्थ) लवंग+लवंग जोकि मसाले में डाली जाती है॥ अलि (अर्थ) सखि॥

अन्वय ॥ १८ ॥

[१] लवंगालि [२] वाड़ज्जयकि, [६] लिखु [३] भोजिक [४] दल [५] मंत्र।
[७] ललनि [९] गांसु [८] गल [१२] चटज्जयक, नँद [१०] मोढा [११] हित [१३] तंत्र॥

प्रसंग ॥ १८ ॥

एक सखी जोकि श्रीकृष्ण सनेह के वियोग में महाव्याकुल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

होरहीथी उसकी आकुलताको देखकर एक उसकी मित्र सहेलीने यह कहा कि अरी बीर तू काहेके वास्ते अपनाशरीर तुजाये डालती है मैं तुझे श्रीकृष्णचन्द को वश करलेने के तईं एक सरल उपाय बतलातीहूं सो तू कर देख कैसी जल्दी वह तेरे वशमें होजावें सुनु॥

१ २ ३ ४ ५
टीका ॥१८॥(हे) सखि लौंगफूलदारसे भोजपत्रपर (मोहिनी) यंत्र
६ ७ ८
लिखकर व मुद्रित करके ॥ (सो हे) प्यारी (उसे तू अपने) कंठमें
९ १० ११ १२ १३
बांधले नन्दकुँवरकी प्रीतिको जल्दी सिद्ध करनेवाला (यही) यंत्र है॥ (खैर इसका फल देखना जो तेरी कामना पूरी होजावे तो कुछ मेरा भी मीठा मुँहकराना ज्यादा क्या कहूं) ॥ इति ॥

अथ पंचगौड़ब्राह्मणस्य जातिकालंकार वर्णन ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ सारस्वत ॥ २ ॥ कान्यकुब्ज व कनोजिया ॥ ३ ॥ गौड़ ॥ ४ ॥ उद्गल ॥ ५ ॥ मैथिल ॥

अथ विप्रवन्दनाफल वर्णन ॥

दो० ॥ १९ ॥ सारस्वतः द्विजनमुललन, कनोजियारे गौर।
जगउदगलौ फसल करहिं, मयथल सुखसबठौर॥

संधिप्रकरण ॥

॥ १ ॥ कन + उजियारे=कनोजियारे (अर्थ) क्या नहीं लक्ष्य होसक्ता है ॥ १ ॥

अन्वय ॥ १९ ॥

३ ४ ५ ६ १ ७ ८ ९ २
सार स्वतः द्विज नमु ललन, क न उजियारे गौर ।
११ १० १२ १३ १४ १७ १८ १९ १५ १६
जग उ दगलौ फसल करहिं, मय थल सुख सब ठौर॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

टीका॥ १६ ॥ (हे) [१]प्यारे [२]बिचार करना चाहिये (कि जो जीव) [३]मुख्य [४]अपनेशरीरसे [५]ब्राह्मण को [६]प्रणाम करते व पूजते हैं (उनको) [७]कौनसा दुस्तर व कठिन पदार्थ है (जो) [८]नहीं [९]प्राप्त होसक्ता है॥ [१०]निश्चयकरके [११]संसारके [१२]झगड़े और [१३]जंजाल [१४]दूरहोजाते हैं (और) [१५]हरेक [१६]जगहपर [१७]सहित भूमिभवनादिक ऐश्वर्य्य (प्राप्त होते हैं) (यानी जो ब्राह्मणको मानतेहैं उन्हें कोई सुखकी कमताई नहीं रहती है)॥ इति॥

अथ अष्टवंश सारस्वत ब्राह्मणों का जात्यालंकार वर्णन॥

जात्यनुमान संख्या॥ ८॥

॥ १ ॥ मिश्र व मिसुर॥ २ ॥ त्रिपाठी व तिवारी॥ ३ ॥ योतिशी व जोयशी ॥ ४ ॥ पाधा व उपरोहित आचार्य्य ॥ ५ ॥ भारद्वाजी + भारद्वाज कुलजाः ॥ ६ ॥ कुल्ल व वेदज्ञ ॥ ७ ॥ पाठक + अध्यापक, पुराण पाठी ॥ ८ ॥ सन्ड+वेदज्ञ शिरोमणि॥

आशीर्वाद॥

दो०॥ २० ॥ मिसुर तिवारी जोयशी, ललन उपाधा खंड।
भारद्वाजिओ कुल्ल सुख, हो पाठक श्रुति संड॥

अन्वय॥ २०॥

१ २ ४ ३ ५ ६ १० ११
मि सु रतिवारी जो यशी, ललन उपाधा खंड।
६ ७ ८ १२ १३ १७ १६ १५ १४
भार द्वा जिओ कुल्ल सुख हो पाठक श्रुति संड॥

प्रसंग॥ २०॥

जिससमय सर्व बंधुयुत श्रीरामचन्द्रजी महाराज जनकराजके

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यहां मिथिलापुरमें विवाहने को गयेरहे तौ नगरनारियों व सरहजसारियों की प्रेमभरी सेवा सुश्रूषासे प्रसन्नहोकर उनको यह आशीर्वाद देतेभये कि॥

टीका॥२०॥ [१]मिथिलापुरकी [२]सुन्दरी [३]जौन [४]प्रीतिवती [५]सुकीर्तिनी हैं (उन सबोंको हमारा) [६]अत्यन्त करके [७]आशीर्व्वाद है (कि) [८]चिरंजीवरहें (और) [९]पुत्रों के (न उत्पत्तिहोनेकी) [१०]व्याधा से [११]रहित हो यानी दूरकरके [१२]सर्व्वत्र [१४]आनन्दयुति [१३]पूजनीय [१५]वेद [१६]पाठनी [१७]होउ॥ इति॥

अथ पचाधेसारस्वतब्राह्मणों का जात्यालंकार प्रस्तार वर्णन॥

जात्यनुमानसंख्या॥ ५॥

॥ १॥ कपूरिये॥ २॥ कालिये॥ ३॥ मालिये॥ ४॥ जेतिली॥ ५॥ मोहिले॥

प्रश्नोत्तरीदोहा॥ २१॥

कपूरिये यशुकालिये, नाम मालिये नाम।
ललन जेतलीनै सुकृति, मोहिलेय घनश्याम॥

अन्वय॥ २१॥

[१]क [२]पूरिये [३]यशु [४]का [५]लिये, [६]नाम [८]मा [७]लिये [९]नाम।
[१०]ललन [११]जेत [१३]लीनै [१२]सुकृति, [१५]मोहि [१६]लेय [१४]घनश्याम॥

प्रसंग॥ २१॥

सर्व्व सज्जन महाशयों को विचार कर इस बातपर ध्यानदेना

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चाहिये कि यह मानुष चोला चौरासी लक्ष योनियों को भोगकर के तब बड़े भागों से प्राप्तहोताहै और तिसपरभी उच्चोत्तम कुल में जन्मपाकर साक्षर, धनवान् व कुलवान् का होना सर्व्वोपरि दुस्तर बात यहहै और होकर भी इस दुर्लभ नरतन कि जिस इसी तन से साक्षात् ईश्वर स्वरूप जीव होसक्ता है फिर इसपर अपने आपको भूलवश होकर भूला रहकर अनेक प्रकार के संसारी क्लेश सहकर अंतमें फिर चौरासी की फांसी की गांसी में फँसना यह कौनसी चतुराई, भलाई व बड़ाईकी वार्ता है नहीं इस नरतनसे वह कमाई करना तो निश्चयही करके उचित है कि जिस करतूत के द्वारा यह तो जानसकै कि परमेश्वर की रचीहुई मायारूपी संसार नगरी में आकर मुझे क्या करना योग्यहै देखो ॥

अथ प्रश्नोत्तरी टीका ॥ २१ ॥

प्रश्न ॥ (संसार में जन्म पायकर) [१] क्या [२] कमाउनाचाहिये ॥

उत्तर ॥ [३] कीर्त्ति ॥ प्रश्न ॥ (कीर्त्ति कमाउने से) [४] क्या [५] मिलताहै ॥

उत्तर ॥ [६] नामवरी (कि जिस नामवरीके) [७] मिलने [८] में [९] प्रशंसा (प्राप्त होती है कि जिस प्रशंसा के प्राप्त होनेही से सुर नर मुनि कवि कोविद वेदादिक उस जीवको धन्यवाद देते हैं और फिर कैसी उत्तमताहै कि हे) [१०] प्यारे [११] जितना [१२] अच्छेकाम परमार्थ दान दया धर्म्मादिकहैं (उनमें जो) [१३] लौलीनहोवै (तौ) [१४] परमेश्वरको भी [१५] प्रसन्न व [१६] वशीभूत करसक्ता है ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पश्चाधे सारस्वत ब्राह्मणों का जात्यालंकार वर्णन ॥

जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ कोमरिये ॥ २ ॥ झिंगरन ॥ ३ ॥ तिक्खे ॥४॥ भट्ठरिये॥ ५ ॥ वग्गे ॥ प्रश्नोत्तरी दोहा ॥ २२ ॥

कोमरिये झिंगरन गहै, तिक्खा श्रीहरि ध्यान।
भट्ठरियासत सुख ललन, वगेरदें भगवान ॥

अन्वय ॥ २२ ॥

१ २ ३ ७ ४ ५ ६
को मरिये झिंगरन गहै, तिक्खा श्रीहरि ध्यान।
९ ११ १२ १० १३ ८
भट्ठ रियासत सुख ललन, वगेरदें भगवान ॥

प्रसंग ॥ २२ ॥

इस संसारमें आकर जगत्की जो करणीय अकरणीय कृत्तियां हैं उनको इस हेतु जानलेना अत्यन्त करके उचितहै कि केवल इसी नरतन की सुफलिक मुख्य शोभा एक ईश्वरका स्मरण करनाही परम सुखदायक मनुष्य के वास्ते है तौ फिर तो जरूरही करके जानलेना चाहिये कि ॥ टीका प्रश्नोत्तरी ॥ २२ ॥

प्रश्न ॥ (इस संसार असारमें जन्म धारणकर) किसपदार्थ[१] का परित्याग[२] करना चाहिये ॥ उत्तर ॥ (जगत्के) प्रपंचों[३] का (त्याग करना और) मुख्य[४] नारायण[५] का स्मरण[६] करना[७] चाहिये ॥ (कि जिसके भजन करनेके प्रतापहीसे वह) परमेश्वर[८] (सुन्दर) स्त्री[९] (व प्रतापी) पुत्र[१०] (और) सर्व्व[११] आनन्दों[१२] की वृद्धीकर[१३] देताहै व करे रहता है ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की

बंशावली प्रारम्भः ॥

भारद्वाज गोत्रीय शुक्लजात्यनुमान संख्या ॥ ७ ॥

॥ १ ॥ असनी के ॥ २ ॥ धनाकरके ॥ ३ ॥ शान्त के ॥ ४ ॥ सत्यके ॥ ५ ॥ बालाके ॥ ६ ॥ मकरन्दके ॥ ७ ॥ तरीके ॥ इति ॥

दो० ॥ १ ॥ असनि धनाकरके पड़ै, शान्त सत्य गहिलेय ।
बाला सुख मकरन्द नँद, ललन तरीकरदेय ॥

अथ संधिप्रकरण ॥

धन+आकर=धनाकर ॥

अन्वय ॥ १ ॥

असनि[१] धन[२] आकरके पड़ै, शान्त[३] सत्य[५] गहिलेय[४][६] ।
बाला[७] सुख[८] मकरन्द[९] नँद, ललन[१०] तरीकरदेय[११] ॥

प्रसंग ॥ १ ॥

किसी नायक का कुछ धन चोरी में जाता रहने से उसे बड़ा खेद प्राप्तहुआ तब उसका मन मलीन देखकर उसका जो मित्रहै सो उसे यह शिक्षा देताभया कि हे मित्र इनबातों में क्या धराहै कुछ रंज करने से धन मिलतोजायेहीगा नहीं देखो अगर ईश्वर किसीको धनवान् करै और किसीतरहकी ॥

टीका ॥ १ ॥ भीरउछीर[१] (आफत) रुपयेपैसेकी[२] आनकर प-ड़जाय[३] (तौ) सच्च[४] (बाततो यह है कि) धीरज[५] बांधनाचाहिये[६] ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(तौ निश्चय करके) [७]सुन्दर [८]आनन्दकी [९]सुगंधी से [१०]परमेश्वर (उसको फेर) [११]तरकरदेताहै ॥ (यानी धीरज धारणा वो पदार्थ है कि परमात्मा उसका क्लेश व दुःख दूरकर फिर ज्योंका त्यों धनरूपी जो सुख सो उसको प्राप्त करदेता है) ॥ इति ॥

भारद्वाजगोत्रीय शुक्लजात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ खरौली के ॥ २ ॥ भैंसई के ॥ ३ ॥ गहरौली के ॥ ४ ॥ ऊंचेगांव के ॥ ५ ॥ ऊंचे पुरवा के ॥

दो० ॥ २ ॥ [४]करत [२]खरौली [३]भैंसई, [१]गहरौलीको त्याग ॥
[६]ऊंचे[७]पुरवारे [१०]ललन, [५]मनहुं [८]तुम्हीं [९]सुखपाग ॥

अन्वय ॥ २ ॥

पदच्छेद में, भी इस दोहे के शब्दों का समान स्वरूप है इसी से नहीं लिखा जोकि ॥

प्रसंग ॥ २ ॥

एकसमय किसी सखी और नायकसे कुछ बादा बिबाद (झगड़ा) होने लगा तौ सखी उस नायक से यह बात कहने लगी कि तुम तो हर बात में कुछ ऐसी ॥

टीका ॥ २ ॥ जल्दी [१]खरापन (और) [२]मोटापन [३]जतराने[४]लगतेहौ कि [५]जानों [६]धनवान् [७]देशके (रहनेवालों में) [८]हमीं [९]सुखिया व [१०]मुखिया छैल हैं ॥ (यानी तुमतो ऐसी खरियई व अभिमान दिखलाने लगतेहौ कि मानों तुम्हारी बराबर कोई दूसरा सुखिया और शौकीना न होगा) ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भारद्वाज गोत्रीय शुक्ल जात्यनुमान संख्या॥ ६ ॥

॥१॥कनौज के॥ २॥ टेंढ़ाके॥३॥ करेजाके ॥४॥ भटपुर के॥ ५॥ नवांयें के॥ ६ ॥ नवांयें के बड़पगा॥

दो० ॥ ३ ॥कनौज के टेंढ़ा बदन, करे जात भट पूर।
सीस नवांयें बड़पगा, ललन डरे डर कूर॥

अन्वय॥ ३॥

२ ३ ४ ६ ५ ७ ८ १
कनौजके टेंढ़ा बदन, करे जात भटपूर।
१० ११ ९ १२ १५ १४ १३
सीस नवांयें बड़पगा, ललन डरे डर कूर॥

प्रसंग॥ ३॥

कोई एक सखी ने श्रीकृष्णमहाराज को मनमलीन घबड़ाये हुये जाते देखकर यह शंकावत् पूछतीहुई कि॥

१ २ ३
टीका॥ ३॥ (हे) शूरबीर (आज आप) क्या नयेनये
४ ५ ६ ७ ८
घबड़ायेहुये मुखपर मलीनता धारणकिये चलेजातेहो॥ (आपको
९ १० ११ १२
तो) बड़ेबड़े इज्जतवाले शिर नवाया करते हैं सो प्यारे (तुम
१३ १४ १५
क्या कोई) कायर कूरके भय से डरायेहुये जातेहो॥ इति॥

भारद्वाजगोत्रीय शुक्ल जात्यनुमान संख्या॥

॥१॥ चंदनपुरके॥ २॥ गलहथेके॥३॥ मनीयकाके॥ ४॥ छंगेके॥ ५॥ भानुके॥

दो०॥ ४॥ चन्दनपुरि गलहथा दै, मानमनीयकाहि।
भरित उछंगें ललनतन, भानु प्रभा सकुचाहि॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ संधिप्रकरणम् ॥

यक्क+ आहि=यक्काहि ॥ १ ॥

अन्वय ॥ ४ ॥

१ २ ३ ४ ५ ७ ८ ६
चन्दन पुरि गल हथा दै मान मनी यक्काहि।
१२ ११ ६ १० १३ १४ १५
भरित उछंगें ललन तन भानु प्रभा सकुचाहि॥

प्रसंग ॥ ४ ॥

किसी दूती ने एकरूपवती अबला को देखा तो उसकी अनोखी सुन्दरता देखकर मोहितहो श्रीकृष्ण भगवान् से उसके रूप के शोभाकी प्रशंसा करतीहुई कि देखो तो महाराज कैसी रूपवान् नवलाहै कि जिसके गातमें तो ॥

१ २ ३ ४ ५
टीका ॥ ४ ॥ चन्दन लगाहुआ (और) गले में हाथोंको डाले
६ ७ ८ ९ १०
(लाखों में) एकही (रूपके) गुमानसे भरी है ॥ कम उम्रवाली
११ १२
(लघु वैसी खुशीकी) उमंगों से परिपूर्ण (जिसके रूपको देखकर)
१३ १४ १५
सूर्य्य की शोभा भी लज्जाको प्राप्त होती है ॥ इति ॥

भारद्वाजगोत्री शुक्ल जात्यनुमान संख्या ॥ ७ ॥

१ ॥ सिकठियाके ॥ २ ॥ गूदरपुरके ॥ ३ ॥ गैंड़हाके ॥ ४॥महानेके॥ ५ ॥ महोलीके॥ ६ ॥ खौदहाके॥७॥ अजानपुरके॥

दो० ॥ ५ ॥ असि कठिया गूदरपुरा रे गैंड़हा महान।
महोलीन खौ खौ दहा भजु नँदललन अजान॥

अन्वय ॥ ५ ॥

४ ५ ६ ७ ८ १ ३ २
असि कठिया गू दर पुरा रे गैंड़हा महान।
८

१० ११ ६ १२ १५ १४ १३
महो लीन खौ खौदहा भजु नँदललन अजान॥

नायक प्रति सखिवचनम्॥

प्रसंग॥ ५॥

किसी एक बृद्धानारि जोकि नारायण की परमभक्त थी एक नायक को अत्यन्त प्रपंच विषय कर्म्मादिकों में लौलीन देख अपना सगा जानकर उसे यह उपदेश देतीभई कि॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
टीका॥ ५॥ अरे महा नीच ऐसे कठिन मल व विकार में

८ ९
फँस रहाहै॥ (कि तू दिन रात इस संसारी) हाय हाय व झगड़ों

१० ११
में अत्यन्त करके लिप्तहै (सो अब जो तू अपना भला चाहताहो

१२ १३ १४ १५
तो इन जंजालों को) छोंड़कर नादान ईश्वरको भजनकर (जि-समें तेरा परिणाम बनै) इति॥

भारद्वाजगोत्री शुक्ल जात्यनुमान संख्या॥ ३॥

१॥ नगईवाले॥ २॥ बदरकाके॥ ३॥ सकूराबादी॥

दो०॥ ६॥ नगईवाले पनकिलत, कहिअ बदरका तोर।
सकुराअबादी कुयशुकी, करि नँदललन कठोर॥

सन्धिप्रकरण॥

सकुरा+आबादी=सकुराबादी॥

अन्वय॥ ६॥

६ ७ ४ ५ १५ १३ १४ ३
न गई वालेषनकि लत, कहि अब दर का तोर।
८ ९ ११ १० १२ १ २
स कुरा बादी कुयशु की, करि नँदललन कठोर॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रसंग ॥ ६ ॥

किसी सखी से श्रीकृष्णमहाराज कहीं कुछ हँसी कर बैठे तो वह गोपाललालसे यह कहती भई कि ॥

टीका ॥ ६ ॥ (अय) नन्द[1] नन्दन[2] निर्लज्ज (अभी) तुम्हारे[3] लड़कपन[4] की आदत[5] नहीं[6] जाती है[7] (आश्चर्य है कि) सहित[8] क्लेशरूपी[9] बदनामी[10] फैलाय[11] रक्खी है[12] (तुम्हारी) पद्धति[13] व इज्जत की क्या[14] तारीफ[15] व प्रशंसा करीजावे ॥ इति ॥

भारद्वाजगोत्री शुक्ल जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

१ ॥ पाटनके ॥ २ ॥ न्यायवागीशके ॥ ३ ॥ सातन पुरवाके ४ ॥ नेवादाके ॥

दो० ॥ ७ ॥ पाटन गाहत धर्म्म की ललन न्याय वागीश ।
सातन यशु चालै समुझ कितने वादाखीश ॥

संधिप्रकरण ॥

न्यायवागी+ईश=न्यायवागीश ॥ १ ॥

अन्वय ॥ ७ ॥

पाट[4] न[5] गाहत[6] धर्म्म[3] की ललन[1] न्याय[2] वागीश ।
सा[12] तन[11] यशु[13] चालै[14] समुझ[7] कितने[8] वादा[9] खीश[10] ॥

प्रसंग ॥ ७ ॥

किसी नायक की कुचाल चलनों की चंचलता देखकर एक दूती शिक्षा देतीभई कि ॥

टीका ॥ ७ ॥ (अरे) नादान[1] न्याय[2] परित्याज करनेवालों के

स्वामी (अपने कुल) [३]मर्यादा की [४]प्रणाली को [५]नहीं [६]ग्रहण करे है ॥ (अबभी) [७]सोच [८]बहुतसे [९]इकरार [१०]गुजर तथा व्यतीत होगये [११]इस [१२]शरीर के [१३]साथ [१४]कीर्त्तीही जायगी ॥ (और कुछ नहीं इससे ईश्वर और अपने धर्म्म कर्म्मको नहीं भूलना चाहिये) इति ॥

भारद्धाजगोत्री शुक्ल जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

१ ॥ भास्करके ॥ २ ॥ बिगहापुरके ॥ ३ ॥ उमावाले ॥ ४ ॥ लवेदहाके ॥

दो० ॥ ८ ॥ [१]भास्कर [२]बिगहा [४]पुरौ [३]हित, [७]करिहै [५]उमा [६]सहाय ।
[८]लवेदहा [९]कृत [१०]मत [११]गहै, [१२]ललन [१३]पनो न [१४]सुहाय ॥

सखि प्रति सखि वचनम् ॥

प्रसंग ॥ ८ ॥

एक सखी जो कि श्रीकृष्णमहाराज से कुछ विलग व उनकी प्रीति से परहेज मानतीथी सो उसकी मित्र सहेली उसे यों उपदेश देतीभई कि हे प्यारी श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्दके स्नेहको ॥

टीका ॥ ८ ॥ [१]प्रगट करके (फिर) [२]दूरकरदिया (ऐसा तुझे नहीं मुनासिबहै) [३]प्रीतिको [४]निभाउना चाहिये [५]भगवती [६]सहायता [७]करैगी ॥ (तू) [८]वेदरहित [९]मर्य्यादा को [१०]न [११]ग्रहण करु (मुझे यह तेरा) [१२]लड़कपन [१३]नहीं [१४]अच्छामालूमहोता है ॥ (क्योंकि वोही मसल न करनी चाहिये कि, तेरी माने यार किया, मगर करके फिर छोड़ दिया ॥ इसमें सिवाय बदनामी के कुछ भलाई भी है,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नहीं प्यारी, शूर सज्जनोंका काम तो यहहै कि, किया सो किया, और खिया सो खिया ॥ बस और ज्यादा क्या कहूं कुछ चतुरों के सामने भौआ नहीं औंधाया जाताहै) ॥ इति ॥

शुक्ल जात्यनुमान संख्या ॥ ७ ॥

॥ १ ॥ दुर्गादासी ॥ २ ॥ बरसुई के ॥ ३ ॥ पुरवा के ॥ ४॥चन्दपुरके॥ ५॥ पतिहाके ॥ ६ ॥ लखीमपुरके ॥ ७ ॥ भल्लईके॥

दो० ॥ ८ ॥ दुर्ग्गा दासी वर सुइक, चँद पुरवा तो सी न।
पतिहा ललन लखीम पुंर, भल्लइ पद्धति पीन ॥

अन्वय ॥ ८ ॥

८ ९ ५ ६ ७ १ २ ३ ४ १०
दुर्ग्गा दासी वर सु इक, चँद पुरवा तो सी न।
१७ १६ १८ १४ १५ १३ १२ ११
पतिहा ललन लखी म पुर, भल्लइ पद्धति पीन ।।

सखिप्रति सखिबचनम् ॥

प्रसंग ॥ ८ ॥

एक सखी ब्रजमंडल में दुर्ग्गा स्वरूपिणी जोकि श्रीराधा जी महारानी है उनकी सेवा में वो लवलीन रहाकरती थी सो उसकी दृढ़ प्रेम प्रीति देखकर नगरनिवासिनी ब्रज भामिनी प्रशंसा करती भई कि अरी प्यारी तेरा ही जन्म इस संसार में सुफलहै और धन्य धन्यतेरी बुद्धी है हम तो जानै हैं कि ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
टीका ॥ ८ ॥ दसबीस देशों में तेरी सरीखी श्रेष्ठ सुन्दर एकभी
८ ९ १०
श्रीदुर्ग्गास्वरूपिणी राधिका चरण अनुरागिनी नहीं (होगी) ॥
११ १२ १३
(तैंने) माननीय इज्जत अच्छीप्रकार प्राप्तकी है (और तूही)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

[१४]मेरे [१५]नगर में [१६]प्यारी [१७]सुयशवान् निरखीजाती है ॥ और तेरी भक्ति मर्य्यादा को स्यावश है ॥ इति ॥

शुक्लजात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ कंजू के ॥ २ ॥ गहरी के ॥ ३ ॥ धन्नी के ॥ ४ ॥ पैकूके ॥ ५ ॥ कुमनई के ॥

दो० ॥ १० ॥ कंजूसी गहरी गही, धन्नी के पहिचान ।
पैकूरै कु मनईको, ललनि न दिजिये जान ॥

अन्वय ॥ १० ॥

[४]कंजूसी [५]गहरी [६]गही, [२]धन नीके [३]पहिचान ।
[७]पै [९]कूरै [१०]कु [११]मनई को, [१]ललनि [१२]न [१३]दिजिये [८]जान ॥

प्रसंग ॥ १० ॥

कोई एक रसिक शिरोमणि बड़ी शौखीना धनवान् रूपवती सुकुमारी थी एकदिन कोई दूती कुछ स्वारथ लग धन लेने की इच्छा करके उसके पास आई और बातों बातों में प्रकटकर अपना काम उस्से न निकलता हुआ जान उस्से यह वचन बोलतीभई कि आजकल का जमाना बड़ा खोंटा है दुनियां में मतलबीलोग बहुत रहगये हैं सो ॥

टीका ॥१०॥ (हे) प्रिया) [१]तुझने अपनी) [२]दौलतको अच्छी तरह [३]अपना जानकर [४]कंजूतपन तो [५]खूब [६]ग्रहण कियाहै ॥ [७]परन्तु यह मैं [८]तुझसे कहतीहूं (कि कोई) [९]मतिमन्द [१०]खोंटे [११]मनुष्य को [१२]मती [१३]दैडालिये॥(नहीं इस्से तो हरि हेत दानकरदेना भलाहै) इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शुक्लजात्यनुमान संख्या ॥ ६ ॥

॥ १ ॥ हरीके ॥ २ ॥ माणिक के ॥ ३ ॥ गौरी के ॥
४ ॥ नरबल के ॥ ५ ॥ कस्यपिके ॥ ६ ॥ भवदत्तके ॥

दो० ॥ ११ ॥ अरी हरी माणिक हितू, गौरिय नर बल हीय।
कस्यपि हो भवदत्त लखु, नन्दललन तजनीय॥

अन्वय ॥ ११ ॥

१ ३ २ ४ ८ ५ ६ ७
अरी हरी माणिक हितू, गौरिय नर बल हीय।
९ १० ११ १२ १३ १४ १५
कस्यपि हो भव दत्त लखु, नन्दललन तजनीय॥

सखिप्रति सखि वचनम् ॥

प्रसंग ॥ ११ ॥

एक समय बिशाखा सखी कहीं कुछ श्रीकृष्ण भगवान् से रूठ कर अपने घर में बैठरही तौ उसकी सहेली जोकि प्रभु पद सेवीथी उसको यह शिक्षा करती हुई कि ॥

टीका ॥ ११ ॥ हे[1] प्यारी माणिक[2] रत्नरूपी श्रीकृष्णचन्द्र[3] मित्र हैं[4] (क्योंकि) मनुष्यके[5] (प्रेमका) बूता[6] (अपने) मन में[7] ख्याल-[8] कर देखना चाहिये ॥ कैसी[9] भी रारधमार[10] होजाय (परंतु) संसार[11] में (उनकी प्रीतिकी) दातव्यता[12] तो देखलेनी[13] चाहिये (कहीं) गो-[14]पाललाल त्याग[15] करनेकेयोग्य हैं (तू ज्ञानवान् होकर नादान बनी जाती है) इति ॥ शुक्ल जात्यनुमान संख्या ५ ॥

॥ १ ॥ असोहके ॥ २ ॥ नभेल पुरनियांके ॥ ३ अंबरपुरके ॥
४ ॥ फतुहाबादी ॥ ५ ॥ डोभनपुरके ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो०॥ १२॥ असुह नभेलपुरनियँ छल, अम्बरपुरि हित बाल।
फतुह बाद करनो ललन, डोभन भल गोपाल॥

अन्वय॥ १२॥

५ ४ ३ १ २ ८ ९ ७ ६
असुह न भेल पुरनियँ छल, अम्बर पुरि हित बाल।
१२ १४ १३ १० १५ १७ १६ ११
फतुह बाद करनो ललन, डोभ न भल गोपाल॥

हरि प्रतिसखि वचनम्॥

प्रसंग॥ १२॥

एक दूती श्रीकृष्ण महाराजको छल बल सयान सागर समुझ कर किसी श्याम सनेहिन सखी की ओर से यह प्रार्थनावत् वचन कहतीभई कि हे प्यारे जो कोई किसी से प्रीतिमानताहोय उससे॥

१ २ ३ ४ ५
टीका॥ १२॥ बहुत कपट रखना नहीं चाहिये यह अशोभित
६ ७
और अनुचित बातहै (वो) सुकुमारी तो (तुम्हारे) सनेहका
८ ९ १०
कपड़ा पहिररहीहै॥ (तौ फिर ऐसे प्रेमी के साथमें हे) प्यारे मन
११ १२ १३ १४ १५ १६ १७
मोहनलाल फरेब करना वृथा है (किसीको) रंजदेना अच्छा नहीं होता॥ इति॥

शुक्ल जात्यनुमान संख्या॥ ४॥

॥ १॥ गिगासौंके॥ २॥ भटकुरिके॥ ३॥ इटावाके॥
४॥ बिहारीवाले॥

दो०॥ १३॥ हौं न विलगि गासौं ललन, कहुं सखि भटकुरिमाहिं॥
इँटा वाच चहि कोटिकहु, उरिण बिहारीहि नाहिं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

१ ४ ३ ५ २ १० ७ ६ ८ ९
दो०॥१३॥हौं न विलागि गासौं ललन, कहुँ सखि भट कुरि माहिं।
१३ १४ ११ १२ १५ १७ १६ १८
ईँटा बाच चहि कोटि कहु, उरिण विहारिहि नाहिं॥

प्रसंग १३॥

एक समय श्रीकृष्णमहाराज ने किसी एक दूती से कहिकर कोई एक अपनी प्रेमानुरागिन सखीको बुलवाया दूती उसके यहां गई तौ मालूम हुआ कि वो किसी दूसरी सखी के घरपर गई है दूती उसके खोजमें उसी सखी के मन्दिर में पहुँची जहां कि वो मौजूद थी उसको सखी समाजमें बैठी देख उसे हरि संदेशा जतरावने के बहाने चतुराई के साथ सबके सन्मुख यह वचन कहि सुनाया कि हे सुन्दरी तू पराई सभामें तो रोज बैठती उठती है और हरिदर्शन परसनको आलकस मानती है देख अब मैं जातीहूं और तेरे आचरण की प्रशंसा नारायण ढिग जाय सुनातीहूं इस वचन को सुनतेही उसे ज्ञात होगया कि महाराज ने मुझे बुलायाहै तौ उसी समय दूतीप्रति वो इस प्रवीणतासे यों उत्तर देती भई कि जिस वचन से यह प्रगट होजाय कि तू चल और मैं भी आउतीहूं यह कहती भई कि॥

१ २ ३ ४ ५
टीका॥१३॥ मैं (इस बातका) जरासा भी बुरा नहीं मान-
६ ७ ८ ९ १० ११
तीहूं शूर सखियों के समाजके सामने कहतीहूं॥ चाहें (मुझे)
१२ १३ १४ १५
करोड़ों ईंट तथा बज्र समान कड़े वचन भी कहिलेयँ (परन्तु मैं)
१६ १७ १८
गोपाललालजी से बाहिर नहींहूं॥ इति॥
९

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ द्वितीयबार दूसरा अर्थ सिद्ध करने के हेतु फिर
वही दोहा लिखते हैं

१ ३ २ ५ ४ १० ७ ६ ८ ६
दो०॥१३॥ हौं न बिलगि गासौं ललन, कहु सखि भट कुरि माहिं।
१३ १४ ११ १२ १५ १७ १६ १८
ईंटा वाच चहि कोटि कहुं, उरिण विहारिहि नाहिं॥

टीका॥१३॥ मुझे (इस बातका कुछभी) शोच नहीं है (मैं अपने) प्यारे (अपने प्रेमके) बसीभूत करसक्तीहूं (कुछ छिपाय कर नहीं) शूर सखियों की सभा में कहतीहूं॥ चाहें (मैं) करोड़ों बज्र समान कड़े वचन भी (उनसे) कहिलूं (परन्तु मुझसे कभी) गोपाललाल बाहिर नहीं हैं॥ इति॥

शुक्ल जात्यनुमान संख्या॥ ४॥

॥ १ ॥ अमावा के॥ २॥ अकब्बरपुर के॥ ३॥ गोविन्द के॥ ४॥ खमानन्द के॥

दो०॥१४॥ अमावास्याअनेह मुअ, कब्र दियो गोबिन्दु।
खमाअनँद प्रगटो ललन, बन्दिय करुणा इन्दु॥

संधि प्रकरणम्॥

अमाबास्या+अनेह=अमावास्यानेह॥ १॥ खमा+आनन्द=खमानन्द॥ २॥ अनेह अर्थ रुकावट १ खिंचावट॥ २॥

अन्वय॥१४॥

४ ५ ७ ८ ६
अमावास्यानेह मुअ, कवर दियो गोविन्दु।
६ ११ १० ३ १ २
खमानंद प्रगटो ललन, वंदिय करुणा इन्दु॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रसंग ॥ १४ ॥

जिस समय श्रीकृष्ण चन्द भगवान् अपनी भुजान के बल से छियालिस क्षोहिणी शिशुपाल समाजीयोद्धा राजकुमारोंको जीत साक्षात् श्री लक्ष्मी महारानी का अवतार जो भीष्मक कुमारी राजदुलारी श्री रुक्मिणी जी हैं तिनको बिवाहकर द्वारकापुरी में लाय बिहारतेभये किंचित् कालमें श्रीरुक्मिणीजीके पुत्र श्रीप्रद्युम्न जी उत्पन्नहुये उस समय समस्त नगर नारियां श्री प्रद्युम्न जी महाराज के दर्शनों को आईं तो सबों को पुत्र दिखरायकर रुक्मिणीजी सबों के आगे अपने भाग्य सम्बन्धी स्वामी श्रीकृष्ण भगवान् की कृपा प्रभाव की प्रशंसा करती भई कि ॥

टीका ॥ १४ ॥ (यह ईश्वरही की) [१]कृपाके चन्द्रमासरीखे [२]प्रताप की [३]बलिहारी है (कि) [४]अमावास्या के अन्धकाररूपी रुकावटको [५]दूरकर (नाशकर) [६]ईश्वर ने (उसे) [७]ज़मीन का पेवँद [८]करदिया ॥ (और मुझे) क्षेम [९]कुशलरूपी [१०]पुत्र [११]प्राप्त कराया ॥ (यानी प्रभु ऐसे भक्तवत्सल हैं कि उनकीही कृपाके प्रभाव से मुझे सुत सम्पत्ति सुख सबीकुछ प्राप्त हुआहै) इति ॥

अथ त्रिवेदी जात्यनुमान संख्या ॥ ६ ॥

॥ १ ॥ साहबके ॥ २ ॥ हरिके ॥ ३ ॥ रघुनाथके ॥ ४ ॥ मण्डनके ॥ ५ ॥ बाबूके ॥ ६ ॥ वादे के ॥

दो० ॥ १५ ॥ साँहब हँरि रघुर्नाथ यँशु, मराडनैंकरु मँमें मांझें ।
बाबू वाँदे याँद कँरु, खलनैंपने को राँझें ॥

अन्वय ॥ १५ ॥ में समान रूप ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उपदेश ॥
नायक प्रति नायक वचन ॥
प्रसंग ॥ १५ ॥

एक धुरन्धर धूर्त जिसने कि अपना समस्त धन बेश्याबाजी शराबखोरी विषयादि कर्म्मों में बरबादकर कुदशाको प्राप्तहै फिर भी असत् कर्म्मादिकों को नहीं छोड़ताथा उसका एक सुहृद मित्र जोकि बिशद वेदपाठी सभ्यजन और ज्ञानवान् था उसको नीति रीति श्रुतिसम्बन्धी वाक्य करके उपदेश देताभया कि ॥

१
टीका ॥ १५ ॥ (अरे) भैया (जो तू माताके उदर में हरि
२ ३
भजन करनेका वचन दैआया सो उस) क़ौल क़रार की सुरत
४ ५ ६
करेरहु (इस) लड़कपनको दूरकर ॥ (सर्व्वसुखदाता जो) श्री
७ ८ ९ १० ११ १२
कृष्णचन्द्र व रामचन्द्रजी स्वामी के गुणानुवाद (अपने) हृदय में
१३
बसायाकर ॥ (जिसमें कि तेरा परिणाम बनै) ॥ इति ॥

त्रिवेदी जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ रुपई के ॥ २ ॥ मकरन्द के ॥ ३ ॥ जगन के ॥ ४ ॥ परागके ॥ ५ ॥ उनैयां ॥

दो० ॥ १६ ॥ रुपइ मकरंदै बिबस, गहि छबि जगन पराग।
तरुवर ऊनैयां ललन, लहि फल लखु अनुराग ॥

अन्वय ॥ १६ ॥

२ ३ ४ ७ ५ ९ ८ ६
रुपइ मकरंदै बिबस, गहि छबि जग न पराग।
१० १३ १६ १ १४ १५ १२ ११
तरुवर ऊ नैयां ललन, लहि फल लखु अनुराग ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रसंग ॥ १६ ॥

सखिप्रति सखिवचन ॥

एकसखी अपने रूपके गुमान में भरीहुई किसी को अपने समान नहीं समझा करती थी उसका और तरीक़ा व घमंड देख कर उसकी सहोदर चतुर सखी समझावती भई कि ॥

टीका ॥ १७ (अरी) नादान[1] यौवनकी[2] सुगंधी[3] में मस्त[4] बे-होशहोकर (और) शोभारूपी[5] रसको[6] पायकर[7] मत[8] अभिमान[9] में भर ॥ (और क्या कहूं) जड़वृक्षों[10] की प्रीति[11] (को तो) देखु[12] वोभी[13] फल[14] पायकर[15] निवजाते[16] हैं ॥ इति ॥

अथ त्रिवेदी जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ भारद्वाजगोत्री सुठिआयें के ॥ २ ॥ शाण्डिल्यगोत्री इकडलाके ॥ ३ ॥ उपमन्यगोत्री बरुआके ॥ ४ ॥ उप० गो० भोर पुर गंगापारके ॥ ५ ॥ उप० गो० घरवासके ॥

दो० ॥ १७ ॥ सुठिआयें यकडलाके, बरुआ जीमन ब्याह।
भोरपुरौ घरवासके, सुफलो ललन उछाह ॥

अन्वय ॥ १७ ॥

सुठि[2] आयें[6] यकडला[1] के, बरुआ[3] जीमन[5] ब्याह[4]।
भोर[7] पुरौ[8] घर[9] वासके[10], सुफलो[13] ललन[11] उछाह[12] ॥

प्रसंग ॥ १७ ॥

श्रीकृष्णचन्द भगवान् के विवाह में भीष्मक राजा के यहां जिस समय बरातियों के राजकुमार साजशृंगार शोभाआगार

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वेदिका के नीचे जीवनवार जीमने के वास्ते बिराजमान होतेभये उस समय की छबि बिलोक मोहित हो नृपनगर नारियां परस्पर राजदुलारों के रूपकी प्रशंसा करतीभई कि अरी सखियो देखौ तो कैसें कैसे श्रीकृष्ण सँगाती कुंार शोभायमान हैं॥

टीका॥ १७॥ [१]एकै उमरके [२]सुन्दर [३]राजकुमार श्रीहरि [४]विवाह में [५]जीमने के वास्ते [६]पधारे हैं॥ (कि जिन्हों ने) [७]कच्छ से [८]नृपनगर व [९]राजमन्दिर में [१०]निवासलेकर (हमारे सबों के मनकी) [११]सुभग [१२]लालसा [१३]पूरीकरी है (धन्य धन्य यह घड़ी लग्न मुहूर्त्त और आज दिनकी सायतहै)॥ इति॥

अथ भारद्वाजगोत्री त्रिवेदी जात्यनुमान संख्या॥ ५॥

॥ १॥ कान्ह के॥ २॥ लहुरी के॥ ३॥ जेठी के॥ ४॥ सादके॥ ५॥ वैहार के॥

दो०॥ १८॥ लहुरी जेठी सादहू, कान्है रस बश भार।
ललनमती त्रिय ठग रहीं, गईं सुधि बुधि वैहार॥

अन्वय॥ १८॥

[१]लहुरी [२]जेठी [३]सादहू, [५]कान्है [६]रस [७]बश [४]भार।
[९]ललनमती [१०]त्रिय [१४]ठगरहीं, गईं [१२]सुधि [११]बुधि [८]वै [१३]हार॥

प्रसंग॥ १८॥

जिस समय श्रीकृष्ण भगवान् श्रीरुक्मिणी महारानी के विवाहनेको राजा भीष्मकके यहां गये रहे उसछिनकी शोभा निहार नर नारि अपनी अपनी दशाको भूलकर नारायण के प्रेम में वशीभूत होजातेभये सो छबि कहै हैं कि॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

टीका ॥ १८ ॥ क्वांरी जवान औ बृद्धा सबी कृष्णभगवान् के स्नेह के वशीभूत वो भोलीभाली स्त्रियां (अपनी अपनी) बुद्धी की गती बिसारकर चकित होजातीभई ॥ इति ॥

अथ उपमन्यगोत्री त्रिवेदी जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ भैंसई के ॥ २ ॥ उन्नावके ॥ ३ ॥ हाजीपूर के ॥ ४ ॥ घाटमपुरके ॥ ५ ॥ तौधकपुरके ॥

दो० ॥ १६ ॥ भैंसइ उन्नामै हशै, शठता हाजीपूर ।
घाटमपुर तौधकपुरा, ललन न मिलिये कूर ॥

अन्वय ॥ १६ ॥

भैंसइं उननामै हशौ, शठता हा जी पूर ।
घाटम पुर तौ धक पुरा, ललन न मिलिये कूर ॥

प्रसंग ॥ १६ ॥

एक सखीकी मिलापिन किसी कूर कुटिल नायक से प्रीति कर बैठी तौ उसकी मित्र सहेली उसे यह उपदेश (नसीहत) देतीभई कि देखु प्रिया जिससे तू मिलरही है ॥

टीका ॥ १६ ॥ उसके तो नामै से नीचपन प्रगट होताहै (और) हाय मूर्खता (जिसके) मनमें भरीहुई है ॥ (और) घटियाई का धाम सोभी चिमित्कार से भराहुआ (इससे हे प्रिय तेरी भलाई के वास्ते कहूंहूं कि) नादान व कुबुद्धी या मन्दमती वाले से नहीं मिलना चाहिये ॥ (आगे तुझे इख्तयारहै) ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ अग्निहोत्री जात्यनुमान संख्या॥ ६ ॥

॥ १ ॥ राजापुरके ॥ २ ॥ बदरकाके ॥ ३ ॥ चांदापुरके ॥ ४ ॥ मतिकरके ॥ ५ ॥ रामपुरके ॥ ६ ॥ ललनाके ॥

दो०॥२०॥ अग्निहोत्र राजापुरौ, चांदापुर ललनाहि।
मतकर अबदरका बिलग, रामपुरै मंशाहि ॥

सन्धि पकरण ॥

चांद+अपुर=चांदापुर ॥ १ ॥

अन्वय ॥ २०॥

[६] अग्निहोत्र [१] राजा [७] पुरौ, [२] चांद [३] अपुर [४] लल [५] नाहि।
[११] मत [१३] कर [८] अब [१०] दर [९] का [१२] बिलग, [१४] राम [१६] पुरै [१५] मंशाहि॥

प्रसंग ॥ २० ॥

अष्ट वसुओं में द्रोणधरा ब्राह्मण उनके कोई पुत्र नहीं था सो उनकी धरणी नाम स्त्री एक समय अपने पति से यह उपदेश करती भई कि ॥

टीका ॥ २० ॥ (हे) [१] स्वामी चांदा जो [२] पुत्रहै (तिस करके हमारा तुम्हारा) [३] नग्र रहित तथा शून्यहै (तौ जन्म वृथाहै कोई [४] सुख [५] नहीं (इससे) अग्निहोत्र जो [६] यज्ञ है (सो आप) [७] करैं॥ (तौ दुःख की) [८] फिर [९] क्या [१०] असलहै (ज़रा) [११] न [१२] शोचको [१३] धारण करिये [१४] भगवान् [१५] मनोकामना [१६] पूरीकरैगा। ॥ इति ॥

अथ उपमन्यगोत्री अग्निहोत्री जात्यनुमान संख्या ॥ ८॥

॥ १ ॥ दरियाबादी ॥ २ ॥ इकडलाके ॥ ३ ॥ जवाके ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

४ ॥ उज्जैनके ॥ ५ ॥ जगूके ॥ ६ ॥ जगमोदपुरके ॥ ७ ॥ विहगांव के ॥ ८ ॥ रिवाड़ी के ॥

दो० ॥ २१ ॥ दरियबादि इकडला जव, उज्जैनहिं जगमोद।
ललन बीरिवाड़ी चहैं, विहगांविय ढँग वोद ॥

अन्वय ॥ २१ ॥

२ ४ ३ १ ८ ७ ५ ६
दरिय बादि इकडला जव, उज्जै नहिं जग मोद।
१० ९ ११ १२ १५ १४ १३
ललन बीरि वाड़ी चहैं, विहगांविय ढँग वोद ॥

प्रसंग ॥ २१ ॥

किसी अबलाके पुत्र नहीं पैदा होताथा और उसका शरीर बहुत स्थूल होगया था उसने किसी एक दाई से बुलाकर पुत्र होने का उपाय पूंछा तौ दाई ने उसका नित्याहार मालूमकर यह कहा किं अरी बीर देखु तू जो जउका दरिया रोज खायाकरतीहै सो यह ॥

टीका ॥ २१ ॥ जउ[१] का दरिया[२] बराबर[३] बादी[४] (होताहै) संसारी[५] सुखको[६] (कभी) न[७] उजलाकरताहै[८] (यानी जगतमें यह शरीरको सुखरूपी फायदा नहीं करताहै) ॥ (सो हे) प्यारी[९] (जो तू) पुत्ररूपी[१०] फुलवारी[११] की चाहना[१२] करतीहोय (तौ यह) खोटे बरतावको दूरकर ॥ (यानी जउका दरिया खाना छोंड़दे) ॥ इति ॥

अग्निहोत्री जात्यनुमानसंख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ समवरीके ॥ २ ॥ खिरौवाले ॥ ३ ॥ यशरामवाले ॥ ४ ॥ करिलबाके ॥ ५ ॥ घोतावाले ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० ॥ २२ ॥ सम वरीखि रौवाल भल, नित यशुराम दिवाल।
ललन करिलवा नहिं सुमिरु,द्योता असि नदयाल॥

अन्वय ॥ २२ ॥

[२]सम [३]वरीखि [४]रौवाल [६]भल, [७]नित [५]यशु [८]राम [९]दिवाल ।
[१]ललन [१०]क [११]रिलवा नहिं [१२]सुमिरु, [१५]द्योता [१४]असि [१६]न [१३]दयाल ॥

प्रसंग ॥ २२ ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

किसी एक सखीको प्रपुंज प्रपंच कृतिमें यानी बिषयादिक कर्म्मों में लौलीन देखकर उसकी जो सनेहिन सहेली थी सो उससे प्रबोधिक वचन नम्रता युत इस प्रकार कहती भई कि ॥

टीका ॥ २२ ॥ (अरी) [१]नादान [२]बराबर [३]महीन [४]चालवाली (यानी बड़ी बड़ी दुस्तर) [५]कीर्त्ति व पद्धति [६]सुन्दर (प्रकारकर) [७]सदैव [८]रामचन्द्रजी महाराज [९]देनेवाले हैं ॥ (अथवा) वो [१०]कौनसा प्रदार्थ है कि जो (उनकी कृपासे) नहीं [११]मिलसक्ताहै (इससे हे प्रिय श्रीरामनामका) [१२]स्मरण कियाकर (क्योंकि दा ेपर) [१३]कृपाकरने [१४]वाला [१५]ऐसा देवता कोई [१६]नहीं है ॥ इति ॥

अथ बाजपेई जात्यनुमान संख्या ॥ ६ ॥

॥ १ ॥ उपमन्यगोत्री यज्ञदत्तके ॥ २ ॥ शाण्डिल्यगोत्री चंदनपुरके ॥ ३ ॥ शा० गो० बटेश्वरके ॥ ४ ॥ शा० गो० मौरहावाले ॥ ५ ॥ उपमन्य गोत्री पुरवाग्राले ॥ ६ ॥ उ० गो० प्रभुत के ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शो० ॥ २३ ॥ बाजपेइ यगदत्त नित, चन्दन सम सुख तूल ।
ललन बटेसुर मौरहा, पुरवैं प्रभुता मूल ॥

अन्वय ॥ २३ ॥

१ ७ २ ३ ४ ६ ५
बजपेइ यग दत्त नित, चन्दन सम सुख तूल ।
८ ९ ११ १० १४ १३ १२
ललन बटे सुर मौरहा, पुरवैं प्रभुता मूल ॥

प्रसंग ॥ २३ ॥

अनेक प्रकार के जो यज्ञ हैं तिनके बारे में दो विद्वानों से बात चीत होनेलगी तौ बाजपेई मखियों की प्रशंसा करतेभये कि ॥

टीका ॥ २३ ॥ बाजपेइ यज्ञ (करनेसे) हमेशः सुगंधित चन्दन सरीखे बहुतसे आनन्दोंकी दातव्यता (प्राप्त होतीहै और) सुन्दर गिनेहुये (ब्रह्मा विष्णु महेश यह तीनों) मुखिया देवता मुख्य (जो) ऐश्वर्य्य (है तिसकी) प्राप्तीकराते हैं ॥ इति ॥

बाजपेई जात्यनुमानसंख्या ॥ ६ ॥

॥ १ ॥ गोपी के ॥ २ ॥ मथुराके ॥ ३ ॥ शा० गो० गोपालपुर के ॥ ४ ॥ ऊंचेके ॥ ५ ॥ खालेके ॥ ६ ॥ शा० गो० असनी के ॥

दो० ॥ २४ ॥ गोपिनाथ मथुरापते, भजु गुपाल ललनेश ।
ऊंचेखाले पग पड़े असनि न ब्यापै लेश ॥

उपदेश ॥

कलिबिच सार । भजन मुरारि ॥

टी० ॥ २४ ॥ (अरे) मूर्खों में शिरोमणि ब्रजगोपिकान के

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पूजनीय श्री [३] मथुरापुरी के स्वामी [४] श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् का [५] भजन कियाकर ॥ (तौ) [६] ऊंचेनीचे [७] पैर [८] पड़जाने से भी [९] किंचित् मात्र ज़राभी [१०] दुःख [११] नहीं [१२] मिलसक्ताहै ॥ इति ॥

बाजपेई जात्यनुमान संख्या ॥ ७ ॥

॥ १ ॥ पीथाके ॥ २ ॥ ताराके ॥ ३ ॥ पीतकरके ॥ ४ ॥ हीराके ॥ ५ ॥ रामचन्द्रवाले ॥ ६ ॥ बेणीदत्तके ॥ ७ ॥ धन्नीके ॥

सूचनिका ॥

पीतकरतही राम ॥ अग्रे यह दोहे के चौथ्याई चरण से तीन जाती निकलती हैं ॥ यथा ॥

पीतकरके ॥ १ ॥ हीराके ॥ २ ॥ रामचन्द्रवाले ॥ ३ ॥

दो० ॥ २५ ॥ पापीथा तारा बधिक, पीत करतही राम।
बेनी के धन्नीक यशु, दशरथ ललन ललाम ॥

अन्वय ॥ २५ ॥

[११] पापी [१३] था [१४] तारा [१२] बधिक, [९] पीत [१०] करत ही [८] राम।
[४] बे [५] नीके [६] धन नीक [७] यशु, [२] दशरथ [३] ललन [१] ललाम ॥

प्रसंग ॥ २५ ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

किसी एक समय एक अनन्य हरिभक्त सखी कोई एक कामिनी से श्रीरामचन्द्रजी महाराज के प्रताप की प्रशंसा करती भई कि हे प्यारी देखु ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

टीका ॥ २५ ॥ सुन्दर[1] दशरथजीमहाराज[2] के पुत्र श्रीरामचन्द्रजी[3] सो वो[4] (कैसे) सुखदायी[5] हैं (और उनके) धन्यवाद[6] सुन्दर गुणानुवादों[7] कोहै ॥ (कि) रघुनाथजीमहाराज[8] (के नाम से) स्नेह[9] लगातेही[10] (उन्होंने महा) अपराधी जो मारीच[11] नामक बहेलिया[12] रहा[13] (उसको) उद्धार[14] करदिया ॥ (ऐसे भक्तवत्सल भगवान्‌को जिसने नरतन पायकर नहीं स्मरण किया उसको कोटिशः धिक्कारहै) ॥ इति ॥

बाजपेयी जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ प्रभृति के ॥ २ ॥ हाजीपुरके ॥ ३ ॥ मौजमाबादी ॥ ४ ॥ बाजपेयीपुराके ॥ ५ ॥ गौराके ॥

दो० ॥ २६ ॥ कल्हा प्रभृति हाजीपुरी, अघत मौजमाबाद।
ललन बाजपेई पुरा, गौरा नित सुख याद ॥

अन्वय ॥ २६ ॥

१४ १५ १० १६ १७ ११ १३ १२ १८
कल्हा प्रभृति हा जी पुरी, अघ तमौ जमा बाद।
१ ५ ६ ३ ४ ९ ७ ८ २
ललन बाज पे ई पुरा, गौरा नित सुख याद ॥

प्रसंग ॥ २६ ॥

नायक प्रति सखि वचनम् ॥

एक समय किसी अपने मित्र को एक सखी यह उपदेश देती भई कि बड़े आश्चर्य्य की बात है ॥

टीका ॥ २६ ॥ (हे) प्यारे[1] विचार[2] देखना चाहिये कि इसी[3] नगर[4]

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

में घोड़े (की सवारी) पर (सवार होकर तुमने) हमेशः आनन्द भोगकिया (और प्रतिष्ठा य नी इज्जत पाई परन्तु अब इसी देशसे तुमने) ॥ अफ़सोसहै कि पापके बृन्द अंधकाररूपी शत्रुता इत्यादि दुश्मनाई वगैरः (अपने) जीसे कररक्खी है (सो यह) बृथा है फ़िज़ूलहै (इस चारि दिन की ज़िन्दगी में सबोंसे हिलना मिलनाही सुखदायी है ज्यादा क्या कहूं) ॥ इति ॥

बाजपेयी जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ नखलौ के ॥ २ ॥ पुरवावाले ॥ ३ ॥ बीसा के ॥ ४ ॥ चिलौला के ॥ ५ ॥ तिरमल के ॥

दो० ॥ २७ ॥ नखलौ के पुरवा ललन, बसिये बिस्वाबीस ।
वेद बिरंचि लौ लाहकी, तिरमल नित सुख खीस ॥

अन्वय ॥ २७ ॥

न खलौके पुरवा ललन, बसिये बिस्वाबीस ।
वेद बिरंचि लौ लाहकी, तिर मल नित सुख खीस ॥

प्रसंग ॥ २७ ॥

जिस समय कंस राजा श्रीकृष्ण भगवान् के मारने के वास्ते बहुत से उपायकर अनेक बलवान् बड़े २ राक्षसों को भेजकर हारगया तब एक दिन सवालाख कमल के फूल नँदबाबा से मँगवाये तिन फूलों के ताईं यशोदानन्दन गेंद निकालने के बहाने कालीदह में कूद कालीनागको नाथ पुष्प उसके शीश

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पर लदाय गोकुल में आये और कृष्ण महाराज को मथुराधिपति कंसने अक्रूर की मारफत बुलवाया तौ जब कि ग्वाल बाल बलदेवजी के संयुक्त गोपाललाल मधुवन पुरीको पधारे तब पुत्र बिछोह संताप में यशोदाजी महारानी ठंढी श्वासभरकर व्रज बनितन प्रति यह वचन कहती भईं कि परमात्मा सबको कुसंगति से सदा बचाये रक्खे और ॥

टीका ॥ २७ ॥ इस में ज़रा[१] भी सन्देह नहीं है (कि चाहे) छोटे[२] ग्राममें[३] निवास[४] करलेय (लेकिन) दुष्टके[५] (नगरमें कभीभी) नबसै[६] ॥ (क्योंकि) वेद[७] वर्णन करैहै (कि) सुख[८] (कि जो) लगनहै[९] सो[१०] दुःख में तैरकर[११] यानीप्राप्त होकर सदैव[१२] आनन्दका[१३] बिनाश[१४] होजाताहै ॥ इति ॥

बाजपेयी जात्यनुमान संख्या ॥ ६ ॥

॥ १ ॥ कासीरामके ॥ २ ॥ भौजियावाले ॥ ३ ॥ मनीरामके ॥ ४ ॥ खटलहाके ॥ ५ ॥ आंकिनके ॥ ६ ॥ मांझगामके ॥

दो० ॥२८॥ कासीराम न हठ ठही, भौजियना मनि राम।
खटलहरारिबिरचिललन, का आंकिनबसमँझगाम ॥

संधिप्रकरण ॥

का + आंकिन=कांकिन (अर्थ) क्या समझ रक्खा है ॥

अन्वय ॥ २८ ॥

६ ७ ९ ८ १० ३ २ ४ ५ १
का सी रामन हठ ठही, भौ जिय ना मनि राम।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

[१६] खटलह [१७] रारि [१८] विरचि [११] ललन, [१२] कांकिन [१५] बस [१४] मँझ [१३] गाम ॥

प्रसंग ॥ २८ ॥

किसी भामिनी का भरतार नगर मँझार अत्यंत रारि धमार मचाया करताथा सब लोग उसे समझाया करते थे वह नहीं मानता था तब एक दिन उसकी स्त्री उसे समझाउतीभई कि हे स्वामी ॥

टीका ॥ २८ ॥ बड़े [१] आश्चर्य्य की बातहै (कि ज़रा भी तुम्हारे) [२] मनको डर व [३] लिहाज़ [४] नहीं [५] मालूमहोती है (ऐसी) [६] क्या [७] मीठी [८] जिद्द (है जो) [९] हृदय में [१०] ग्रहण करक्खी है ॥ [११] प्यारे (तुमने) क्या [१२] समझरक्खाहै कि [१३] शहर [१४] में [१५] रहिकर (और सबों से) [१६] अनेक याने परवार [१७] झगड़े फसादों का पैदाकररक्खा है ॥ (इस में कौन भलाई है) ॥ इति ॥

अथ पाठक जात्यनुमान संख्या ॥ ६ ॥

॥ १ ॥ शान्डिल्यगोत्री नभऊ के ॥ २ ॥ शा॰ गो॰ गजाधर के ॥ ३ ॥ चौसा के ॥ ४ ॥ शिवदत्त के ॥ ५ ॥ धनवामऊ के ॥ ६ ॥ बिनवा मऊके ॥

दो॰ ॥ २९ ॥ नभउ गजाधर पाठकनु, चौसाके शिवदत्त ।
धन वामौ बिनवा मऊ, अनँदे ललन बुधिमत्त ॥

अन्वय ॥ २९ ॥

[४] न [३] भउ [१] गजाधर [२] पाठकनु, [६] चौ [७] साके [५] शिव [१५] दत्त ।
[९] धन [१२] वामौ [१०] बिनवा [११] मऊ, [८] अनँदे [१४] ललन [१३] बुधिमत्त ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रसंग ॥ २९ ॥

श्रीहरिभजनीकों का प्रताप वर्णन ॥

जौन मनुष्य का चोला पायकर श्रीनारायणनाम परायणहैं उन्हें उत्तम से उत्तम ऐसे ऐसे पदार्थ प्राप्त होते हैं ॥

१ २
टीका ॥ २९ ॥ (जौन) ईश्वर का स्मरण करनेवाले हैं (तिन्हें
३ ४ ५ ६
किसीतरह का कहींपर) डर नहीं महादेवजीने (उन्हें) चारौतरफ
७ ८ ९ १० ११ १२ १३
सुयश सुख संपत्ति चुनीहुई मेंसे (सुरूपवान्) स्त्री और बुद्धि-
१४ १५
मान् पुत्र दैरक्खे हैं ॥ इति ॥

पाठक जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ उप० गो० जानापुरी के ॥ २ ॥ उप० गो० मौरायें के ॥ ३ ॥ छींटपुरके ॥ ४ ॥ आमताराके ॥ ५ ॥ मन्धनाके ॥

दो० ॥ ३० ॥ मन मुराद जानापुरी, मौरायें ललनात।
पूर्व्व छींट पुरआमता, रामंधनादरात ॥

सन्धिप्रकरण ॥

धन+अदरात=धनादरात (अर्थ) धन्य सन्मान दिलवाना ॥

अन्वय ॥ ३० ॥

२ ३ १ ४ ५ ६
मन मुराद जाना पुरी, मौरायें ललनात।
८ ९ ११ १० १२ ७ १३
पूर्व्व छींट पुरआ मता, रामं धन अदरात ॥

प्रसंग ॥ ३० ॥

किसी हँसमुख नायक को आंख चोरी से जाता हुआ देख एक रसिक चतुरानारि ने हँसकर उससे यह वचन कहती भई कि ॥

११

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

टीका ॥ ३० ॥ (हां हां साहब) [१]समझलिया (ईश्वरने तुमको मान रक्खाहै यानी ईश्वरने तुम्हारी) [२]दिलकी [३]ख्वाहिश [४]पूरीकर रक्खी है सोई किसीको आंखतले नहीं लावतेहौ यानी सोई ऐंठे गुइँठे [५]अकड़ातेहुये [६]अठलाते जातेहौ ॥ [७]धन्य [८]पूर्व्वजन्म का [९]पुण्यहै (कि जो अपनी) [१०]सलह [११]देकर [१२]परमेश्वर से [१३]सन्मान दिलवाउताहै ॥ इति ॥

पाठक जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ उप० गो० अगई तथा अगुई के ॥ २ ॥ उप० गो० सेदूपुरके ॥ ३ ॥ उप० गो० बैतुवामऊके ॥ ४ ॥ उप० गो० नसुराके ॥ ५ ॥ उप० गो० शाहाबादी ॥

दो० ॥ ३१ ॥ अगुई से ढूंढ़त फिरत, बैतुवामऊ भीसि ।
पानसुरा ज्यहिको ललन, शाह अबादी खीसि ॥

अन्वय ॥ ३१ ॥

[३]अगुई से [६]ढूंढ़त [७]फिरत, [१]बै तु [२]वाम [४]ऊभी [५]सि ।
[१०]पान [९]सुरा [८]ज्यहिको [११]ललन, [१२]शाहाबादी [१३]खीसि ॥

प्रसंग ॥ ३१ ॥

किसी नायक ने कोई एक सुकुमारी को सुरूपवती जानकर एक दूती से उससे प्रीतिकराय देनेके बारे में कहा तौ वह उसका चालचलन अच्छा न देखकर नायक प्रति कहती भई कि वह तो बदचलनहै उसको मिलकर कुछ नफा न होवेगा क्योंकि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

टीका ॥ ३१ ॥ वहतो [१]औरत [२]बहुत[३]दिनों से [४]घबड़ाईहुई [५]सी (मित्रकी) [६]तलाश में [७]फिराकरती है (क्योंकि) [८]जिसको [९]शराब का [१०]पीना [११]प्यारा (मालूम पड़ताहै उसके सामने) [१२]बादशाही भी [१३]क्याचीज़ है (यानी वो शराबिन औरत है उससे मिलना अच्छा नहीं) ॥ इति ॥

अथ तिवारी जात्यनुमान संख्या ॥ ७ ॥

॥ १ ॥ बोधी के ॥ २ ॥ महरंगपुरके ॥ ३ ॥ श्रीपति के ॥ ४ ॥ बिनौरके ॥ ५ ॥ बरुआके ॥ ६ ॥ धँतुराके ॥ ७ ॥ कठोर के ॥

दो० ॥ ३२ ॥ नहिं बौधी महरंगपुरि, श्रीपतिश पथ बिनोर ।
बरुअ तिवारी ललन प्रिय, ना धँतुरा न कठोर ॥

अन्वय ॥

[४]नहिं [१]बौ [२]धी [३]मह रंग पुरि, [५]श्रीपति [६]शपथ [७]बिनोर ।
[१५]बरु [९]अति [१०]वारी [८]ललन [११]प्रिय, [१२]ना [१३]धँतुरा न [१४]कठोर ॥

प्रसंग ॥ ३२ ॥

किसी नायक ने किसी एक सुन्दरीको भोलीभाली समझकर उसके साथ शादी करने के वास्ते एक दूती से कहा तौ वह दूती स्त्री के बारे में यह कहती भई कि ॥

टीका ॥ ३२ ॥ वह तो स्त्री कुछ भी सुरूपवान् नहीं है ईश्वरकी कसम (वो तो सब अबलाओं की बिनाउन यानी महा) कुरू-पाहै ॥ (हे) प्यारे (कोई अछूता धन यानी) अत्यंत क्वांरी चतुर दुलारी (जो) न तो मोटी ताज़ी होय (और) न निर्मो-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हीहोय (उसके साथ अपना) विवाहकर (जिस में कुछ सुख प्राप्तहोय)॥ इति॥

तिवारी जात्यनुमान संख्या॥ ५॥

॥१॥ धनञ्जई के॥ २॥ गुपालपुरके अथवा गुपालवाले॥ ३॥ दयालपुर के॥ ४॥ सखरेजके॥ ५॥ आनन्दके॥

दो०॥३३॥शील सारि बहु धनञ्जइ, ज्यहि गुपाल तन सोहि।
त्यहि दयाल नेहे ललन, सखरेजानँद होहि॥

अथ संधिप्रकरणम्॥

सखरेज + आनँद=सखरेजानँद (अर्थ) सौंपाया हुआ सुख॥ १॥ सच्चासुख॥ २॥

अन्वय॥ ३३॥

६ ७ ३ ४ ५ २ १ ८ ९
शील सारि बहु धनन् जइ, ज्यहि गुपाल तन सोहि।
१० ११ १२ १३ १४ १५
त्यहि दयाल नेहे ललन, सखरेज आनँद होहि॥

प्रसंग॥ ३३॥

हरिप्रति सखिवचनम्॥

एक समय कोई दूती श्रीकृष्ण महाराज के सन्मुख स्त्री सुधर्म्माओं के लक्षण वर्णन करती भई कि॥

टीका॥ ३३॥ (हे) भगवन् जौन (बाला) बहुतसी संपत्ति से खरीदीहुई यानी अमोल प्रीतिरूपी साड़ी (अपने) शरीरमें सुहायमान किये होय (यानी पहिरेहोय) तिस दयावान्से प्रीतिकरने में (हे) प्यारे सच्चासुख प्राप्तहोताहै॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ततः तिवारी जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ गोवर्द्धनवाले ॥ रतनपुर के ॥ २ ॥ शिउली के ॥ ३ ॥ बरगदपुर के ॥ ४ ॥ गणपतिवाले ॥ ५ ॥

दो० ॥ ३४ ॥ गोवर्द्धननिधि रतनपुरि, शिउलीला थल शैल।
नन्दललन बरगदाधर, गणपति पितु शुल छैल ॥

अन्वय ॥ ३४ ॥

गोवर्द्धन[४] निधि[१] रतन[२] पुरि[३], शिउ[५] लीला[६] थल[७] शैल[८]।
नन्द[९] ललन[१०] बर[११] गदा[१२] धर[१३] गणपति[१४] पितु[१५] शुल[१६] छैल ॥

स्तुति ध्यान श्रीकृष्णचन्द्र व श्रीमहादेवजी की ॥

टीका ॥ ३४ ॥ समुद्र[१] रत्नों[२] की नगरी[३] (के निवासी) श्रीकृष्ण-चन्द्र[४] (और) श्रीमहादेवजी[५] के चरित्रों[६] का स्थान[७] कैलासपुरी[८] है ॥ नन्दनन्दन गोपाललालजी[९] सुन्दर[१०] गदाशस्त्र[११] के धारण कर-[१२]नेवाले (और) गणेशजी[१३] के पिता[१४]महादेवजी त्रिशूल[१५]के रसिया[१६] (यानी धारण करनेवाले हैं) ॥ इति ॥

तिवारी जात्यनुमान संख्या ॥ ७ ॥

॥ १ ॥ कुम्हड़ायें के ॥ २ ॥ छितावाले ॥ ३ ॥ चिलौली के ॥ ४ ॥ प्रमादपुरके ॥ ५ ॥ पैकूके ॥ ६ ॥ घाघके ॥ ७ ॥ अनहितके ॥

दो० ॥ ३५ ॥ कुम्हड़ायें डोलत छिता, जचि लौलीन प्रमाद।
पैकूरत्व ललन यही, अनहित घाघपनादि ॥

संधिप्रकरण ॥

घाघपना+आदि=घाघपनादि (अर्थ) मुरहापनइत्यादिक ॥ १ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्वय॥ ३५॥

कुम्हडायें[१] डोलत[३] छिता[२], जचि[४] लौलीन[६] प्रमाद[५]।
पै[७] कूरत्व[११] ललन[८] यही, अनहित[९] घाघपन[१०] आदि॥

प्रसंग॥ ३५॥

एक नायक किसी अपनी सनेहिन सुकुमारी से रूठगया और बहुत दिनों से उससे अनबोला साध रक्खा था एक दिन कहीं उसने अपने मित्र को जातेहुये देखा तो वह उसे बुलायकर उससे यह कहती भई कि तुम जो मुझसे॥

टीका॥ ३५॥ ऐंठेगुइंठे[१] पृथ्वीपर[२] फिराकरतेहौ[३] (सो मैंने) जानलिया[४] (कि तुम अपने रूपके) घमंड[५] में भररहेहौ[६]॥ परन्तु[७] (हे) प्यारे[८] (किसी से) प्रीति[९] न रखना (यानी दुशमनाई और) मुराहापन[१०] इत्यादि (प्रपंचों का करना) यही मूर्खपन[११] है (यानी दुनियां में किसी से बैर भाव न रखना चाहिये सब से मिलकर चलना चाहिये)॥ इति॥

तिवारी जात्यनुमान संख्या॥ ७॥

॥ १॥ सुनरी के॥ २॥ सुखीवाके॥ ३॥ दुखीवाके॥ ४॥ माधोके॥ ५॥ चित्तू तथा चत्तूके॥ ६॥ आशादत्तके॥ ७॥ दमाके॥

दो०॥ ३६॥ सुनुरि सुखीवा दुखीवा, माधो से हित पूर।
चित्तू आशा मिल ललन, दमार्द्ध दुख न प्रपूर॥

संधिप्रकरण॥

दमा + अर्द्ध = दमार्द्ध (अर्थ) आधा पलभी॥ १॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्वय ॥ ३६ ॥

३ १ ५ ४ ७ ६ ८ ६ १०
सुन रि सुखी वा दुखी वा, माधो से हित पूर।
११ १२ १३ २ १४ १५ १६ १७
चित तू आशा मिल ललन, दम अर्द्ध दुख न प्रपूर ॥

प्रसंग ॥ ३६ ॥

एक सखी अत्यन्त दुखी रहा करती थी उसको दुखित देखके कोई एक द्विजपत्नी उसको यह उपदेश देती भई कि तू अपनी हीरा सरीखी नरयोनी को पायकर वृथाकेवास्ते क्लेशोंको सहनकर निष्काम बैस बिताये डालती है यह मनुष्यका चोला वारंवार नहीं मिलता इससे हे प्रिया जो तू आनन्द भोगकी चाहना करतीहो तौ॥

१ २ ३ ४ ५ ६
टीका ॥ ३६ ॥ अरी नादान सुनले अथवा प्रसन्नमनसे अथवा
७ ८ ९ १० ११
मलीनमनसे श्रीकृष्णचन्द्रसे सनेह लगाउ ॥ (तौ) तेरे मनकी
१२ १३ १४ १५
अभिलाषा पूरीहोय (और) आधेपल (के वास्ते भी कोई) दुःख
१६ १७
नहीं सतावे ॥ इति ॥

तिवारी जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ पँचभैयाके ॥ २ ॥ जगन्नाथी ॥ ३ ॥ सखरिया के ॥ ४ ॥ अरचतके ॥

दो० ॥ ३७ ॥ पँचभैया के सामने, जगन्नाथ सौं खाय।
सखरियाय जिय ललन तब, अरचतही हुलसाय ॥

अन्वय ॥ ३७ ॥

१ २ ४ ५
पँचभैया के सामने, जगन्नाथ सौं खाय।
८ ७ ३ ६ ६ १० ११
सखरियाय जिय ललन तब अरचत ही हुलसाय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रसंग ॥ ३७ ॥

किसी नायक के झूंठ बोलनेपर उसकी मिलापिन ने उससे मिलना तर्क करदिया तौ नायक ने व्याकुलहो एक दूती की मार्फत उसे बुलवाया दूती ने जायकर जब कि उसे बहुत कुछ समझाया और हरतरह से उसकी हिम्मत बँधाई तब उसने यह कहा कि अच्छा जो तू नहीं मानती है तौ मैं इसतरह पर उससे मिलूंगी अगर वो अब॥

टीका॥ ३७॥ पंचों[१] के (रूबरू) सन्मुख[२] प्यारे[३] भगवान्‌की[४] कसमखाय[५]॥ तौ[६] (मेरे) मनको[७] यकीन[८]आवे (और उसे) पूजतेहुये अथवा प्रीति[९] करके मनभी[१०] राजीहोय[११] (और वैसे अब मुझे उसका विश्वास नहीं है)॥ इति॥

तिवारी जात्यनुमान संख्या ॥ २ ॥

॥ १ ॥ चण्डमुण्डके ॥ २ ॥ गूदरपुरके ॥

दो०॥ ३८॥ चण्डमुण्ड आरातनी, गूदरिया खलवृन्द।
निजुजन ललन रिपून को, हनिय शपथ गोविन्द॥

श्रीदुर्गास्तुति॥

टीका॥ ३८॥ (हे) चण्डमुण्डनामक राक्षसों के अपावन[१] दुष्ट[२] समाज[३] के मारनेवाली[४]॥ (मैया तेरा जो) खास[५] ललननामक दासहै[६] (तिसके) बैरियों[७] का विनाशकर[८] (तुझे) ईश्वर[९] की दुहाई[१०] है॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तिवारी जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ जंगीराबादी ॥ २ ॥ सांपी के ॥ ३ ॥ उमरी के ॥ ४ ॥ भँभुआ के ॥

दो०॥ ३९ ॥ [१]जंगि [२]राव [४]आदी [३]खलु:, [५]सांपी [६]सर [७]धरतानु।
[८]उमरि घुमरि [१०]छय [९]भँभअ [१४]बधु, [१३]सुखदा [११]सुर [१२]ललनानु॥

संधिप्रकरण ॥

जंगिराव+आदी=जंगिरावादी (अर्थ) बड़ेबड़े राजा इत्यादि १॥

प्रसंग ॥ ३९ ॥

जिस समय श्रीरुक्मिणीजी महारानी अपने बिवाह के एक दिन आगे द्विजपत्नीन के संग उमाजीकी पूजनको पधारी रहीं उस समय भगवतीको पूज यह प्रार्थना कर कहतीभईं कि हे शङ्करराजदुलारी अब मेरे ऊपर दयाल होउ और यह जो शिशुपाल सँगाती मेरे पति के बैरी महाभिमानी हरिनिन्दक ॥

टीका ॥ ३९ ॥ [१]बड़े बड़े [२]राजा (व) [३]दुष्ट [४]इत्यादि [५]सर्प सरीखे बि-षई [६]बाणों के [७]धारण करनेवाले ॥ [८]चारों तरफ से [९]भयावनी सूरतके [१०]जमाहैं (तिन्हैं हे) [११]देवताओं (व) [१२]देवांगनाओं के सुख [१३]देने-वाली नारीको प्राप्तकरु ॥ इति ॥

तिवारी जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ कुतमौहाके ॥ २ ॥ रायपुरके ॥ ३ ॥ बचनी के ॥ ४ ॥ रामनाथी ॥

दो० ॥ ४० ॥ कुतमौहा अघि रायपुर, सुन आग्रज बचनीच।
रामनाथ सौं नँदललन, द्राखि हौं बधत न मीच॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्वय ॥ ४० ॥

२ ३ ४ ५ १ ६ ६ ८ ७
कु त मौहा अघि राय पुर, सुन आग्रज बच नीच।
११ १२ १३ १० १५ १४ १८ १७ १६
राम नाथ सौं नँदललन, दुखि हौं बधत न मीच ॥

प्रसंग ॥ ४० ॥

जिस समय रुक्मिणीजी के भैया रुकमैया ने रुक्मिणीजी के बिवाहने के वास्ते शिशुपाल को बुलाया रहा उस समय रुक्मिणीजीने हरीदास ब्राह्मण के हाथ श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् के पास जो पत्र भेजा रहा उस पत्र में यह भी बचन लिखारहे कि हे स्वामी नन्दनन्दन जनदुखकन्दन ॥

टीका ॥ ४० ॥ (मेरे) नगर में कुयोग अंधकारी पापियों का राजा (मेरा) बड़ा भैया रुकमैया (जो कि शिशुपालके संग मेरा विवाह करने की इच्छा करनेवाला तिसके) खोंटे बचन सुनकर (हे) भगवन् रामचन्द्र स्वामी की कसम (लिखे कहतीहूं कि) मैं (ऐसी) व्याकुलहूं (कि मुझे) मौत भी नहीं आती है (इस से हे भगवन् जो आप मेरे प्राणों की कुशल चाहो तौ मेरी विनयपत्रिकाको पढ़कर अब जल्दीही मेरी सहायताकरो) ॥ इति ॥

तिवारी जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ राजारामके ॥ २ ॥ कठौताके ॥ ३ ॥ कन्हाई के ॥ ४ ॥ गल्हू के ॥

दो० ॥ ४१ ॥ राजा रामौतारि तुम, कठौताल कान्हाइ।
गल्हु बजावत तुमहिं पै, हो नँदललन सहाइ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्वय ॥ ४१ ॥

१ ३ ४ ६ ५ २
राजा राम औतारि तुम, क ठौ ताल कान्हाइ।
९ १० ७ ८ १३ ११ १२
गल्हु बजावत तुमहिं पै, हो नँदललन सहाइ ॥

श्रीरुक्मिणी पत्रि वचनम् ॥

१ २ ३
टीका ॥ ४१ ॥ (हे) राजा रामचन्द्र के औतार भगवन् तुमने
४ ५ ६ ७ ८ ९
क्या विचार बांधरक्खा है ॥ (मैं तो) आपही के बलपर गाल
१० ११ १२
बजाया करतीहूं (सो हे) नन्दनन्दन (अब जल्दी से मेरी) सहा-
१३
यता करो ॥ इति ॥

तिवारी जात्यनुमान संख्या ॥ ३ ॥

॥ १ ॥ बनगायें के ॥ २ ॥ हेमनाथी ॥ ३ ॥ अचलपुरके ॥

दो० ॥ ४२ ॥ बनगायें जगपाल नँद, ललन पद्म पद वन्द।
हेमनाथ तौ नित अचल, बिलसैं आ सुखकन्द ॥

सन्धिप्रकरण ॥

हेमना+अथ=हेमनाथ (अर्थ) अरे मन फिर ॥

अन्वय ॥ ४२ ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
बन गायें जग पाल नँद, ललन पद्म पद वन्द।
१० ९ ११ १३ १६ १५ १४ १२
हे मन अथ तौ नित अचल, बिलसैं आ सुख कन्द ॥

सम्बोधन ॥

१ २ ३ ४
टीका ॥ ४२ ॥ जंगल (व) गौयें (व) संसारके पालना
५ ६ ७
करनेवाले श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् के कमल (सरीखे) चरणों को

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

८ ९ १० ११ १२
नमस्कार व स्मरण कियाकर॥ तब तो फिर अरेमन सदैव कन्दके
१३ १४
समान मीठे पुष्ट जोकि नहीं नाश होनेवाले हैं सो आनन्द
१५ १६
(खुदबखुद) आनकर प्राप्तभयाकरैं॥ इति॥

अथ अवस्थी जात्यनुमान संख्या॥ ३॥

उपमन्युगोत्री शाण्डिल्यगोत्री॥

॥ १॥ अवस्थी बिल्लौराके॥ २॥ इछवरी के॥ ३॥ नभऊके॥

दो०॥ ४३॥ ललन अवसथी कछु न भे, दृग बिल्लौरा ध्यानु।
इछवरीष दिन तोर रुचि, नभउ कीन मद पानु॥

अन्वय॥ ४३॥

१ ६ ६ ७ ८ ५ ३ ४ २
ललन अवस थी कछु न भे, दृग बिल्लौरा ध्यानु।
१० ११ १२ १३ १४
इछ वरीष दिन तोर रुचि नभउ कीन मद पानु॥

प्रसंग॥ ४३॥

होली के मौसम में एक द्योस श्रीकृष्णमहाराज ने विशाखा सखी को जबरदस्ती कहीं थोड़ीसी विजया पिलाय दीन्हीं थोड़ीसी देर में जब वह उसके नशे में चकचूरहो कुछ होश में आई तब तो गोपाललाल उसकी हँसी करनेलगे सोई विशाखा सखी बोलती भई कि॥

१ २ ३
टीका॥ ४३॥ प्यारे होशमें आइये (मेरी) आंखें ही (बि-
४ ५ ६ ७ ८
ल्लीसरीखी) लालपीली पड़गई थीं (मैं) बेहोश ज़राभी नहीं
९ १० ११ १२
हुई थी॥ (यह कहिये कि) लाहुभरा बरषबरषका दिवस (और)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

[१३]आपकी [१४]इच्छा (देखकर मैंने जगभी) [१५]डर [१६]नहीं [१७]धारणकर (आपके कहने से) [१८]भंग [१९]पीलिन्हीं (और अब आप मेरी मसखरी व ठठोली करते हैं)॥ इति॥

अवस्थी जात्यनुमान संख्या॥ ६॥

॥ १॥ शाण्डिल्यगोत्री दिडरईवाले॥ २॥ शाण्डिल्यगोत्री कुड़रीवाले॥ ३॥ शा० गो० भौंजियावाले॥ ४॥ उपमन्युगोत्री परसरामवाले॥ ५॥ उप० गो० लखनाके॥ ६॥ उपमन्युगोत्री चौधरी इकडलाके॥

दो०॥ ४४॥ हृदिडरई कुड़री करत, ललन भौंजि रुचि मान।
परसराम हित लषण गे, चौधरि इकडल आन॥

अन्वय॥ ४४॥

हृदि डरई कुड़री करत, ललन भौंजि रुचि मान।
परस राम हित लषण गे, चौधरि इकडल आन॥

प्रसंग॥ ४४॥

जिससमय रामचन्द्रजी की घातसे मारीच नामक हरिण राम राम कहता हुआ पृथ्वीपर गिरा तो सीताजी महारानी राम ऐसा शब्दको सुनकर अत्यन्त खेदितहो रामचन्द्रजी की सहायता के लिये लक्ष्मणजीको भेजने लगीं वह भौजाईकी आज्ञामानकर सीताजीको रेखाकुंडलित मंडलसे बद्धकर रामचन्द्रजी के समीप चलते तो भये परन्तु फिर भी॥

टीका॥ ४४॥ रेखामंडल को खींचते हुये मनमें डराते जायँ (परन्तु रामचन्द्रजी महाराज को) पुत्र (वत प्यारे जो लक्ष्मण जीहैं सो अपनी) भौजाई की आज्ञा अङ्गीकारकर॥ लक्ष्मणजी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

महाराज रामचन्द्रजी के मिलने के ताईं चारौ तरफ (रेखाकुंडलके एकसी आन बांधकर जातेभये)॥ (आन एक प्रकार की क़सम है जिस क़सम के प्रतापसे कोई रेखाकुंडल से सीताजी को बाहर निकाल नहीं सक्काथा)॥ इति॥

अवस्थी जात्यनुमान संख्या॥ ६॥

॥ १ ॥ उप० गो० श्रवनके॥ २॥ उप० गो० गोपालके॥ ३॥ उप०गो० यज्ञके व यज्ञदत्तके॥ ४॥ शाण्डिल्यगोत्री गौरीके॥ ५॥ उप० गो० त्रिपुरारिके॥ ६॥ उप० गो० प्रभाकरके॥

दो०॥ ४५॥ श्रवनकिये[३] गोपाल[१] यशु[२], यज्ञ[४] सदृश[५] फल[६] प्राप्त[७]।
गौरी[८] त्रिपुरारी[९] ललन[१०], साक्षि[१३] प्रभाकर[१२] व्याप्त[११]॥

शिक्षा॥

टीका॥ ४५॥ श्रीकृष्ण[१] भगवान्के गुणानुवाद[२] सुनने[३] से यज्ञ जो महापुण्य[४]है (तिसके) समान[५] मनोरथ[६] सिद्ध[७]होताहै॥ (और) पार्व्वतीजी[८] (व) महादेवजी[९] (व) उमामहेशजी के पुत्र[१०] गणेशजी (व) प्रत्यक्ष[११]में जो सूर्य्य[१२]नारायण देवताहैं (सो उस प्राणीके) गवाह[१३] रहते हैं॥ इति॥

अवस्थी जात्यनुमान संख्या॥ ६॥

॥ १ ॥ शा० गो० कोषिकिवाले॥ २॥ शा० गो० सरवनके॥ ३॥ शा० गो० दरियाबादी॥ ४॥ उप० गो० गौराके॥ ५॥ शा० गो० खटोलहाके॥ ६॥ उप० गो० अमलगहिनी के॥

दो०॥ ४६॥ छल[६] कोषिकि[७] अपसर[८] बनत[९], दर[११] या[१०] बादै[१२] योगि[१३]।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गौरा कुकृति खटोलहा, अमलगहनियां सोगि ॥

प्रसंग ॥ ४६ ॥

कोई नायक किसी नागरी से अवधि उल्लंघनकर यानी वादा खिलाफ़ीकर उससे मिलने को गया तो वह उसको एक उतरी निगाहसे देख उसको आनाताना मार यह दुर्वचन कहती भई कि चलो जाओ जाओ मैंने तुम्हें खूबतरहसे ॥

टीका ॥ ४६ ॥ देखलिया कुचालों के खटोलना (यानी कु-चलनों से भरेहुये) नशेबाज़, सूम (व) कपटका खज़ाना रखने वाले (होकर और फिर सब रसिकों के) शिरोमणि बनतेहो यही लियाक़त (दशा तुम्हारी) प्रशंसा (व) तारीफ़ करने के लायक़है ॥ इति ॥

अवस्थी जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ उप० गो० माधो के ॥ २ ॥ शा० गो० कमलके ॥ ३ ॥ शा० गो० जैगांवके ॥ ४ ॥ शा० गो० अठभैयाके ॥

दो० ॥ ४७ ॥ वन्दत माधो कमल पद, जैगावें ज्यहि देव।
दहैं न अठभय आदिहू, जो नँदललनै सेव ॥

अन्वय ॥ ४७ ॥

११ ८ ९ १० ५ ७ ४ ६
वन्दत माधो कमल पद, जै गावें ज्यहि देव।
१६ १५ १२ १३ १४ १ २ ३
दहैं न अठ भय आदिहू, जो नँदललनै सेव ॥

शिक्षा ॥

टीका ॥ ४७ ॥ जौनजीव नन्दके कुँवर श्रीकृष्णचन्द्र की सेवा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पूजा करते हैं जिनकी जयजयकार देवतालोग मनाया करते हैं (तिन) गोपाललालजी के कमल पुष्पसरीखे कोमल चरणों को नमस्कार व प्रणाम करते हैं (उन्हें) आठप्रकारके संसारिक भय जो डर इत्यादि कष्टहैं (सो कभी) नहीं सताय सक्तेहैं ॥ इति ॥

अवस्थी जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ शा० गो० त्योंराशी के ॥ २ ॥ शा० गो० ब्रह्मदत्त के ॥ ३ ॥ शा० गो० मतकरके ॥ ४ ॥ शा० गो० लखनऊवाले ऊंचे के ॥ ५ ॥ शा० गो० लखनऊवाले खालेके ॥

दो० ॥ ४८ ॥ आप त्योंराशी कदन, मतकर ब्रह्महि त्याग।
ऊंचेउ खालेउ कर्म करु, रखु नँदललन सु राग ॥

चेतावनी ॥

टीका ॥ ४८ ॥ अनेक दुःखों के दूरकरनेवाले परब्रह्म परमात्मा को भूलना नहीं चाहिये ॥ (चाहें) भले बुरे कामभी करे (परन्तु) नन्दसुवन श्रीकृष्णभगवान् से सुन्दर प्रीति लगाये रहै ॥ (तौ फिर कोई ब्याधा सताय नहीं सक्ती हैं) ॥ इति ॥

अवस्थी जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ उप० गो० खेचरके ॥ २ ॥ शा० गो० रामपुरवाले ॥ ३ ॥ उप० गो० जम्बूके ॥ ४ ॥ उप० गो० खुरावाले ॥ ५ ॥ उप० गो० बड़ेके ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

४ १ २ ३ ५ ६ ७
दो० ॥ ४८ ॥ चखे चराचर राम रस, जन्नूतन सुख पाग।
१३ १४ ११ १२ १० ८ ९
खोरा हों दुख गण बड़े, नन्दललन अनुराग ॥

सम्बोधन ॥

१ २ ३
टीका ॥ ४६ ॥ (जौन) जीवजंगम रामचन्द्र स्वामी की प्रीति
४ ५
ग्रहण करते हैं (यानी उनका भजन करे हैं वह) सेवक नवीन
६ ७ ८
आनन्दों को प्राप्त करते हैं ॥ (और तैसेही) श्रीकृष्णभगवान्
९ १० ११ १२ १३ १४
के सनेह से बड़े बड़े महान क्लेशों के वृन्द चूर्णभूत होजाते हैं
(यानी नाश होजाते हैं) ॥ इति ॥

अवस्थी जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ शा०गो० लखनऊपुरवाके ॥ २ ॥ उप० गो० देवऋषि
वाले ॥ ३ ॥ उप० गो० कठौता के ॥ ४ ॥ उप० गो० कन्हई के ॥
दो० ॥ ५० ॥ लखनउ पुरवा बसहुँ जहँ, देव ऋषिन सम लोग।
कठौंताल लागी ललन, जचत कन्हाइ वियोग ॥

अन्वय ॥ ५० ॥

३ १ २ ४ ५ ६ ७ ८ ९
लख नउ पुरवा बसहुँ जहँ, देव ऋषिन सम लोग।
१० ११ १२ १३ १४ १५ १६
कठौं ताल लागी ललन, जचत कन्हाइ वियोग ॥

प्रसंग ॥ ५० ॥

सखिप्रति सखि वचनम् ॥

कोई एकसखी नन्दललनकी नटखटई से दुखितहो एक अपनी
मित्र सहेली से यहवार्ता कहती भई कि हे सखि अब तो मैं कृष्ण
दिठाई के मारे कोई ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

टीका ॥ ५० ॥ नया ग्राम ढूंढ़कर (वहां जायकर) रहूंगी जहां के देवताओं (व) मुनियों सरीखे मनुष्य (होयँगे) कहीं न कहीं तो ढंग लगही जायगा (मैं बहुत तलाशमेंहूं क्योंकि मुझे) कुछ मालूम पड़ताहै (कि अब मेरा) कृष्ण से बिछोह (होनेही वाताहै याने उनसे मेरा सत्संग छूटनेहीवालाहै) ॥ इति ॥

अवस्थी जात्यनुमान संख्या ॥ ३ ॥

॥ १ ॥ उप० गो० सुराजपुरके ॥ २ ॥ उप० गो० सिद्धनाथके ॥ ३ ॥ उप० गो० दीनानाथ के ॥

दो० ॥ ५१ ॥ सर्व सुराजपुरै सुखन, सिद्धहोयँ मन काम।
दीनानाथ सहायहो, नन्दललन वसु याम॥

अन्वय ॥ ५१ ॥

सर्वसु राज पुरै सुखन, सिद्धहोयँ मनकाम।
दीनानाथ सहायहो, नन्दललन वसु याम ॥

आशीर्वाद ॥

टीका ॥ ५१ ॥ (हे राजन् तुम्हारा) राज्य व राजधानी समस्त आनन्दों से फूलै फलै (तुम्हारे सकल) मनोरथ सुफलहोयँ ॥ (और) दीनदुखियों के स्वामी नन्दनन्दन कृष्णभगवान् (तुम पर) आठौ पहर सहायता करतेरहैं ॥ इति ॥

अवस्थी जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ उप० गो० निवलपुर के ॥ २ ॥ उप० गो० जान्ह

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

के ॥ ३ ॥ उप० गो० आनवाले ॥ ४ ॥ उप० गो० धतुरा के ॥

दो० ॥ ५२ ॥ निबलगात मुहि जानकै, आन ललन लँगरात ।
भँग धतुरा सो पिये रहत, नित अटपट बतरात ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

टीका ॥ ५२ ॥ (अरी सखि क्या कहूं) कमज़ोर समझकर मुझसे आयकर नन्दकुँवर चिल्लाया व अठलाया करता है ॥ (और कुछ वह) भांग धतूरा सा खाये (अलमस्त) बनारहताहै (मार्ग में मुझ से) हररोज़ आंयबांय बातेंकियाकरताहै यानी बेमुनासिब मसखरी किया करताहै ॥ इति ॥

भारद्वाजगोत्री पांड़ेजात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ अमरा के ॥ २ ॥ गौरा के ॥ ३ ॥ डौंड़ियाखेरे के ॥ ४ ॥ कंपिला के ॥

दो० ॥ ५३ ॥ अमरा गौरा पति सुमिर, डौंड़िय खेरे नाव ।
कंपि लगि न आवै ललन, वेगिहि पार लगाव ॥

दृढ़विश्वासनीय उपदेश ॥

टीका ॥ ५३ ॥ (अरे मनरूपी मल्लाह इस अथाह भवसागरसे) जिनका कि नहीं नाश होनेवालाहै (ऐसे जो) श्रीपार्वती जी के स्वामी श्रीमहादेव जी महाराज हैं (तिनका) ध्यानधरकर (उस परलोक की) ग्राम (व नगर) तक नौकाको खेयलैचल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(तौ हे) प्यारे[8] लरजा[9] तक[10] नहीं[11] खावे[12] (यानी धक्का व ठोकर तलक नहीं लगै और तेरी नवैया) जल्दीही[13] से उद्धार[14]होजावे ॥ इति ॥

भारद्वाजगोत्र की व्याख्या ॥

पांड़े जात्यनुमान संख्या ॥ ६ ॥

॥ १ ॥ पटियारी के ॥ २ ॥ बेला के ॥ ३ ॥ पाली के ॥ ४ ॥ खोरिके ॥ ५ ॥ लखनऊ के ॥ ६ ॥ गिगासौं के ॥

दो० ॥ ५४ ॥ कपटि[1] यारि[2] बेलागकी,[3] अपर[4] ढगाली[5] चाल[6] ।
ललन[7] खोरि[8] लखनौ[9] पड़ी,[10] तौ[11] आँगि[12] गासौं[14] जाल[13] ॥

प्रसंग ॥ ५४ ॥

हरिप्रति सखिवचनम् ॥

कोइ एक सखी यह इकरार करके महाराजसे प्रीति करती भई कि ॥

टीका ॥ ५४ ॥ (ओरे) छलकरनेवाले[1] दोस्ती[2] तो सफाई[3] की (यानी निश्छलकी ठीक होतीहै) और[4] (सब) ढोंगपनेका[5] बरताव[6] है ॥ (प्रीति तो मैं तुमसे करूंगी परन्तु हे) प्यारे[7] जो (कोई मुझे तुम्हारी) खुटाई[8] देखने[9] में भी आयजायगी[10] तौ फिर[11] (मैंभी कपटों को) अंगीकारकर[12] (तुम्हारे साथ में) फरेब[13] कियाकरूंगी[14] ॥ इति ॥

भारद्वाजगोत्र की व्याख्या ॥

पांड़े जात्यनुमान संख्या ॥ ७ ॥

॥ १ ॥ भीष्मपुरके ॥ २ ॥ बनस्थी के ॥ ३ ॥ असनी के ॥ ४ ॥ बिलासपुरके ॥ ५ ॥ बेरनके ॥ ६ ॥ शिवपुरीके ॥ ७ ॥ नाथपुरके ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

१ ४ २ ३ ७ ६ ५
दो०॥ ५५॥ भीष्म बनस्थिती असनि गृह, करविलास सुख सन्त।
८ ९ १२ १० ११ १५ १४ १३
बहुरै वे बन शिव ललन, बसहिं नाथपुर अन्त॥

अथ मुनि तप प्रभाव वर्णन॥

१ २ ३ ४
टीका॥ ५५॥ भयानक विपत्तियों का घर (ऐसे) जंगलके
५ ६ ७ ८ ९
निवासमें साधूलोग आनन्दों को भोगकर॥ फिर वो (सन्तजन)
१० ११
महादेवजी के पुत्र (जो गणेशजी हैं तिन सरीखा सिद्धस्वरूप)
१२ १३ १४ १५
होकर मरजानेपर वैकुण्ठपुरीका सुख भोगते हैं॥ इति॥

भारद्वाजगोत्र की व्याख्या॥

पांड़े जात्यनुमान संख्या॥ ४॥

॥ १॥ बक्का कनौजके॥ २॥ टेंड़ाके॥ ३॥ तूतीपारके॥ ४॥ बिरसापुरके॥

२ ३ ४ ८ १ ५ ६ ७
दो०॥ ५६॥ बक्का कनओजहिं ललन, टेंढ़ा कपट असत्य।
९ १० १२ ११ १३ १४ १५ १६
तू ती पार न पाइहै, बिरसा संग बिपत्य॥

प्रसंग॥ ५६॥

किसी सुकुमार सुन्दरी की एक शेखीखोरा महाप्रपंची नायक से प्रीति प्रचार की रीतिभांति जानकर एक दूती उसको चेतावती भई कि अरी प्यारी तू इस लफङ्गी खुदग़रज़ी से मिलकर क्या नफ़ा उठाया चाहती है मैं इस पुरुषको अच्छीतरह से जानतीहूं सुनु॥

१ २ ३ ४
टीका॥ ५६॥ अरी नादान शेखीखोरे क्या (क्या) नहीं
५ ६ ७ ८ ९ १०
भारी फ़रेब (व) झूंठ (कहि) जतराया करते हैं॥ तैं प्यारी (इससे)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

११ १२ १३ १४
नहीं पेश पावैगी (क्योंकि जोकि) रस व प्रीति करके रहित हैं
१५ १६
(उनके) सत्संगमें दुःख (ही प्राप्त होताहै इससे हे प्यारी शोच समुझकर कोई कामकरना)॥ इति॥

भारद्वाजगोत्र की व्याख्या॥

पांड़े जात्यनुमान संख्या॥ ४॥

॥ १॥ पहितिहाके॥ २॥ सोनिहाके॥ ३॥ कंतूरियाके॥ ४॥ जहानापुरके॥

दो०॥ ५७॥ साग पहितिहा पानकी, सो निहारु कहलाभ।
हित कनतूरिय ललन प्रिय, जहांनापुरी अलाभ॥

अन्वय पदच्छेद॥ ५७॥

३ २ ४ ५ १ ६ ७
साग पहितिहा पानकी, सो निहारु कह लाभ।
१४ १५ १६ १७ १३ ८ ६ १२ ११ १०
हित क न तूरिय ललन प्रिय, जहां ना पुरी अलाभ॥

प्रसंग॥ ५७॥

कोई एकसखी ने किसी धनवान् से प्रीति छोड़कर किसीबात पर एक ग़रीब आदमी से स्नेह करलिया तौ प्रथम नायक की तरफ़से एक दूती जायकर उस सुन्दरी से उसके दूसरे हितू की दरिद्रता जतराय यह कहती भई कि हे प्यारी जब कि तुझने ऐसे द्रव्यवान् सुजन सनेही को त्याग दिया तौ फिर॥

१ २ ३ ४ ५
टीका॥ ५७॥ ख्याल करले (कि) दाल भाजी खानेवाले से
६ ७ ८ ९ १० ११
क्या फ़ायदा (उठावैगी) प्यारी जहां के नुक़सान की पूरती
१२ १३ १४ १५ १६ १७
नहीं होय नादान (वहांसे तेरी) प्रीति क्या नहीं टूटैगी॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भारद्वाजगोत्रकी व्याख्या ॥

पांड़े जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ बगर के ॥ २ ॥ बररीके ॥ ३ ॥ सत्राइतपुर के ॥ ४ ॥ लखीमपुर के ॥ ५ ॥ मौराके ॥

दो० ॥ ५८ ॥ डगर बगर बररी फिरत, ललन कह्यो कछु सोग।
सब आइत जिय लखिमपुर, सिरमौरा सब योग ॥

अन्वय ॥ ५८ ॥

१४ १५ १६ ११ १२ १० १३
डगरबगर बररी फिरत, ललन कह्यो कछु सोग।
१ ३ २ ६ ६ ७ ८ ४ ५
सब आइत जिय लखि म पुर, सिरमौरा सब योग ॥

प्रसंग ॥ ५८ ॥

कोई एक सखी हर दिल अज़ीज़ यानी हर एक के मन को महाप्रिया थी कोई कारण होजाने से एक दिन वह कुछ गुस्सा में भरीहुई मनमलीन ग्राम गलीन में जारहीथी सो उस को देखकर किसी एक उसकी मिलापिन सहेली ने उससे पूंछा कि हे प्रिय ॥

टीका ॥५८॥ (सबोंके दिल में रौशन है यानी) सबके[1] मनमें[2] विदितहै[3] (कि) हर[4] तरहसे[5] मेरे[6] नगर[7] में मुखिया[8] (तुही) जांची[9] जातीहै ॥ (सो हे प्यारी आज क्या तुम्फ से) किसी[10] तरह की बात (तेरे) प्यारे[11] ने कहि सुनाई[12] (अथवा कुछ) सोच[13] (होरहा है कि जिससे तू) राहबाट[14] में गुस्सा भरीसी[15] घूम रही[16] व डोलरही है (इसका क्या कारण है) ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भारद्वाजगोत्र की व्याख्या॥

पांड़े जात्यनुमान संख्या॥ ५ ॥

॥१॥ त्रिगड़पुरके ॥ २ ॥ नारायणपुरके ॥३॥ इटौंजे के ॥ ४॥ नौगांव के ॥ ५ ॥ भद्दरसी के ॥

दो०॥ ५६॥ त्रिगड़ु नरायण सों कपट, ईटौं जेरकराय।
अपनो गावहि ललन तुहि, शुभदरसी दरशाय॥

अन्वय॥ ५६॥

त्रिगड़ु[५] नरायण[१] सों कपट[२], ईटौं[३] जेरकराय[४]।
अपनौ[८] गावहि[२] ललन[७] तुहि[६], शुभ[१०] दरसी[११] दरशाय[१२]॥

प्रसंग॥ ५६ ॥

कोई एक सुन्दरी अपने हितू से खिंच रहीथी सो नायक की ओर से एक दूती आनकर उसे समझाती है कि अरी प्यारी॥

टीका॥ ५६॥ श्रीकृष्ण[१] महाराज की (तरफ़ से तो तू) छल फ़रेबको[२] निकालडाल[५]॥ (जब) तुझे[६] (तेरा) प्यारा[७] अपना[८] बतलाने[९] लगै (तब तू) सुन्दर[१०] सुहावनी देखने[११] लायक़ जानपड़ै[१२]॥ इति॥

भारद्वाजगोत्र की व्याख्या॥

पांड़े जात्यनुमान संख्या॥ ६ ॥

॥ १ ॥ चंपापुरके ॥ २ ॥ मनोह के ॥ ३ ॥ सुसौरा के ॥ ४ ॥ पचोर के ॥ ५ ॥ सदनिहाके ॥ ६ ॥ गुलौली के ॥

दो०॥ ६०॥ चंपा पुरिन मनोहरी, सिजिया प्रभु सों राचु।
हुल पचोर सुख सदनिहा, अँगुलौलीनी जाचु॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्वय ॥ ६० ॥

४ ५ ३ ६ १ २ ७
चंपा पुरित मनोहरी, सिजिया प्रभु सौं राचु ।
११ १२ ९ १० ८ १५ १३ १४
दुख पचोर सुख सदनि हा, अँगु लौलीनी जाचु ॥

प्रसंग ॥ ६० ॥

किसी सुन्दरी के यहां महाराजका आगमन जान और उस के मन में आलस्य पहिचान उसकी संगी सहेली उससे यह कहती भई कि हे प्यारी तुझे ॥

टीका ॥ ६० ॥ नारायण की क़समहै (कि आज) सुन्दर चमेली के फूलों से चुनीहुई सेज साजु ॥ अफ़सोस आनन्द स्थली रंजोंको दूरकर (और नारायण के चरणों में) लिपटनेवाली (जो) निगाह (दृष्टि है उसे) अङ्गीकार करु ॥ इति ॥

भारद्वाजगोत्र की व्याख्या ॥

पांड़े जात्यनुमान संख्या ५ ॥

१ ॥ अमौराके ॥ २ ॥ मौरायें के ॥ ३ ॥ द्योकली के ॥ ४ ॥ वागीश के ॥ ५ ॥ नौदसी के ॥

दो० ॥ ६१ ॥ आमौरा मौरायँ दल, द्यो कलि वागीश ।
नौ दसि झुंपा ललन रचु, बन्दनवारि सरीश ॥

अन्वय ॥ ६१ ॥

३ २ ४ ५ ६ १
आमौरा मौरायँ दल, द्यो कलि वागीश ।
७ ८ ९ १० १४ १३ ११ १२
नौ दसि झुंपा ललन रचु, बन्दनवारि सरीश ॥
१५

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रसंग ॥ ६१ ॥

जिससमय रुक्मिणीजी व श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् के विवाहके वास्ते भीष्मक राजाने अपने गृहमें वेदिका बनाई तब सबलोग मालीसे यह कहते भये कि ॥

टीका ॥ ६१ ॥ (अरे प्रिय) माली[१] बौरायेहुये[२] आमके[३] पत्ते[४] (और पुष्पोंकी) ताज़ी[५] कलियों[६] के ॥ नौ[७] (नौ) दश[८] (दश) झुंपे[९] (झुंपा उसे कहते हैं जिसमें बहुतसे फूल गुथेहुये होवें) प्यारे[१०] (से यानी खूबसूरत सुन्दरसे) साथ[११] खुशी[१२] के (यानी प्रसन्नतासे) बन्दनवारी[१३] में (सुशोभितकर) बनायलाउ[१४] ॥ इति ॥

भारद्वाजगोत्र की व्याख्या ॥

पांड़े जात्यनुमान संख्या ॥ ४॥

१ ॥ हरिदासपुरके ॥ २ ॥ रावतपुरके ॥ ३ ॥ शंकरपुरके ॥ ४ ॥ बनगांवके ॥

दो० ॥ ६२ ॥ श्रीशंकर[४] हरि[५] दास[७] बर[६], बतरावत[३] मुनि[१] वेद[२] ।
देवन[१०] गावहिं[११] ललन[८] यशु[९], हर[१२] हरता[१५] भव[१३] खेद[१४] ॥

श्रीमहादेव भक्ति प्रशंसा॥

टीका ॥ ६२ ॥ सन्तजन[१] (व चारहु) निगमअगम[२] वर्णन[३] करते हैं कि महादेवजी[४] महाराज श्रीकृष्णभगवान्[५] के श्रेष्ठ[६] सेवक[७] (परम वैष्णव भक्तहैं)॥ (और जिनके) प्यारे[८] गुणानुवाद[९] देवता[१०]

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लोग[११] गाया करते हैं (सो) महादेवजी[१२] (कैसे हैं कि) संसारके[१३] दुःख[१४] दूर[१५] करनेवाले हैं ॥ इति ॥

भारद्वाजगोत्र की व्याख्या ॥

पांड़े जात्यनुमान संख्या ॥

१ ॥ ठकुरियाके ॥ २ ॥ विरसाके ॥ ३ ॥ मसबानपुरके ॥ ४ ॥ पड़री के ॥

दो० ॥ ६३ ॥ ललन ठकुरिया पद्धती, चहौं तौ बिरसा होन ।
तमस बान तजु नँदललन, सर पड़री प्रिय खोन ॥

अन्वय ॥ ६३ ॥

ललन[१] ठकुरिया[२] पद्धती[३], चहौं[४] तौ[५] बिरसा[६] हो[८] न[७] ।
तमस[९] बान[१०] तजु[११] नँदललन[१२], सर[१४] पड़री[१५] प्रिय[१३] खो[१६] न[१७] ॥

हरिप्रतिसखिवचनम् ॥

टीका ॥ ६३ ॥ प्यारे[१] (जो) ठकुराइतपने[२] की इज्जत[३] चाहतेहोउ[४] तब[५] तो (किसी से) निरस[६] तथा रूखे नहीं[७] होना[८] चाहिये ॥ (और) गुस्साकी[९] प्रकृति[१०] व स्वभाव को छोड़देना[११] चाहिये (और हे) नन्दनन्दन[१२] (जो) स्त्री[१३] शीश[१४] पड़ै[१५] (यानी मूंड़परही आनकर पड़े तौ उसे) त्यागना[१६] नहीं[१७] चाहिये (लायकवरी तो इसीको कहते हैं कि जो कोई अपने आधीनहोवै उसे अपनाउना चाहिये) ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भारद्वाजगोत्र की व्याख्या ॥

अथ दीक्षित जात्यनुमान संख्या ॥ ६ ॥

१ ॥ मौदत्तके ॥ २ ॥ मगड़ैलिहाके ॥ ३ ॥ गंगावाले ॥
४ ॥ ख्योटाके ॥ ५ ॥ जहानाबादी ॥ ६ ॥ डौंड़ियाखेरेके ॥

१ ३ ४ २ ५ ६ ७
दो० ॥ ६४ ॥ भव भौ दत मगड़ैलिहा, गंगा ख्योंटा कारि ।
१४ ८ १० ९ १२ ११ १३
करै जहाना बादि अघ, डौंड़िय खेरे पारि ॥

अथ कलि मोक्षदायिनि श्रीजाह्नवी प्रताप वर्णन ॥

१ २
टीका ॥ ६४ ॥ (यह) संसार (जोकि) राहबाटमें (दुखरूपी)
३ ४
शंका देनेवालाहै (तिस दुःखकी शंकाओं को इस कलिकालके
५ ६ ७
बीचमें) श्रीगंगाजी महारानी चीफैं करडालनेवाली हैं अथवा
८ ९ १०
दूर करनेवाली हैं ॥ (और) जगत निवासियों के पाप दूरकर
११ १२ १३ १४
(इस शरीररूपी) खेड़े से उद्धारकर निर्वृत्य करदेयहैं ॥ इति ॥

भारद्वाजगोत्र की व्याख्या ॥

दीक्षित जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

१ ॥ गाडूमऊके ॥ २ ॥ नवायें के ॥ ३ ॥ बटपुरके ॥
४ ॥ हंसरामके ॥

दो० ॥ ६५ ॥ गाडूमउ सखि प्रीति ध्वज, होय नवायें मोद ।
दुख बटपुर सुख ललन मन, हंस रामरट ओद ॥

अन्वय ॥ ६५ ॥

८ २ १ ६ ७ १२ ११ १० ९
गाडू मउँ सखि प्रीति ध्वज, होय न वायें मोद ।

१३ १४ १९ १८ १७ १६ १५ ३ ४ ५
दुख बट पुर सुख ललन मन, हंस राम रट ओट्र ॥

सखिप्रति सखि वचनम् ॥

१ २ ३
टीका ॥ ६५ ॥ (अरी) बीर मैंभी (अपने हृदयको) रामनाम
४ ५ ६ ७ ८
के भजनसे तर करके प्रेमरूपी पताका स्थापित करतीहूं (कि
९ १० ११ १२ १३ १४
जिससे कोई समय मुझते) सुख अलग नहीं होवे ॥ क्लेश नाश
१५ १६ १७ १८ १९
होकर (इस) हंसरूपी हृदयको प्यारा आनन्द प्राप्तहोवे ॥ इति ॥

भारद्वाजगोत्र की व्याख्या ॥

दीक्षित जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

१ ॥ हड़हाके ॥ २ ॥ बाबूके ॥ ३ ॥ तिवारीपुरके कुँवर ॥
४ ॥ शाण्डिल्यगोत्री अंटेरके ॥

दो० ॥ ६६ ॥ बहु हड़हा नँदललन हित, वा बूझी नहिं बात ।
एतबारिपुरके कुँवर, कीन्ह अटेरन नात ॥

अन्वय ॥ ६६ ॥

३ ४ १ २ ५ ८ ७ ६
बहु हड़हा नँदललन हित, वा बूझी नहिं बात ।
९ १० ११ १३ १२
एतबारि पुर के कुँवर, कीन्ह अटेरन नात ॥

प्रसंग ॥ ६६ ॥

कोई एक सखी श्रीकृष्ण महाराजके बियोग में अत्यन्त ब्याकुलहो अपनी ब्यवस्था किसी अपनी सहेली से कहतीभई कि हे सखि मुझे तो ॥

१ २ ३ ४
टीका ॥ ६६ ॥ श्रीगोपाललालके सनेहने बहुत ब्याकुल कर-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

डाला है (परंतु वो कैसा निर्मोही है कि) उसने (मेरा) हाल न पूंछा। निश्चयकरनीय नगर के छैलने (प्रेमरूपी) रिश्ता व सम्बन्ध (मुझसे बिलकुलही) तोड़ दियाहै ॥ (कुछ नहीं सखी इस जगत् में अब तो मुख देखी प्रीति रहिगई है सचा मिलना कठिन है)॥ इति ॥

अथ उपमन्यु गोत्र की व्याख्या ॥

दीक्षित जात्यनुमान संख्या ॥ ६ ॥

१ ॥ हतवैया के ॥ २ ॥ उमादत्त के ॥ ३ ॥ श्रीकान्त के ॥ ४ ॥ बीरेश्वर के ॥ ५ ॥ कंगू के ॥ ६ ॥ बदरका के ॥

दो० ॥ ६७ ॥ अघ हतवैया श्रीउमा, दत्त जासु श्री कान्त ।
बीरेश्वर कंगुरि ललन, बदर कार्णि वृत्तान्त ॥

अथ श्रीभगवती प्रताप वर्णन ॥

टीका ॥ ६७ ॥ मसल (यह संसार में विदित है कि) शिरोमणि शूर बीर भगवती (अपने) प्यारों को सुयशवान् करनेवाली ॥ जिसकी कि धन (व) कीर्त्ति की दातव्यता (और) पाप नाश करनेवाली श्रीपार्वतीही महारानी है। इति ॥

उपमन्यु गोत्र की व्याख्या ॥

दीक्षित जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

१ ॥ भूपा के ॥ २ पहुंवाले ॥ ३ दरयाबादी ॥ ४ ॥ ख्युरा के ॥ ५ ॥ कस्यपि के ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० ॥ ६८ ॥ भूपाला पहुँवाल शठ, दरया बादी होय।
रघुरावे सुख ललन सों, कस्यपि सुयशीकोय ॥

अन्वय ॥ ६८ ॥

१ २ ४ ३ ७ ६ ५ ८ ९
भूपाला पहुँ वाल शठ, दर या वा दी होय।
१६ १५ १० ११ १३ १४ १२
रघुरावे सुख ललन सों, कस्यपि सुयशी कोय ॥

मसल ॥

कुलटा नारि। कुटुँब दुखकारि ॥

१ २ ३ ४
टीका ॥ ६८ ॥ राजा के पास भी कुलक्षणी स्त्री होय (पर-
५ ६ ७ ८ ९ १० ११
मेश्वरने) उसे इस दशामें रक्खा होवै॥ (तौ अपने) प्यारेकीकसम
१२ १३ १४ १५ १६
कोई कैसा भी कीर्तिमान होय (उसका समस्त) आनन्द नाश
होजाताहै ॥ इति ॥

अथ कात्यायनीगोत्र की व्याख्या ॥

मिश्र व मिसुर जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

१ ॥ बदरकाके ॥ २ ॥ बैजेगांवके ॥ ३ ॥ पासीखेरे के ॥
४ ॥ आंकिनके ॥ ५ ॥ उपमन्युगोत्री देवशर्म्मा के ॥

दो० ॥ ६९ ॥ ललन बदरकाश्रम सुखद, बैजेगांव बसाहिं।
पासी खेरेहु देव सम, आकिन संत सराहिं ॥

अन्वय ॥ ६९ ॥

१ २ ३ ४ ५ ६
ललन बदरकाश्रम सुखद, बैजे गांव बसाहिं।
७ ८ ९ १० ११ १२ १३
पासी खेरेहु देव सम, आंकिन सन्त सराहिं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रीबद्रीनारायण व बद्रीनारायणसमीप निवासियोंकी बड़ाई वर्णन॥

टीका ॥ ६९ ॥ (हे) [१]प्यारे [२]बद्रीनाथजी का स्थान (अत्यन्त) [३]आनन्द देनेवाला है [४]जौनजीव (उस) [५]आश्रम में [६]निवास करते हैं ॥ (अथवा उसके) [७]निकटके [८]ग्राम (निवासी भी) [९]देवतों के [१०]समतुल्य [११]जाने जाते हैं (और) [१२]महात्माजन (उनकी) [१३]प्रशंसा करते हैं ॥ इति ॥

कात्यायनीगोत्र की व्याख्या ॥

मिसुर जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

१ ॥ टिकरिया के ॥ २ ॥ बौद्धीपुरके ॥ ३ ॥ खानीपुरके ॥ ४ ॥ मऊके ॥ ५ ॥ सिरकिणाके ॥

दो० ॥ ७० ॥ [६]देतटिकरिया [५]दै [४]वचन, [१]और न [२]बौद्धी [३]जानि।
[७]ललन [१३]बखानी [८]पुर [९]मऊ, तोरि [११]सिरकिणी [१२]वानि ॥

प्रसंग ॥ ७० ॥

किसी सखी से गोपाललाल ने उसके पास जानेको कहा वह हरि आशावद्ध अवधी पर्य्यन्त आसरे भूत होकर फिर कृष्ण महाराजके न पहुंचनेपर निराश होकर शयन विलासमें व्याप्त होती भई दूसरे दिन जबकि नँदललन लाड़िले उसको मिले तब वह उनसे हाथजोड़कर यह उरहना देतीभई कि आपकी सचावटकी बलिहारी है कल तो आपने मुझे खूबही आसरे आसरे में रक्खा तो महाराज कुछ उसको उत्तर देनेलगे तब वह यह कहती भई कि वाहरी आपकी बनावट ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

टीका ॥ ७० ॥ दूसरों[१] को मूर्ख[२] समुझकर[३] (यों) वादा[४] बदकर[५] (और अब) झूंठ[६] बोलतेहौ (यानी अपनी बातमें अब प्योंदा लगातेहौ) ॥ (चलो बस रहने दीजिये अय) प्यारे[७] (यह तो) नगर[८] भरमें[९] तुम्हारी[१०] बेढंगी[११] प्रकृति[१२] (आदत) जानीहुईहै[१३] इति ॥

कात्यायनी गोत्र की व्याख्या ॥

मिसुर जात्यनुमान संख्या ॥ ६ ॥

१ ॥ नलहारपुरके ॥ २ ॥ महंगूके ॥ ३ ॥ सरबरके ॥ ४ ॥ श्यामकरनके ॥ ५ ॥ हमीरपुरके ॥ ६ ॥ गलहथेके ॥

दो० ॥ ७१ ॥ अनलहारि मह गूढ़ गति, तुम सरबर को श्याम।
हमी रखे नँदललन ते, गल हथ दे दुख दाम ॥

अन्वय ॥ ७१ ॥

अनल[१] हारि मह[६] गूढ़[७] गति[८], तुम[३] सरबर[४] को[५] श्याम[२]।
हमी[१०] रखे[११] नँदललन[९] ते[१२], गल[१३] हथ[१६] दे[१७] दुख[१४] दाम[१५] ॥

अथ प्रभु प्रभुता वर्णन ॥

टीका ॥ ७१ ॥ (हे) बड़वा[१] अग्निको अचाउनेवाले भगवान्[२] आपके[३] बराबर[४] कौनहै[५] (आपकी) अत्यन्त[६] कठिन[७] मायाहै[८] ॥ (हे) नन्दनन्दन[९] गोपाल लाल (जो आप से) बैरभाव[१०] मानते[११] हैं तिनके[१२] गलेमें[१३] क्लेशरूपी[१४] रसरी[१५] हाथ[१६] लगावती[१७] है (यानी उनके गले में दुःखरूपी रस्सीकी फांसी[१५] लगीरहती है) ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मिसुर जात्यनुमानसंख्या ॥ ८ ॥

१ ॥ का॰ गो॰ ललकर के ॥ २ ॥ का॰ गो॰ कंज के ॥ ३ ॥ शाण्डिल्यगोत्री असनीके ॥ ४ ॥ का॰ गो॰ हिमकर के ॥ ५ ॥ उपमन्यु गोत्रीय बीर के ॥ ६ ॥ का॰ गो॰ बद्दीसरांय के ॥ ७ ॥ का॰ गो॰ गोपी के ॥ ८ ॥ का॰ गो॰ गोपनाथी ॥

दो॰ ॥ ७२ ॥ [२] ललक [६] रमैं [३] प्रभु [४] कंज [५] पद, [७] असनि [८] हिमकरैं [१] बीर।
[१०] वहि [११] सरैयां [१२] अघ [९] ललन, [१३] गोपिनाथ दे [१४] मीर ॥

प्रसंग ॥ ७२ ॥

किसी एक सखी को प्रपंचादिक असत् कर्म्मों में मोहित देख एक सुन्दरी उसको शिक्षाकरती भई कि हे प्यारी देखु इस अनित्य शरीर का क्या आसरा है आज है कल को नहीं तौ शोचना चाहिये कि चौरासी लक्ष योनियोंको भोगकर तब यह महादुर्लभ मनुष्यचोला जिसको कि देवतालोग तरसा करते हैं प्राप्त होताहै क्योंकि इसी नर तनसे साक्षात् परमात्मास्वरूप मनुष्यभी होसक्ता है तौ फिरभी अपना परिणाम न सुधारनेका उद्योगकर इन प्रपंचौं को अंगीकार कर श्रीकृष्ण भगवान् मोक्षदाता का स्मर्ण न कर अपना हीरा सा जन्म वृथाही खोये देती है कोई नादान होय तौ उससे कहाजाय देखु ॥

टीका ॥ ७२ ॥ (हे) [१] सखि (जौन) [२] सत्कार युति प्रेमकर [३] नारायणके [४] कमल [५] चरणों में [६] लौलीन रहते हैं (तौ उनके) [७] दुःख [८] ठंढेपड़जाते यानी नाश होजाते हैं ॥ (फिर अरी) [९] नादान [१०] निन्दावत [११] सराहनाकियेगये [१२] पापोंको [१३] भगवान् [१४] मोक्षकरदेते हैं ॥इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मिसुर जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

१ ॥ शाण्डिल्य गोत्री लखपुराके ॥ २ ॥ कात्यायनगोत्री भोजपुरके ॥ ३ ॥ कात्यायनगोत्री कंपिलाके ॥ ४ ॥ शाण्डिल्य गोत्री भटरुवाके ॥ ५ ॥ कात्यायनगोत्री धुबिहाके ॥

५ २ ३ ४ १ ९ ८ ७ ६
दो० ॥ ७३ ॥ लख पुरानि कुल क्रांति ललन, भोज पूर हित पीउ।
१० १२ ११ १३ १६ १७ १५ १४
कंपिलाग दुख भट रुवैं, धो बहाउ मल जीउ ॥

प्रसंग ॥ ७३ ॥

कोई एक सखी अपने पिया प्यारे से प्रीति नहीं करती थी सो उसकी ननदी उसे समझाती है कि ॥

१ २ ३
टीका ॥ ७३ ॥ (अरी) नादान (अपनी) पुराचीन कुटुम्ब
४ ५ ६ ७ ८
की चाल को देखु (और अपने) पतिसे सनेह बढ़ाउ (तो हे)
९ १० ११ १२ १३
भावज ॥ थरथरायकर शीघ्रही (समस्त) क्लेश भींखमरैं (अब
१४ १५ १६ १७
मेरे कहने को मान और अपने) मनका मैल धोयकर दूर करदे ॥ इति ॥

मिसुर जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

१ ॥ शाण्डिल्यगोत्री केसरीमऊके ॥ २ ॥ शाण्डिल्यगोत्री परसुहियाके ॥ ३ ॥ कात्यायनगोत्री मीरा सराय के ॥ ४ ॥ कात्यायन गोत्री हेमनाथी ॥

दो० ॥ ७४ ॥ केसरि मऊं रँगायहौं, पर सुहिया पट नाहिं।
ललन अमिरा सरायहौं, हेमनाथ तुहि काहिं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्वय॥ ७४॥

५ ४ ७ ८ ९ ६ १०
केसरि मऊं रँगायहौं, पर सुहिया पट नाहिं।
११ १३ १४ १ २ ३ १२
ललन अमिरा सरायहौं, हे म नाथ तुहि कांहिं॥

प्रसंग॥ ७४॥

कोई एक सखी अपने पियासे यह वचन कहती भई कि॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
टीका॥ ७४॥ अजी ओ मेरे स्वामी मैंभी चंपई पटुका रँग-
८ ९ १०
वाऊंगी परंतु सूहेरंगका नहीं॥ (सो जो तुम मेरी खुशी व प्रस-
११ १२ १३
न्नता करोगे तौ मैं) प्यारे तुम्हें अमीर (दिल) समझूंगी॥ इति॥

मिसुर जात्यनुमानसंख्या॥ ५॥

१॥ शाण्डिल्यगोत्री गुर्दवान के ॥ २॥ कात्यायन गोत्री परसूके ॥ ३॥ कात्यायन गोत्री बटपुर के ॥ ४ ॥ कात्यायन गोत्री मुरादाबाद के॥ ५॥ कात्यायन गोत्री हड़हाके॥

११ १० ५ २ १२ १३
दो०॥ ७५॥ परसूं गुर्दावान तब, केवट पार उतार।
१ ८ ९ ७ ६ ३ ४
ललन मुराद अबादकरि, हड़हा बहु यहि बार॥

प्रसंग॥ ७५॥

जिस समय रामचन्द्रजी महाराज बनबास में बिचरते हुये केवट जो मल्लाह है उसको मिले और रघुनाथजी की प्रभुताका प्रभाव जानकर प्रभुके कमल चरण धोवने व बेउतराई लिये सुरसरी उसपार उतारने को प्रेम युक्त मचाहिला डार श्रीरघुनाथजी के कंजपादों को धोयकर पार उतारने लगा तौ उस समय श्रीराम-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चन्द्रजी महाराज उस केवट मल्लाहसे यह बचन कहतेभये कि॥

टीका ॥ ७५ ॥ (हे) प्यारे मल्लाह इस समय तूने बहुत जि-द्दकर व (खिझायकर अपनी) मंशा पूरीकी (परंतु अब मैं तब तुझे) हिम्मतवर जानूं (कि जब जल्दी से नाव) उसकिनारे लगाउ॥ (यानी अब हम सबोंको शीघ्रही पार उतारदे) इति॥

कात्यायन गोत्र की व्याख्या॥

मिसुर जात्यनुमान संख्या॥ २॥

१॥ पंचघरावाले बरगदेतरेके॥ २॥ मँझगैयां व मांझगांवके॥

दो० ॥ ७६ ॥ वसु षट पचघर वाल नहिं, बरग देतरे खोल।
मांझ गांव बसियत ललन, धहुँ कोउ नगर अमोल॥

प्रसंग॥ ७६॥

किसी के घर कोई एक नातेदारी करने के वास्ते गये तौ वह पूंछने लगे कि आप कौन ब्राह्मणहौ क्या॥

टीका ७६॥ अष्टवंशहौ वा षट्कुल या पांचघरवालों में यानी पचाधेहौ (तुम अपनी) जाति क्यों नहीं जाहिर करतेहौ॥ (और हे) प्यारे (तुम कोई) ग्राम में रहनेवालेहौ अथवा कोई सुन्दर देशके॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कात्यायनगोत्र की व्याख्या ॥

मिसुर जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

१ ॥ नेवादाके ॥ २ ॥ पाली के ॥ ३ ॥ काकोरी के ॥ ४ ॥ नौगांवके ॥ ५ ॥ गोपामऊके ॥

दो० ॥ ७७ ॥ अपने [2]वादा [3]पालिकी, [4]काको[1]री [5]हितु [6]कीन्ह ।
[7]कोउ [8]नौ [9]गांवै [10]ललन [11]मिलि, [12]गोपा [13]मऊं [14]कस [15]चीन्ह ॥

प्रसंग ॥ ७७ ॥

दो सखियों में बहुत कुछ सुखप्यार था रोज सत्संग होता था किसीकारण कहीं उसकी मिलापिन दो चार दिन उससे मिलने को न पहुँचपाई तौ वह उससे ठठोली कर हँसी हँसी में यह बात पूछने लगी कि ॥

टीका ॥ ७७ ॥ [1]अरीबीर अपने [2]वचनका [3]निबाह करनेवाली (आजकल तूने) [4]किसको [5]मित्र [6]बनाय रक्खाहै (किससे प्रीति कररक्खी है) ॥ (क्या) [7]कोई [8]नये [9]ग्रामवाले [10]छैलसे [11]मेल पैदा कियाहै (क्यों सखि मेरी ताड़को तो देख कि तुझने तो मुझसे सब कुछ) [12]छिपाया (लेकिन यह कहु कि) [13]मैंने भी (तुझे) [14]कैसा पहिंचाना (ऐसा वचन कहि उसे कंठसे लगाय कर बैठार लेतीभई) ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कात्यायनगोत्र की व्याख्या ॥

मिसुर जात्यनुमान संख्या ॥ ३ ॥

१ ॥ पत्योंजाके ॥ २ ॥ सखरके ॥ ३ ॥ नैथुआके ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
दो० ॥ ७८ ॥ तरु पत्यों जावत सुफल, फूल फुलै तिम तौर।
१२ ९ १० ११ १३ १७ १६ १५ १४
सखर ललन नर तन फलौ, लहिनै थुआ सुख मौर॥

आशीर्वाद ॥

१ २ ३ ४
टीका ॥ ७८ ॥ (जैसे) वृक्ष पत्तों से लेकर सुन्दर (फूल)
५ ६ ७ ८ ९ १०
फलों से फूलता फलताहै तिसी प्रकार ॥ (हे) प्यारे मनुष्य का
११ १२ १३
चोला पायकर (तुमभी) फूलोफलो (और संसार में तुम्हारी
१४ १५ १६ १७
शिरोमणि आनन्द की पताका फहरावै ॥ इति ॥

उपमन्युगोत्र की व्याख्या ॥

मिसुर जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

१ ॥ दरयाबादी ॥ २ ॥ इकडलाके ॥ ३ ॥ चन्दके ॥ ४ ॥ कपहिलियाके ॥ ५ ॥ केसरी के ॥

दो० ॥ ७९ ॥ दरयाबादि रखै कहत, झूठ इकडला चन्द।
कछुकपहिलिया के सरिस, रचहु ललन जग छन्द॥

अन्वय ॥ ७९ ॥

२ १ ४ ३ ८ ७ ५ ६
दर या बादि रखै कहत, झूंठ इकडला चन्द।
१० ११ १२ १५ ९ १३ १४
कछुक पहिलिया के सरिस, रचहु ललन जग छन्द ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रसंग ॥ ७६ ॥

किसी नायक ने कोई एक सुन्दरी से कई एकबार मिलने के वास्ते कहा और किसी कारण से न मिलसका तो एकरोज़ वह नागरी उससे गिलहकर यह बचन कहती भई कि ॥

टीका ॥ ७६ ॥ ऐसी[१] इज्ज़त[२] (पद्धति) रखायकर[३] वृथाकेवास्ते[४] लगातार[५] यानी हरदफा कितनेएक[६] मिथ्याबचन[७] बोलजातेहो[८] ॥ (हे) प्यारे[९] क्या[१०] कहानी[११] सरीखे[१२] संसारी[१३] फ़रेब[१४] (मुझसे) बनाया[१५] करतेहो (किसीको खिझाना यह तुमको मुनासिब नहीं है) ॥ इति॥

मिसुर जात्यनुमान संख्या ॥ ६ ॥

१ ॥ कात्ययनगोत्री मुड़फिकराके ॥ २ ॥ कात्यायनगोत्री सुठिआयें के ॥ ३ ॥ उपमन्युगोत्री श्रीहर्षके ॥ ४ ॥ कात्यायन गोत्री बांकीके ॥ ५ ॥ कात्यायनगोत्री लवानी के ॥ ६ ॥ कात्यायन गोत्री पिहानी के ॥

दो० ॥ ८० ॥ मुँड़[१] फिक्करा[३] सुठि[४] आयें नृप[२], हत[८] श्री[५] हर्ष[६] अनन्तु[७]।
बांकी[१०] बलवानी[११] ललन, झिपिहानी[१३] न[१२] परन्तु[९] ॥

प्रसंग ॥ ८० ॥

जिससमय भीष्मक नृप नगर में अग्नि पानी के सताये हुये कुदशाको प्राप्त शिशुपाल के बराती आयेरहे उससमय उन राजाओं की कुशोभा देख नृपति नगर की नर नारियां आश्चर्य में भरकर यह बोलते भये कि यह तो राजनगर में ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नृप निंदरायन ॥

१ २ ३ ४
टीका ॥ ८० ॥ मूंड़उघारे राजालोग तो भले पधारे हैं (जोकि)
५ ६ ७ ८ ९ १०
शोभा सुख से अत्यन्त करके रहितहैं॥ लेकिन (इनकी) शान
११ १२ १३
भरी बहादुरी को (तबभी) नहीं लज्जाआती है॥ इति॥

मिसुर जात्यनुमान संख्या ॥ ६ ॥

॥ १ ॥ कात्यायनगोत्री जगदीशपुरके ॥ २ ॥ उपमन्यगोत्री जनार्द्दनपुरके ॥ ३ ॥ उपमन्यगोत्री त्रिपुरके ॥ ४ ॥ उपमन्यगोत्री कल्यानके ॥ ५ ॥ उपमन्यगोत्री बनवारी के ॥ ६ ॥ उपमन्यगोत्री खेमकरनके ॥

१ २ ३ ४ ६ ५
दो० ॥ ८१ ॥ हे जगदीश जनार्द्दने, त्रिपुर प्रदा कल्यान।
७ १० ९ ८
नन्दललन बनवारि नमु, खेमकरन सन्मान॥

अथ भगवत्प्रार्थना॥

१ २ ३ ४
टीका ॥ ८१ ॥ अहो जगत्के स्वामी हे भगवन् तीनों लो-
५ ६ ७ ८
कन को कुशल देनेवाले॥ नन्दके कुंवर बनवारी आदर (व)
९
आनन्द करनेवाले (आपको) प्रणाम है॥ इति॥

मिसुर जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ कात्यायनगोत्री रामपुरके ॥ २ ॥ उपमन्यगोत्री लछमनपुरके ॥ ३ ॥ कात्यायनगोत्री बरुआ के ॥ ४ ॥ उपमन्यगोत्री पटानिहा के ॥

२ ३ ४ ५ १ ६
दो० ॥ ८२ ॥ मुनि संग युग बरुआ ललनि, आये लछमन राम।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

१२ १० ९ ११ ८ ७ १४ १५ १३
परख पट निहायत न बध, धनु तुहि बरष सनाम ॥

प्रसंग ॥ ८२ ॥

जिस समय विश्वामित्रमुनिजी के संग में जनकपुर के बीच रामचन्द्र व लक्ष्मणजी दोनों भ्राता नृप फुलवारा में फूल तोड़ने गये उस समय की उनकी अनोखी शोभा देखकर जनकपुर की नारियां मोहित हो सीताजी से जायकर दोनों कुमारों के रूपकी प्रशंसा करती भईं कि ॥

टीका ॥ ८२ ॥ अरी प्यारी[१] विश्वामित्र[२] ऋषी के साथ[३] में राम लक्ष्मण[४] नामक[५] दो क्वांरे छैल[६] पधारे हैं ॥ (सो हे प्रिय हम सबों को तो निश्चयहै और बिश्वास पड़ताहै कि येही) धनुषको[७] तोड़ेंगे[८] (इसमें) ज़रा[९] भी चूक[१०] न[११] पड़ैगी[१२] (और वोही) सहित[१३] सुयशके[१४] तुम्हे बिवाहैंगे[१५] ॥ इति ॥

कात्यायन गोत्र की व्याख्या ॥

मिसुर जात्यनुमान संख्या ॥ ३ ॥

॥ १ ॥ कनौजके गोल मैदानके ॥ २ ॥ बउना के ॥ ३ ॥ नलहापुर के ॥

दो० ॥ ८३ ॥ निश्चय कनौज गोल मै, दान केर जगमोद ।
ललन सुकृति बउना कठिन, धिक न लहा यशु गोद ॥

अन्वय ॥ ८३ ॥

१ ५ ८ ९ ४ २ ३ ६ ७
निश्चय क न ओज गोल मै, दान केर जग मोद ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

१० ११ १२ १३ १८ १६ १७ १५ १४
ललन सुकृति बउना कठिन धिक न लहा यशु गोद ॥

मसल ॥

यतो धर्म्मः ततो जयः ॥

यथा

धर्म्मपरायण प्रिय नारायण ॥

१ २ ३ ४
टीका ॥ ८३ ॥ जरूरकरके पुण्य के समूह में (यानी बहुत
५ ६ ७ ८ ९
पुण्य करने से) कौनसा संसारी सुख नहीं प्रकाश होसक्ताहै ॥
१० ११ १२
(परंतु हे) प्यारे शुभकर्म्मकी उत्पत्ति करनाही (अपने हृदयमें)
मुशकिल है (सो जिस जीवने यह महादुर्लभ मनुष्य चोला
१४ १५ १६ १७
पायकर और कुछ अपनी) गोदी में कीर्त्ती नहीं प्राप्तकी (तिसको
१८
भी) धिक्कार है ॥ इति ॥

उपमन्यगोत्रकी व्याख्या ॥

मिसुर जात्यनुमान संख्या ॥ ३ ॥

॥ १ ॥ कंदर के ॥ २ ॥ केदार के ॥ ३ ॥ पद्मनाथ के ॥

३ ४ २ ५ ७ ६ १ ८
दो० ॥ ८४ ॥ गिरि कंदरा केदार बन, मह मग ललन कठोर ।
१० ११ १२ १३ ९ १६ १५ १४
शंभु पद्म पद बन्द जन, लहत कामना घोर ॥

अथ केदार यात्रा मार्ग कठिनाई व भक्तजन दृढ़ता वर्णन ॥

१ २ ३ ४
टीका ॥ ८४ ॥ (हे) प्यारे केदारनाथजी के पहाड़ोंकी खोह

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

५ ६ ७ ८
(और) जंगल की रस्ता अत्यंत कठिनहै ॥ (परंतु फिर भी)
९ १० ११ १२ १३
भक्तजन महादेवजी महाराज के कमल (सदृश) चरणोंको स्म-
१४ १५ १६
रण करते (अपनी) उत्तम मनोकामना को प्राप्तकरते हैं ॥ इति ॥

उपमन्यगोत्रकी व्याख्या ॥

मिसुर जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ गौतमाचार्य्यके ॥ २ ॥ चचेड़ीके ॥ ३ ॥ चतुरभुजके ॥ ४ ॥ सतावनके ॥

८ ७ ५ ६ २ ३ ४
दो० ॥ ८५ ॥ लगो तमाचा आर्य्य को, ऐस चचेड़ी भात।
१ १० ९ ११ १२ १५ १४ १३
ललन चतुरभुज तहुँ न भज, चहत सतावन गात ॥

शिक्षा पर शिक्षा ॥

१ २ ३ ४
टीका ॥ ८५ ॥ (अरे) नादान ऐसी मुशकिल व श्रेष्ठ रीति
५ ६ ७ ८ ९ १०
से (तुझे) बड़ों का कोड़ा व उपदेश होकर फिर भी नाराय-
११ १२ १३ १४
णका नहीं स्मरण करता है (क्या अपने) शरीर को दुःख पहुँ-
१५
चाया चहता है ॥ इति ॥

मिश्र द्विज जात्यनुमान संख्या ॥ ३ ॥

॥ १ ॥ पासीखेरेके ॥ २ ॥ वैंजेगांवके ॥ ३ ॥ मुरादाबादी ॥

दो० ॥ ८६ ॥ वैंजगावनहारि की, पासीखेरे गैन।
चलु मुराद आबादकरु, सुनहिं ललन शुठि बैन ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्वय ॥ ८६ ॥

[१]वै [२]जे [३]गावनहारि की, [४]पासी [५]खेरे [६]गैन।
[८]चलु [१२]मुराद [१३]आबाद करु, [११]सुनहिं [७]ललन [९]शुठि [१०]बैन॥

प्रसंग ॥ ८६ ॥

कोई एक सखी परम हरिभक्त प्रभुगुण गानाध्यक्ष महास्वरूपवान् और गुणवान् चतुःसुजान जिसकी कि प्रेमरूपी नादवाणी सुननेको गोपाललालजी को बहुकाल से अत्यन्त उत्कंठाथी सो दैवयोगसे एक दिन कहीं वह किसी अपनी मिलापिन सहेली के गानसमाज में हरिभजन करने के हेतु बुलवाई गई तो उसको जातेहुये देख किसी दूती ने आनकर महाराजसे कहा कि॥

टीका ॥ ८६ ॥ [१]वह [२]जोकि [३]गौन्हारिन (गानेवालियों) की [४]पड़ोसिन (सांगीत ज्ञाता नवलाहै सो आज वह अपनी किसी मिलापिनके यहां गाउने के वास्ते) [५]खेरेनामक ग्राममें [६]गई है (अगर) [७]प्यारे [८]चलना चाहो तो चलो (उसका) [९]सुन्दर [१०]गान यानी स्वरीले वचन [११]सुनकर (अपनी) [१२]अभिलाषा [१३]पूरी कर लीजिये ॥ इति ॥

मिश्र जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ काकोरी के ॥ २ ॥ गलहथे के ॥ ३ ॥ मांझगांव के ॥ ४ ॥ आंकिनके ॥

दो० ॥ ८७ ॥ काकोरी बतियां गढ़हि, सुखम गलहथे मोहि।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मांझ गांव बसि मिलुन पुनि, आंकिन ललनै तोहि॥

अन्वय॥ ८७॥

१ २ ३ ४ ६ ७ ५
का कोरी बतियां गढ़हि, सुखमग लहथे मोहि।
१२ ११ १३ १५ १६ १४ १० ८ ९
मांझ गांव बसि मिलु न पुनि, आंकिन ललनै तोहि॥

प्रसंग॥ ८७॥

कोई एक सखी जब कभी कृष्णमहाराज को राह बाट व यमुनाके घाटमें मिलजाया करै तो गोपालजालजी से बड़ी मीठी मीठी चापलोसी की बातैं कर प्रभु प्रीतिका अत्यन्त अनुराग जनताया करै परन्तु कभी हरिसे मिलने न जावे कईबार उसका कथन सुनकर एक दिन अचानक भेंट होनेपर महाराज उससे यह कहते भये कि॥

सखिप्रति हरिवचनम्॥

टीका॥ ८७॥ (अरी सखि तू) कैसी[१] झूठीझूठी[२] बातैं[३] बनाया[४] करतीहै कि मुझ[५] (तुमसे मिलनेका बड़ेही) सुखरूपी[६] उत्साहथे[७]॥ (चलु बस रहनेदे क्यों मुझे बनाया करती है) प्यारी[८] (मैंने) तुझे[९] अजमायलिया[१०] (आश्चर्य्य की बातहै कि हम तुम दोनों एकही) बस्ती[११] में[१२] बसते[१३] हैं (और) फिरभी[१४] मुलाकात[१५] नहीं[१६] होसक्ती है॥ इति॥

मिश्र जात्यनुमान संख्या॥ ४॥

॥ १॥ नौगायें के॥ २॥ नेवादा के॥ ३॥ सुठिआयें के॥ ४॥ कनौजके॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० ॥ ८८ ॥ कौनौं गायें ललन गुन, कितने वादा कीन।
दिन सुठिआयें त्यहि मिलहु, कन ओजें सुखदीन ॥

अन्वय ॥ ८८ ॥

२ ४ १ ३ ५ ६ ७
कौनौं गायें ललन गुन, कितने वादा कीन।
९ ८ १० ११ १० १२ १६ १५ १४ १७
दिन सुठि आयें त्यहि मिलहु, क न ओजें सुख दीन ॥

प्रसंग ॥ ८८ ॥

कोई एक सखीसे कई बार नंदनन्दन कृष्ण कुमार ने उससे मिलने को कहा और किसी कारण से नहीं मिलपाये एक दिन कृष्ण महाराजसे भेंट होजाने पर वह सुन्दरी श्रीप्रभुसे यह उरहना देकर प्रेमिक वचन कहती भई कि वाहु वाहु ॥

टीका ॥ ८८ ॥ प्यारे[१] (आप के) कौनकौनसे[२] यशु[३] वर्णन[४] करूं कितने[५] एक (यानी लाखों) इकरार[६] किये[७] (और फिरभी न मिले हां प्यारे यह तो मैं जानतीहूं कि जिसके) अच्छे[८] दिवस[९] बहुरें[१०] (यानी जिसका अच्छा भाग्यहोय आप) तिसैही[११] मिलकर[१२] कौनसा[१३] आनन्द[१४] (व) पराक्रम[१५] नहीं[१६] देतेहौ[१७] ॥ (अर्थात् सम्पूर्ण सुख देतेहौ) ॥ इति ॥

मिश्र जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥१॥ गोपामऊके ॥ २ ॥ बदरकाके ॥ ३ ॥ पिहानीके ॥ ४ ॥ सिरकिणा के ॥ ५ ॥ बौद्धीपुर के ॥

दो० ॥ ८९ ॥ गोपामऊ बदरि कापि, हानी रुचि भक्ति बानि।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सिरकिणान्य रति पाग बँधि, बौद्धी ललन बखानि ॥

अथ संधिप्रकरण ॥

गोप+आम=गोपाम (अर्थ) सबी गोपियां ॥ १ ॥ का+अपि=कापि (अर्थ) अबक्या ॥ १ ॥ क्याभी ॥ २ ॥ सिरकिणा+अन्य=सिरकिणान्य (अर्थ) किसी और के सिरपर ॥ ३ ॥

अन्वय ॥ ८६ ॥

४ ३ ५ २ ६ ७ ८
गोपआम ऊनदरि कापि,हानी रुचि भलि बानि ।
९ १० ११ १२ १३ १ १४
सिर किण अन्य रति पाग बँधि, बौद्धी ललन बखानि ॥

प्रसंग ॥ ८६ ॥

हरिप्रति सखिवचनम् ॥

जब कि मधुबनमें माधो मुकुन्द कुबरीके यहां जायबसे तब पत्र में सखियोंने महाराजको यह प्रार्थना लिख भेजी कि ॥

टीका ॥ ८६ ॥ (हे) प्यारे [१] अबक्या [२] वो सब [३] गोपियां [४] बदल [५] गईं (कि जिनकी आपने बिलकुलही प्रीति) घटाय [६] दीन्ही है (यहतो) अच्छी [७] प्रकृती [८] (आपने ग्रहण की है आज कल क्या) शीशपर [९] किसी और के [१०] प्रीति [११] की पगड़ी [१२] बांधरखी है (कि जो) मौनी बने बैठेहो [१३] (भला यहां आओ न तो पत्रका) उत्तर तो [१४] भेजो (जिसमें हम सबोंको धीरजहोवे) ॥ इति ॥

मिश्र जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ बउनाके ॥ २ ॥ जगदीशपुरके ॥ ३ ॥ नयथुवाके ॥ ४ ॥ बांकीके ॥ ५ ॥ तरवरके ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो०॥ ६०॥ बउना तुहि जगदीश तुहि, जो न नयथुवा गात।
त्वगति वांकि नँदललन प्रिय, सरवराजिवहु तात॥

अन्वय॥ ६०॥

७ ६ ९ ८ १३ १४ १५ १८ १६ १७
बउना तुहि जगदीश तुहि, जो न नय थु वा गात।
३ ४ ५ १ २ १० ११ १२
त्व गति वांकि नँदललन प्रिय, सरवरा जिवहु तात॥

प्रभुप्रताप वर्णन॥

प्रसंग॥ ६०॥

जौन श्रीभगवत् भक्ति परायण अनन्य हरिभक्तहैं सो वेद वाक्य को सत्य और प्रमाणनीय जानकर (व) देव मुनिकवि कोविदादि धार्मिकजनों से प्रशंसा कियेगये ऐसे जो षोड़शकलावतारी श्रीकृष्ण नारायणहैं तिनकी प्रार्थना करते हैं कि॥

टीका॥ ६०॥(हे) नन्दकुँवर प्यारे गिरिधरणलाल तुम्हारी माया अपारहै तुम्हीं बावन अवतारीहौ (और) तुम्हीं जगन्नाथजी का अवतारहौ (अरु तुम्हीं) धनुर्विद्या में निपुण (और तुम्हीं जगत्) जनों के स्वामी (अर्थात् तुम्हीं जगत् के करताहौ यानी ब्रह्मा विष्णु महेश रूप तुम्हीं जगके सृजनहार पालन पोषण संहार करता आपहीहौ ऐसे सर्व्व सामर्थ आपको जानकर) जौनजीव नहीं नवते हैं (उनके) उस शरीरको धिक्कारहै॥ इति॥

द्विवेदी तथा दुबे जात्यनुमान संख्या॥ ४॥

१॥ पाराशरी भानुके॥ २॥ भदेश्वरी के॥ ३॥ पत्योंजा के॥ ४॥ टिकरियाके॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो०॥ ६१ ॥ पराशरी भानू ललनि, गहैं भदेसरि दुःख।
पतियोंजा ह्वै हीन नहिं, लगै टिकरिया सुक्ख॥

सन्धि प्रकर्ण॥

पर+आशरी=पराशरी (अर्थ) पराये आसरे॥ १॥

अन्वय॥ ६१॥

४ १ ३ २ ७ ५ ६
पराश री भानू ललनि, गहैं भदेसरि दुःख।
८ ९ ११ १० १५ १४ १३ १२
पति यों जाह्वै हीन नहिं, लगै टिकरिया सुक्ख॥

मसल॥

बिरही बिरहाको दुखजानैं॥

प्रसंग॥ ६१॥

कोई एक सखी जोकि पराई सेवा टहलके बसीभूत होकर अपना निर्व्वाह करतीथी एकद्दिन उसको कुछ मलीन देखकर उसकी सहोदर सखी उससे पराधीनताका लक्षण वर्णन करतीभई कि॥

सखिप्रति सखिवचनम्॥

१ २ ३
टीका॥ ६१ ॥ अरी प्यारी (तुमसों मैं) कहूं (जौनजीव)
४ ५ ६
पराये आसरे होते हैं (सो हमेशः) निषिद्ध क्लेशोंको पायाकरते
७ ८
व सहाकरते हैं॥ (और उन दुखियों की) पद्धति तो इसतरह
९ १० ११
तुच्छ होजाती है (कि जिनके) आनन्द में (कभी) प्योंदा लगताही नहीं (यानी सिवा दुःखके सुख कभी पातेही नहीं) यथा॥ मसलहै॥ पराधीन सपने सुखनाहीं॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उपमन्युगोत्री दुबे जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

१ ॥ लहुरी के ॥ २ ॥ उनैयां ॥ ३ ॥ याज्ञेश्वरीवाले ॥ ४ ॥ इछौरी के ॥ ५ विहारके ॥

दो० ॥ ६२ ॥ नहिं लहुरिउ नैयां ललन, यज्ञेश्वरि सों दीन्ह।
कइ छोरी ब्रजकी गवह, विहारहीं गति चीन्ह ॥

अन्वय ॥ ६२ ॥

६ १ ७ ५ २ ३ ४
नहिं लहुरि उनैयां ललन, यज्ञेश्वरि सों दीन्ह।
८ १० ९ ११ १४ १२ १३
कइ छोरी ब्रजकी गवह, बिहारहीं गति चीन्ह ॥

प्रसंग ॥ ६२ ॥

किसी सखी और महाराज से कुछ मन मैली होगई थी एक दिन वह गोपाल लालजी की निहायत खुशामदकर बहुतसी सखियों के सामने मनावतीरही परंतु वह न माने यह व्यवस्था वह अपनी मित्र दूतिका से कहती भई कि ॥

टीका ॥ ६२ ॥ देखरी[१] (बीर मैंने सब कुछ समझाया मनाया और)भगवतीकी[२] कसमभी[३] दिलाई[४] (परंतु नन्द) कुंवरने[५] (मेरीएक) न[६] मानी[७] यानी जरा न दबे ॥ कितनी[८] एक ब्रज[९] देशी सखियां[१०] साखी[११] व गवहदारहैं (इस) दशाको[१२] देखकर[१३] (उनके भी) होश[१४] जाते रहे ॥ इति ॥

दुबे जात्यनुमान संख्या ॥ ३ ॥

१ ॥ शाण्डिल्य गोत्री दामोदरके ॥ २ ॥ उपमन्यु गोत्री जहानाबादी ॥ ३ ॥ शाण्डिल्य गोत्री नरोत्तमपुरके ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो०॥ ६३॥ चलु दामोदर शरण बसु, ललनि यही मति ठीक।
जहां न बादी जल पवन, नरोत्तमा पुरि नीक॥

संधिप्रकर्ण॥

नर+उत्तमा=नरोत्तमा (अर्थ) अच्छे लोग॥ १॥

अन्वय॥ ६३॥

५ ६ ७ ८ १ ३ ४ २
चलु दामोदर शरण बसु, ललनि यही मति ठीक।
१० ९ १३ ११ १२ १४ १५ १६
जहां न बादी जल पवन, नर उत्तमा पुरि नीक॥

प्रसंग॥ ६३॥

किसी आन ग्राम की रहनेवाली परस्पर दो सखियां यह विचार करतीभई कि॥

टीका॥ ६३॥ (हे) प्यारी (मेरी तो) सही सही यह सलाह है कि चलकरके कृष्ण महाराज की शरणांगत में निवास लेना चाहिये॥ (वह कैसा देशहै कि) ९ नतो १० जहांकी ११ आब १२ हवा १३ खराब है १४ देव स्वरूप मनुष्य हैं (और) १५ उत्तम १६ नगरी है॥ इति॥

दुबे जात्यनुमान संख्या॥ ५॥

१॥ शाण्डिल्य गोत्र पसेमाके॥ २॥ उपमन्यु गोत्र गलहथे के॥ ३॥ शाण्डिल्य गोत्र थलईके॥ ४॥ शाण्डिल्य गोत्र चिलौलीके॥ ५॥ उपमन्यु गोत्र घरवास के॥

दो०॥ ६४॥ पसेमान गल हथ दिये, थलइ चिलौली सुक्ख।
घर बासिहुनँदललनहित, कहिनिन्दतअति दुःख॥

अन्वय॥ ६४॥

६ ३ ४ ५ ७ २ १
पसेमान गल हथ दिये, थलइ चिलौली सुक्ख।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५
घर बासिहु नँदललन हित, कहि निन्दत अति दुःख॥

प्रसंग॥ ६४॥

कोई एक सखी कृष्ण भगवान् के सनेह और उनकी दया की बहुत कुमक रक्खा करती थी महाराज की कुछ प्रीति व कृपा कमहोने से वह सखी अपनी मिलापिन सहेली से उदास होकर यह कहती भई कि अरीबीर मैं क्या कहूं यहबात बहुत ठीक है कि ओछे व नादान की प्रीति जीको जंजालही होती है॥यथा॥ मतलबी मीतै नहिं परतीतै॥ बड़े आश्चर्यका कारणहै कि इतनी सगावट करके फिर एकाएकी उन्होंने मुझसे वास्ता छोड़दिया है सो अब मेरी यह दशा होरही है कि मैं॥

१ २ ३ ४ ५
टीका॥ ६४॥ आनन्दों से निदराई हुई गले में हाथ डाले
६ ७
लहचारबनी यानी हैरानहुई बैठी रहतीहूं॥ (और दूसरा शोच
८ ९ १०
यहहै कि गैरोंकी कौन कहे अबतो) घरवालेभी नन्दकुवँर कन्हाई
११ १२ १३ १४ १५
के सनेहको बखानकर निन्दाकरते हैं (सो मुझे) अत्यन्त खेद (होताहै)॥ इति॥

डुबे जात्यनुमान संख्या॥ ३॥

१॥ उपमन्युगोत्री नरबलके॥ २॥ शाण्डिल्यगोत्री रुपई के॥ ३॥ उपमन्युगोत्री कपिताण्डो के॥

दो०॥ ६५॥ नर बल भरसक कर ललनि, हो न कार्य्य पछिताहि।
रुपइ वस अभिमानवो, कपिताण्डोला जाहि॥

सन्धि प्रकर्ण॥

कपिता+अण्डोला=कपिताण्डोला (अर्थ) कुढंगा बंचरपन॥ १॥ खवीसपन॥ २॥ गवाँरपन॥ ३॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्वय ॥ ६५ ॥

३ ४ २ ५ १ ८ ७ ६ ९
नर बल भर सक कर ललनि, हो न कार्य्य पछिताहि।
१० ११ १२ १४ १३
रुपइ वस अभिमानवो, कपितारडोला जाहि ॥

प्रसंग ॥ ६५ ॥

कोई एक सखी कृष्ण भगवान् के मिलने के तईं व्याकुल तो हुई जाय परन्तु अपने रूपके गुमान में भरी अपनी बराबरी में किसीको समझे नहीं तौ एक दिन उसकी सगी सहेली ने उससे यह कहा कि ॥

टीका ॥ ६५ ॥ (अरी) नादान[1] जहांतक[2] होसकै मनुष्य[3] को पुरुषारथ[4] करना[5] चाहिये (और जो पुरुषारथ करनेपर) काम[6] नहीं[7] (सिद्ध) होवै[8] (तौ चाहे) शोचभी[9] करे ॥ (और हे प्यारी केवल) स्वरूपवानीही[10] के वसीभूतहो[11] घमएडकरना[12] यह तो[13] बेढंगा[14] बंचरपनहै ॥ इति ॥

उपमन्युगोत्रकी व्याख्या ॥

दुबे जात्यनुमान संख्या ॥ ५ ॥

१ ॥ द्योकली के ॥ २ ॥ नागापुरी के ॥ ३ ॥ ख्युलिहाके ॥ ४ ॥ मल्लाहें के ॥ ५ ॥ चन्द घनश्यामके ॥

दो० ॥ ६६ ॥ द्योंकलीन नागा पुरिक, कृति ख्युलिहा ललाम।
मल्लाहें कह ललन यशु, सुखद चन्द घनश्याम ॥

अन्वय ॥ ६६ ॥

६ १ २ ३ ५ ४
द्योंकलीन नागा पुरिक, कृति ख्युलिहा ललाम।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मल्लाहैं[७] कह[८] ललन[६] यशु[११], सुखद[१३] चन्द[१२] घनश्याम[१०] ॥

प्रसंग ॥ ६६ ॥

नायकप्रति नायक वचनम् ॥

किसी धर्म्मवान् के कुँवरको किसी नीतिज्ञ नायकने प्रपंचादि विषयानन्द रस सागर में डूबता हुआ देख उसके कुचलनों के छुड़ावने के हेतु उसे यह उपदेश देताभया कि ॥

टीका ॥ ६६ ॥ (अरे शठ) खोंटे देश (व) कुकर्म्मी[१] देश[२] की कर्त्तव्यता[३] के सुन्दर[४] (रीति से) प्रकाश[५] करनेवाले (खोंटे चाल चलनोंपर तो तुझने) दीमक[६] लगायदी यानी ज़ेर करडाला (स्याबशहै और क्या कहूं बस मैं इस बातको) मल्लाहीं[७] सुनाय कर यानी गालियां देकर[८] कहताहूं कि नादान[९] (सदा सर्व्वदा स्मरण करना) नारायण[१०] का गुणानुबादही[११] बहुतसे[१२] आनन्दों[१३] को देनेवाला है ॥ खुलासा ॥ कुकर्म्मों के करनेवालों में शिरो-मणि व मुखिया यह तेरे कुकर्म्म सब तुझे दुःखही देनेवाले हैं इस से अरे नादान बहुतसे आनन्द देनेवाला जो नारायणका गुणा-नुबाद है सोई गायाकर जिसमें तेरी करनी बनै ॥ इति ॥

शाण्डिल्य गोत्रकी व्याख्या ॥

दुबे जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

१ ॥ जराज मऊके ॥ २ ॥ इटावा तथा इटायें के ॥ ३ ॥ श्या-मके ॥ ४ ॥ केसरमऊके ॥

दो० ॥ ६७ ॥ जराजमउ जियकर ललनि, देति इटायें क्लेश ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बँधहुँ श्याम केसर मऊँ, तोरि प्रीति को खेश॥

अन्वय॥ ६७॥

जरा जमउ जियकर ललनि, देति इटायें क्लेश।
बँधहुँ श्याम के सर मऊ, तोरि प्रीति को खेश॥

प्रसंग॥ ६७॥

कोई एक सखी कृष्ण महाराज के मिलने को अत्यंत आकुल होरही थी सो एक दूती उस बिरहिनी की लगन और व्याकुलता देखकर यह कहती भई कि॥

टीका॥ ६७॥ (अरी) प्यारी तनक मनमें धीरज धरु (मैं तेरे) दुःख को दूरकरे देतीहूं॥ (और) तेरे सनेह का चीरारूपी बसन कृष्णमहाराजके शीश पर (जायकर) बँधवातीहूं॥ इति॥

शाण्डिल्य गोत्र की व्याख्या॥

दुबे जात्यनुमान संख्या॥ २॥

१॥ बदामके॥ आत्मारामके॥ २॥ पुरंदरके॥

दो०॥ ६८॥ तन मन विधि सब दाम से, आत्माराम प्रमोद।
पुरंदराधिप नंदललन, पद भजु हों सुख गोद॥

संधि प्रकर्ण॥

पुरंदर+अधिप=पुरंदराधिप (अर्थ) इन्द्र पति॥ १॥

अन्वय॥ ६८॥

तन मन विधि सब दाम से, आत्माराम प्रमोद।
पुरंदराधिप नंद ललन, पद भजु हों सुख गोद॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रसंग॥ ६८॥

हरिभजनप्रभाव वर्णन॥

किसी एक सखी हरिभजनानन्द में मग्न देखकर एक दूती उसकी प्रशंसा करतीहै कि॥

सखिप्रति सखिवचनम्॥

टीका॥ ६८॥ (अरी बीर) तन मन धन[१] (और) सकल[२] भांति[३] से रामरूपी[४] आत्मा वा हृदय को प्रसन्न[५] करके॥ (जोकि) तैंतीस कोटि देवतों का राजा इन्द्र[६] के स्वामी नन्दकुँवर[७] गोपाललालके चरणों[८] को स्मरणकर[९] तौ (सर्व्व) आनंद[१०] (तेरी) गोदीमें[११] बिलास[१२] करने लगैं॥ इति॥

दुबे जात्यनुमान संख्या॥ ५॥

॥ १॥ शाण्डिल्यगोत्री हीराके॥२॥ शाण्डिल्यगोत्री मनिकके॥ ३॥ उपमन्युगोत्री भैंसई के॥ ४॥ उपमन्युगोत्री कानूके॥ ५॥ उपमन्युगोत्री मतिकर के॥

दो०॥ ६६॥ नर तन हीरा मनिक लहि, मतकर भैंसइ चाल।
छइ कानूनरि मति ललन, जो न भजहि गोपाल॥

अन्वय॥ ६६॥

२ ३ १ ४ ७ ५ ६
नर तन हीरा मनिक लहि, मतकर भैंसइ चाल।
१२ ६ ११ १० ८ १३ १६ १५ १४
छइ का नूनरि मति ललन, जो न भजहि गोपाल॥

प्रसंग॥ ६६॥

कोई एक दूती अपनी कुलटा बधूको उपदेश देती है कि॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

टीका ॥ ६६ हीरा माणिक (सरीखा) मनुष्य चोला पायकर पशूपनेसी प्रकृती (यानी हैवानी आदत) न ग्रहणकर ॥ नादान क्या (तेरी) समुझपर धूल छाय रही है जोकि भगवान् का स्मरण नहीं करती है ॥ इति ॥

उपमन्युगोत्र की व्याख्या ॥

दुबे जात्यनुमान संख्या ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ बेउसरियाके ॥ २ ॥ मनौंके ॥ ३ ॥ अभाके ॥ ४ ॥ अभई के ॥

दो० ॥ १०० ॥ सुख सर्वेउ सरिया सदा, मनौंकामना दाय।
नन्दललन भजु अभयहै, दुख अभई अलगाय ॥

अन्वय ॥ १०० ॥

सुख सर्वेउ सरिया सदा, मनौंकामना दाय।
नन्दललन भजु अभय है, दुख अभई अलगाय ॥

प्रसंग ॥ १०० ॥

कोई एक वृद्धा वाम को कुटुम्ब की ममता में फँसी देख एक दूती उसे उपदेश देती है कि ॥

टीका ॥ १०० ॥ समस्त आनन्दोंके उत्पन्न करनेवाले (और) सदैव मनवाञ्छित फलके देनेवाले ॥ नन्दके पुत्र गोपाललाल को निर्भय होकर स्मरणकर (तौ) क्षणमात्र में (जितने) क्लेशहैं दूर होजायँ ॥ (अब तो तू वृथा मायाजालमें पड़रही है) ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उपमन्युगोत्र की व्याख्या ॥

दुबे जात्यनुमान संख्या ॥ ३ ॥

॥ १ ॥ असनी किसुनपुरके ॥ २ ॥ देवरामके ॥ ३ ॥ गौरावाले ॥

दो०॥१०१॥ न असनी किसुनपुरि सुखद, जहँनँदललननिवास।
देव राम सरहत मुनी, शिव गौरा सह आस ॥

अन्वय ॥ १०१ ॥

८ ४ ५ ७ ६ १ २ ३
न अस नीकि सुन पुरि सुखद, जहँ नँदललन निवास।
११ १२ १६ १३ १४ १५ ९ १०
देव राम सरहत मुनी, शिव गौरा सह आस ॥

प्रसंग ॥ १०१ ॥

कोईएक सखी अपनी मिलापिन से ब्रजवृन्दावन धामकी प्रशंसा करती भई कि ॥

टीका ॥ १०१ ॥ सुनरी बीर जहां के नन्दकुँवर गोपाललाल ३ बसतेहैं ४ ऐसी ५ सुन्दर व ६ आनंद देनेवाली ७ नगरी (कोई) ८ नहींहै ॥ (कि जिसपुरीको) ९ सहित १० कामना के देवता (व) ११ रामचन्द्र जी १२ स्वामी (व) १३ महात्माजन (व) १४ महादेवजी (और) १५ पार्व्वतीजी १६ प्रशंसा करती हैं (वहांका दरशपरश जरूर करनाचाहिये)॥ इति ॥

उपमन्युगोत्र की व्याख्या ॥

दुबे जात्यनुमान संख्या ॥ ३ ॥

॥ १ ॥ किशुनपुर पसेमाके ॥ २ ॥ कुटरीवाले ॥ ३ ॥ ठाटबिलार के ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो०॥ १०२ ॥ क्रिशुन पुरि पसेमान भइ, करिकुरकुटरी देह।
ठाट बिलारत मोदकी, ललनि यही सन्देह॥

अन्वय॥ १०२॥

२　３　४　५　७　६
क्रिशुन पुरि पसेमान भइ, करिकुरकुटरी देह।
९　१०　८　१　११　१२
ठाट बिलारत मोदकी, ललनि यही सन्देह॥

प्रसंग॥ १०२॥

कोई एक सखी गोपाललालकी लंगराई व नटखटई से दुःखित हो किसी सहेली से कहती भई कि॥

टीका॥ १०२॥ (अरी) प्यारी[१] श्रीकृष्णजी[२] की नगरी[३] में (मैं तो) हैरान[४] होगईहूं[५] (मैंने दुःखों में अपना सब) शरीर[६] गलाय[७] दिया॥ (और) आनन्दके[८] समाज[९] (दिनदिन) दूर होते व वि-लायमान[१०] होतेजातेहैं इसीबातका[११] (मुझे बड़ा) सोचहै[१२]॥ इति॥

उपमन्युगोत्रकी व्याख्या॥

दुबे जात्यनुमान संख्या॥ ३॥

॥ १॥ नरोत्तमपुरकनौजके॥ २॥ घरोसके॥ ३॥ पसेहाके॥

दो०॥ १०३॥ नरोत्तमापुर कनउजैं, सुख घरों सहित मान।
व्याधि पसेहौ नहिं हरौ, नन्दललन गुन गान॥

अन्वय॥ १०३॥

१　२　७　८　९　४　３　५　६
नरोत्तमा पुर क न उजैं, सुख घरों सहित मान।
१३　१४　१५　१६　१०　११　१२
व्याधि पसेहौ नहिं हरौ, नन्दललन गुन गान॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रसंग ॥ १०३ ॥

एक दूती किसी सखीप्रति सज्जन पुरुषों के नगर निवासकी बड़ाई व शुभकाई वर्णन करती भई कि ॥

१ २ ३ ४
टीका ॥ १०३ ॥ सज्जन लोगों के नगरमें घरघरसे आनन्द
५ ६ ७ ८ ९
संयुक्त पद्धति (व इज्जत अथवा और) क्या नहीं प्राप्त व प्रकाश होसक्ताहै (यानी सुजन सत्संग से सदैव सुखही मिलता है)
१० १२ १३
(और) श्रीकृष्णचन्द्रभगवान् के गुणानुवाद गाउने से दुःखका
१४ १५ १६
पसीना (यानी छिटकमात्रभी क्लेश) नहीं दिखलाई पड़सक्ता है ॥ इति ॥

उपमन्युगोत्रकी व्याख्या ॥

दुबे जात्यनुमान संख्या ॥ ३ ॥

॥ १ ॥ बालू के ॥ २ ॥ पटनहा के ॥ ३ ॥ शहावादी ॥

दो० ॥ १०४ ॥ पटनहार हित बालुनहिं, दुख सहवादि शरीर ॥
नन्दललनबड़ निठुरहै, उहिउरआनिनपीर ।

अन्वय ॥ १०४ ॥

३ २ १ ४ ५ ६ ८ ७
पटनहार हित बालु नहिं, दुख सह बादि शरीर ।
९ १० ११ १२ १३ १४ १६ १५
नन्दललन बड़ निठुरहै, उहि उर आनि न पीर ॥

प्रसंग ॥ १०४ ॥

एक सखी जो कि गिरिधरलालकी निठुराइयों से खिझी हुई थी वह किसी सनेहिन सखी से नन्दनन्दनकी निठुरता को कहती भई कि हे प्रिय तूने जो हरि से हित कियाहै सो ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

टीका॥ १०४॥ (अरी सखि (यह) सनेह निभनेवाला नहीं (क्योंकि) क्लेश संयुक्त तो देह (भी) निष्काम निष्फल व वृथा ही है॥ (तू नहीं जानती है वह) नन्दकुँवर कन्हाई अत्यन्त निर्मोही है उसके हृदयमें (लेशमात्र भी किसी) दूसरेका दर्द नहीं है॥ (तौ ऐसे निर्दयी से निर्वाह प्रीतिका कठिन है)॥ इति॥

अथ उपाध्यादिजात्यनुमान संख्या॥ ३॥

॥ १॥ नखलऊवाले॥ २॥ लखनखेरावाले॥ ३॥ बिलौलीवाले॥

दो०॥ १०५॥ नखलउवाल बिलौलिया, उपाधिया परलेहि।
लजन लखनखेरा लखे, पर हरि सो न अँकेहि॥

अन्वय॥ १०५॥

नखलउवाल बिलौलिया, उपाधिया परलेहि।
ललन लखन खेरा लखे, पर हरि सो न अँकेहि॥

प्रसंग॥ १०५॥

सखिप्रति सखिवचनम्॥

श्रीकृष्णमहाराज की अकिलवरी व चतुराई की ओर नटखटई को देखकर कोई सखी अपनी बहिनेली सहेली से कहती भई कि हे प्रिय॥

नख=एक बहुत बारीक रेशमकी डोर होती है॥

लउ+अर्थ+रिवस, मुआफिक, सदृश, तरह॥

टीका॥ १०५॥ (मैंने) लाखों ग्रामों के कुँवर देखडाले परन्तु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बारीक[६] नज़रवाला[७] यानी उड़ती चिड़िया पहिचाननेवाला हँसी-बाज़ चालांक[८] (और) पखेदरजेका[९] झगड़ा करनेवाला[१०] कृष्ण सरीखा[११] कोई[१२] नहीं निगाह[१३] में आया॥ इति॥

इति श्रीब्राह्मणजात्यलंकारिमालादोहावलीसटीकपण्डितललनपिया सारस्वत अष्टवंशभारद्वाजीविरचितललनविनोदस्य उत्तरार्द्धविभागसम्पूर्णं शुभमस्तु॥

दो० चारौ वर्णौं प्रख्याता, जाति नाम तिनकेर।
ललन मतीअनुसार सो, वर्णन कीन्ह घनेर॥ १॥
जौन जाति वंशावली, चहै सो लेय परेख।
आप समुझ ललनादिकनु, बांच जनावै लेख॥ २॥
नन्दललन की कृपाबिनु बिलसै ललन न गोद।
जीवनदिन सुखयुत करहिं, बिरचो ललनविनोद॥ ३॥

इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor